राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

# क्रांति समय

कार्यालय ऑफिस
क्रांति समय दैनिक समाचार में प्रेसनोट,नोटिस,वेपार संबंधित संपर्क करें
पता:- एस.टी.पी.आई-सुरत-395023
संपर्क नं.-9879141480
ईमेल:-info.krantisamay@gmail.com

सुरत गुजरात से प्रकाशित, मुंबई,उतरप्रदेश,बिहार,राजस्थान,मध्यप्रदेश,उतरांचल,उतराखंड,दिल्ली,हरियाणा में प्रकाशित

सुरत-गुजरात,संस्करण शुक्रवार 08 मार्च 2024 वर्ष-7,अंक-45 पृष्ठ-08 मूल्य-01रूपये

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

## मैं बीजेपी में शामिल हो जाऊं तब नहीं आएगा ईडी का समन: केजरीवाल

नई दिल्ली ।पूर्व टीएमसी नेता तापस रॉय, जो हाल ही में अपने आवास पर ईडी की छापेमारी के बाद बीजेपी में शामिल हुए थे, पर कटाक्ष कर अरविंद केजरीवाल ने दावा किया कि बीजेपी मंत्रियों को परेशान करने के लिए ईडी का दुरुपयोग कर रही है।केजरीवाल ने दावा किया कि वे अगर बीजेपी में शामिल हो गए तब उन्हें ईडी का समन मिलना बंद हो जाएगा। केजरीवाल ने कहा, ये है ईडी और मोदी सरकार की सच्चाई। किस तरह ईडी से परेशान कर लोगों को बीजेपी में शामिल किया जाता है।ईडी का छापा पड़ने के बाद पूछते हैं, कहां जाओगे-बीजेपी या जेल? केजरीवाल ने कहा, जो लोग भाजपा में जाने से इंकार करते हैं, वे उन्हें जेल भेज देते हैं।उन्होंने दावा किया कि अगर मनी लॉन्ड्रिंग के आरोप में जेल में बंद सत्येन्द्र जैन और दिल्ली शराब नीति मामले में जेल में बंद मनीष सिसौदिया और संजय सिंह भाजपा में शामिल हो गए होते, तब उन्हें अगले दिन जमानत मिल जाती।ऐसा नहीं है कि इन तीनों ने कोई अपराध किया है, इन्होंने सिर्फ बीजेपी में शामिल होने से इंकार किया है।

## चीन को दिया जाएगा मुंहतोड़ जबाब, नौसेना ने बेड़े में शामिल हुआ एमएच 60आर सीहॉक'

नई दिल्ली ।भारतीय नौसेना ने 'एमएच 60आर सीहॉक' बहु-उद्देश्यीय हेलीकॉप्टरों को अपने बेड़े में शामिल कर लिया, जिससे रणनीतिक जल क्षेत्र में बल की निगरानी और युद्ध क्षमताओं में उल्लेखनीय वृद्धि होने की उम्मीद है। आईएनएएस 334 'सीहॉक नौसेना वायु स्क्वाड्रन को नौसेना प्रमुख आर हरि कुमार की मौजूदगी में कोच्चि में आईएनएस गरुड़ में एक समारोह में शामिल किया गया। अमेरिकी लॉकहीड मार्टिन कॉर्पोरेशन द्वारा निर्मित एमएच 60आर सीहॉक, ब्लैकहॉक हेलीकॉप्टर का एक समुद्री संस्करण है। इन अत्याधिक हेलीकॉप्टर में कई मोड वाले रडार, हेलफायर मिसाइलें, नाइट विजन इक्विपमेंट, एमके 54 टारपीडो और राकेट लगे हैं, जो दुश्मन की सबमरीन को पलक झपकते ही नष्ट करने की दक्षता रखते हैं।ये हेलीकॉप्टर सबमरीन और सतह यानी दोनों जगह जंग से निपटने, तलाश और बचाव कार्य, चिकित्सीय आपात-स्थिति में सहायता देने में सक्षम हैं। हिंद प्रशांत क्षेत्र में सीहॉक हेलीकॉप्टर की तैनाती भारतीय नौसेना को मजबूती देगी। संभावित खतरों को दूर करेगी और रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण क्षेत्र में एक सुरक्षित वातावरण सुनिश्चित करेगी।

## कैफे ब्लास्ट मामला: संदिग्ध की तस्वीर जारी, सुराग देने वाले को मिलेंगे दस लाख

बेंगलुरु ।बीते 1 मार्च को रामेश्वरम कैफे में बड़ा धमाका हुआ और कई लोग घायल हो गए। इसकी जांच एनआईए और सीबीआई की स्पेशल विंग कर रही है। आरोपियों को तलाशने के लिए एजेंसियों ने कई लोगों से पूछताछ कर दबिश दी है।इसके बाद भी संदिगध अभी तक हाथ नहीं लगे हैं।आरोपियों के संबंध में पुख्ता जानकारी देने वाले को दस लाख का इनाम घोषित किया गया है।संदिग्ध की एक तस्वीर भी जारी की है।जांच एजेंसी ने सीसीटीवी फुटेज के आधार पर आरोपी को चिन्हित कर लिया, जिसके बाद उसकी तस्वीर सार्वजनिक कर दी गई है।हालांकि अब तक आरोपी गिरफ्त में नहीं आ सका है और उसकी तलाश अभी भी जारी है।एनआईए ने बुधवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर आरोपी की फोटो पोस्ट कर लिखा- बेंगलुरु के रामेश्वरम कैफे ब्लास्ट मामले में एनआईए ने हमलावर के बारे में जानकारी देने वाले को 10 लाख रुपये के नकद इनाम की घोषणा की है।सूचना देने वाले की पहचान गोपनीय रखी जाएगी।

## विश्व में इस साल फरवरी का महीना सबसे गर्म रहा

नई दिल्ली।दुनिया भर में इस साल फरवरी का महीना सबसे गर्म दर्ज किया गया, जिसमें औसत तापमान 1850-1900 के बीच फरवरी महीने के औसत तापमान से 1.77 डिग्री सेल्सियस अधिक था।यह अवधि पूर्व-औद्योगिक काल का समय था। यूरोपीय संघ की जलवायु परिवर्तन एजेंसी ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी।यूरोपीय संघ की जलवायु परिवर्तन एजेंसी 'कोपरनिकस क्लाइमेट चेंज सर्विस' (सी3एस) ने कहा कि रिकार्ड के मुताबिक पिछले साल जुलाई से हर महीना सबसे गर्म ऐसा महीना रहा है। वैज्ञानिकों ने इस असमान्य गर्मी को अल नीनो (मध्य प्रशांत महासागर में सतही जल के असामान्य रुप से गर्म होने की अवधि) और मानव जनित जलवायु परिवर्तन का मिश्रित प्रभाव बताया है। सी3एस ने पिछले महीने कहा था कि जनवरी में पहली बार पूरे साल का वैश्विक औसत तापमान डेढ़ डिग्री सेल्सियस की परिसीमा को पार कर गया।पेरिस संधि में डेढ़ डिग्री सेल्सियस की जो सीमा तय की गयी है उसका स्थायी उल्लंघन सालों के दौरान वायुमंडल के गर्म होते जाने की स्थिति को दर्शाता है। जलवायु विज्ञानियों के मुताबिक देशों को जलवायु परिवर्तन के सबसे बुरे प्रभावों से बचने के लिए वैश्विक औसत तापमान वृद्धि को औद्योगिक पूर्व काल के औसत तापमान के ऊपर डेढ़ डिग्री सेल्सियस तक सीमित करने की जरूरत है। धरती का वैश्विक सतह तापमान 1850-1900 के औसत तापमान की तुलना में पहले ही करीब 1.1 डिग्री सेल्सियस बढ़ चुका है।

# कश्मीर सिर्फ एक क्षेत्र नहीं... भारत का ऊंचा उठा मस्तक: पीएम मोदी

### अनुच्छेद 370 का फायदा कुछ राजनैतिक परिवारों को मिला

**श्रीनगर/नई दिल्ली (एजेंसी)।** लोकसभा चुनाव की तारीखों के ऐलान से ठीक पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी साल 2019 में अनुच्छेद 370 के हटने के बाद जम्मू-कश्मीर की अपनी पहली यात्रा के लिए श्रीनगर पहुंचे। इस दौरान उन्होंने घाटी के बख्शी स्टेडियम में रैली को संबोधित किया।

पीएम मोदी ने कहा, 370 के नाम पर लोगों को गुमराह किया गया। उन्होंने कहा कि परिवारवाद और भ्रष्टाचार से सबसे ज्यादा भुगतभोगी हमारा जम्मू कश्मीर ही रहा है। पीएम मोदी ने कहा परिवारवादियों ने जम्मू कश्मीर बैंक में अपने परिजनों को नौकरी दिलाकर बैंक की कमर तोड़ दी थी। कश्मीर के गरीब आदमी का पैसा इस बैंक में था जो डूबने जा रहा था। जे एंड के बैंक को बचाने के लिए हमने कई सुधार किए। बैंक को एक हजार करोड़ रूपये की मदद देना भी तय किया। इतना ही नहीं बैंक में जो गलत भर्तियां हुई उनके खिलाफ कार्रवाई की गई।

पीएम मोदी ने कहा जब इरादे नेक हों, संकल्प को सिद्ध करने का जज्बा हो तब फिर नतीजे भी मिलते हैं। पूरी दुनिया ने देखा कि कैसे यहां जम्मू कश्मीर में जी20 का शानदार आयोजन हुआ। आज यहां जम्मू कश्मीर में पर्यटन के सारे रिकॉर्ड टूट रहे हैं। सिर्फ 2023 में ही दो करोड़ से ज्यादा पर्यटक यहां आए हैं।

प्रधानमंत्री मोदी ने यहां झीलों में कमल खिलता है और भाजपा का चिह्न भी कमल ही है। जम्मू कश्मीर से भाजपा का नाता सभी जानते हैं। उन्होंने कहा कि 370 का फायदा आम कश्मीरी को था या फिर कुछ राजनीतिक परिवार अपने फायदे के लोगों को गुमराह कर रहे थे। पीएम मोदी ने कहा कि आज यहां से स्वदेश दर्शन योजना के तहत 6 परियोजनाएं देश को समर्पित की हैं। इसके अलावा स्वदेश दर्शन स्कीम के अगले चरण का भी शुभारंभ हुआ है। इसके तहत भी जम्मू कश्मीर सहित देश के अन्य स्थानों के लिए करीब 30 परियोजनाओं की शुरुआत की गई है।

पीएम मोदी ने कहा कि जम्मू कश्मीर केवल एक क्षेत्र नहीं है, यह भारत का ऊंचा उठा मस्तक है, जो सम्मान और विकास का प्रतीक है। इसकारण विकसित कश्मीर विकसित भारत की प्राथमिकता है। एक जमाना था जब देश के कानून जम्मू कश्मीर में लागू नहीं होते थे, लेकिन आज देखिए कश्मीर से ही पूरे देश के लिए विभिन्न योजनाएं लागू हो रही हैं।

पीएम मोदी ने कहा कि 'ये वहां नया जम्मू कश्मीर है, जिसका इंतजार हम सभी को कई दशकों से था। ये वहां नया जम्मू कश्मीर है, जिसके लिए डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने बलिदान दिया था। इस नए जम्मू कश्मीर की आंखों में भविष्य की चमक है, इस नए जम्मू कश्मीर के इरादों में चुनौतियों को पार करने का हौंसला है।

पीएम मोदी ने कहा कि 'आपके प्यार से मैं जितना खुश हूं, उतना ही कृतज्ञ भी हूं। मोदी प्यार के इस कर्ज को चुकाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ेगा। साल 2014 के बाद मैं जब भी आया, मैंने यही कहा कि मैं ये मेहनत आपका दिल जीतने के लिए कर रहा हूं। और मैं दिनों-दिन देख रहा हूं कि आपका दिल जीतने की सही दिशा में मैं जा रहा हूं।

पीएम मोदी ने कहा कि कश्मीर के अलावा देश के 50 से ज्यादा शहरों के लोग हमारे साथ जुड़े हैं। हमारी सरकार ने 40 स्थानों की पहचान की है, जिन्हें अगले दो साल में पर्यटनस्थल के रूप में विकसित किए जाएंगे। उन्होंने प्रवासी भारतीयों से कहा कि आप डॉलर लाओ या न लाओ, लेकिन अपने गैर भारतीय मित्रों को भारत भ्रमण के लिए प्रेरित करें।

## चुनावी बॉन्ड: एसबीआई के खिलाफ एडीआर की अवमानना याचिका, सुप्रीम कोर्ट शीघ्र सुनवाई को सहमत

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** उच्चतम न्यायालय ने गुरुवार को कहा कि 'चुनावी बॉन्ड' संबंधी सभी विवरण छह मार्च तक चुनाव आयोग के पास नहीं जमा कराने पर भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) के खिलाफ दायर एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) की अवमानना याचिका पर शीघ्र सुनवाई की जायेगी। मुख्य न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पीठ ने अधिवक्ता प्रशांत भूषण की गुहार पर याचिका को शीघ्र सूचीबद्ध करने पर सहमति जताई। श्री भूषण ने 'विशेष उल्लेख' के दौरान पीठ के समक्ष दलील देते हुए शीर्ष अदालत के आदेश की अवमानना याचिका पर शीघ्र सुनवाई करने की गुहार लगाई थी। एडीआर ने अपनी याचिका में एसबीआई पर जानबूझकर जानकारी साझा नहीं करने का आरोप लगाया है। न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पांच सदस्यीय संविधान पीठ ने 15 फरवरी को अपने फैसले में राजनीतिक दलों को चंदा देने की इस योजना (चुनावी बॉन्ड) को अपारदर्शी और असंवैधानिक करार देते हुए इसे रद्द कर दिया था। संविधान पीठ ने अपने फैसले में चुनावी बॉन्ड प्राप्त करने वाले राजनीतिक दलों समेत अन्य संबंधित सभी विवरण (एसबीआई बॉन्ड से संबंधित) छह मार्च 2024 तक चुनाव आयोग को सौंपने का निर्देश एसबीआई को दिया था। इसके अलावा शीर्ष अदालत ने एसबीआई से प्राप्त उन जानकारियों को चुनाव आयोग की वेबसाइट पर डालने का भी निर्देश दिया था। इस बीच एडीआर की याचिका से पहले एसबीआई ने कुछ व्यावहारिक कठिनाइयों का हवाला देते हुए उच्चतम न्यायालय के समक्ष एक आवेदन देकर गुहार लगाई थी कि उसे 12 अप्रैल 2019 से खरीदे गए चुनावी बॉन्ड का विवरण सार्वजनिक करने के लिए 30 जून 2024 तक समय दिया जाए। चुनावी बॉन्ड बेचने वाले बैंक 'एसबीआई' ने डिकोडिंग अभ्यास और शीर्ष अदालत द्वारा इसके लिए तय की गई समयसीमा के साथ कुछ व्यावहारिक कठिनाइयों का हवाला देते हुए समय सीमा बढ़ाने की गुहार लगाई थी। शीर्ष अदालत के समक्ष एक आवेदन के जरिए एसबीआई की ओर से कहा गया है कि 12 अप्रैल 2019 से फैसले की तारीख यानी 15 फरवरी 2024 के बीच विभिन्न राजनीतिक दलों को चंदा देने के लिए 22,217 चुनावी बॉन्ड का इस्तेमाल किया गया था।

## राष्ट्रपति ने केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षांत समारोह में भाग लिया

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने गुरुवार को नई दिल्ली में केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के पहले दीक्षांत समारोह में भाग लिया और सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थियों को पदक प्रदान किए। इस अवसर पर उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए राष्ट्रपति ने कहा कि भारतीय संस्कृति के प्रति गौरव की भावना हमारी राष्ट्रीय चेतना का आधार है। अपने देश की समृद्ध संस्कृति का अहसास होने पर गर्व की भावना जागृत होती है। हमारी संस्कृति की विरासत संस्कृत भाषा में संचित है। इसलिए संस्कृत भाषा में उपलब्ध सांस्कृतिक चेतना का प्रसार करना राष्ट्र सेवा है।

राष्ट्रपति ने कहा कि संस्कृत भाषा ने हमारी विशाल भूमि की विविधता को एकता के सूत्र में पिरोया है। संस्कृत की शब्दावली से कई भारतीय भाषाएं मजबूत हुई हैं और वे भाषाएं विभिन्न क्षेत्रों और राज्यों में फल-फूल रही हैं। यह न केवल ईश्वर की भाषा है बल्कि यह जन-जन की भी भाषा है। राष्ट्रपति ने कहा कि जिस भाषा में गार्गी, मैत्रेयी, अपाला और लोपामुद्रा जैसी महिला विद्वानों ने ज्ञान का अमर योगदान दिया है, उस भाषा में महिलाओं की भागीदारी सबसे अधिक होनी चाहिए। उन्हें यह जानकर खुशी हुई कि आज के दीक्षांत समारोह में स्वर्ण पदक विजेताओं में लड़के और लड़कियों की संख्या लगभग बराबर है। उन्होंने महिला सशक्तिकरण के प्रयासों के लिए केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय की सराहना की। राष्ट्रपति ने कहा कि आध्यात्मिकता और नैतिकता पर अनगिनत उत्कृष्ट रचनाएं संस्कृत भाषा में उपलब्ध हैं। प्राचीन काल में आचार्यों द्वारा लोगों को दिया गया ज्ञान आज भी प्रासंगिक है और सदैव उपयोगी रहेगा। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि सत्य बोलना, नैतिकतापूर्ण आचरण करना, स्वाध्याय में लापरवाही न करना, कर्तव्य से विमुख न होना तथा शुभ कार्यों के प्रति सचेत रहना आपका संकल्प होना चाहिए। ऐसा करने से वे अपनी प्रतिभा के साथ न्याय कर सकेंगे और अपने कर्तव्यों का पालन करने में सफल होंगे।

## सरकार में आए तो हम युवाओं को 30 लाख नौकरियां देंगे, एमएसपी की कानूनी गारंटी मिलेगी: राहुल

**जयपुर (एजेंसी)।** कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने आगामी लोकसभा चुनाव से पहले युवाओं एवं किसानों के लिए दो बड़ी घोषणाएं करते हुए बृहस्पतिवार को कहा कि केंद्र में उनकी पार्टी की सरकार बनने पर 30 लाख सरकारी नौकरियां दी जाएंगी तथा फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) पर कानूनी गारंटी दी जाएगी।

वह अपनी 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' के तहत बांसवाड़ा में आयोजित जनसभा को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि केंद्र में सरकार बनने पर कांग्रेस युवाओं के लिए पांच ऐतिहासिक काम करने जा रही है जिनमें भर्ती भरोसा, पहली नौकरी पक्की, पेपर लीक से मुक्ति, 'गिग इकॉनमी' में सामाजिक सुरक्षा और युवा रोशनी शामिल हैं।

युवाओं को तीस लाख नौकरियां देने की घोषणा करते हुए कांग्रेस नेता ने कहा, 'युवाओं के लिए कांग्रेस पार्टी क्या करने जा रही है? सबसे पहला कदम, हमने गिनती की है- हिंदुस्तान में 30 लाख सरकारी पद खाली हैं ज (प्रधानमंत्री नरेन्द्र) मोदी जी इनको भरवाते नहीं है। भाजपा इन्हें भरवाती नहीं है। कांग्रेस के सरकार में आने के बाद एकदम पहला काम होगा कि ये 30 लाख सरकारी नौकरियां हम दे देंगे।' उन्होंने कहा कि 'पहली नौकरी पक्की' के वादे के तहत केंद्र में कांग्रेस की सरकार आने पर हर 'ग्रेजुएट', 'डिप्लोमा धारक' युवा को सरकारी या निजी कंपनी में एक साल के 'अप्रेंटिसशिप' दी जाएगी।

गांधी ने कहा, ''हम देश के सभी युवाओं को अप्रेंटिसशिप का अधिकार देने जा रहे हैं। ये अधिकार हर स्नातक, हर डिप्लोमा धारक को मिलेगा। हर स्नातक को निजी कंपनी में, सरकारी ऑफिस में एक साल की अप्रेंटिसशिप दी जाएगी और एक लाख रुपये उसे एक साल में दिया जाएगा।' कांग्रेस नेता ने कहा,'यह मनरेगा जैसा अधिकार होगा। इससे देश में करोड़ों युवाओं को फायदा होगा। उन्हें ट्रेनिंग मिलेगी और एक तरह से पहले साल का रोजगार मिलेगा।' उन्होंने तीसरी बड़ी घोषणा 'पेपर लीक' से युवाओं को मुक्ति दिलाने की की।

गांधी ने कहा कि कांग्रेस सरकार में आने पर पेपर लीक के खिलाफ सख्त कानून लाएगी और परीक्षा आयोजित करवाने के तरीकों का मानकीकरण किया जाएगा। उन्होंने कहा कि परीक्षाओं के आयोजन में निजी कंपनियों का दखल बंद किया जाएगा। गांधी ने ओला, उबर, स्विगी, जोमैटो, अमेजन आदि कंपनियों के लिए चालक, गार्ड एवं प्रतिनिधियों के रूप में काम करने वाले 'गिग वर्कर्स' के लिए सामाजिक सुरक्षा कानून लाने की घोषणा भी की।

उन्होंने कहा कि राजस्थान में पिछली कांग्रेस सरकार ने ऐसा कानून बनाया था। उन्होंने कहा, 'राजस्थान में इनकी रक्षा, इनकी पेंशन, इनकी सामाजिक सुरक्षा के लिए कानून बनाया गया था। जो कानून राजस्थान में बनाया गया था वही कानून हम पूरे देश में लागू करेंगे।' इसके अलावा उन्होंने 'युवा रोशनी' की घोषणा की जिसके तहत देश के सभी जिलों के लिए 5,000 करोड़ रुपए का स्टार्टअप के लिए फंड दिया जाएगा।

कांग्रेस नेता ने कहा, 'ये पांच ऐतिहासिक काम हैंज युवाओं के लिए भर्ती भरोसा, पहली नौकरी पक्की करना, पेपर लीक से मुक्ति, गिग कर्मियों के लिए सामाजिक सुरक्षा एवं 'युवा रोशनी' के तहत जिलों में स्टार्टअप के लिए 5,000 करोड़ रुपए ज ये हम आपके लिए करने जा रहे हैं।'

कांग्रेस नेता ने कहा कि कांग्रेस पार्टी के घोषणापत्र में किसानों को न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) के लिए कानूनी गारंटी देने का वादा किया गया है। उन्होंने कहा,'हमने अपने घोषणा पत्र में किसानों के लिए एक ऐतिहासिक काम किया है। पहली बार हिंदुस्तान में किसानों को एमएसपी के लिए कानूनी गारंटी देने का वादा किया गया है।

किसानों के आंदोलन की ओर इशारा करते हुए उन्होंने कहा, 'दिल्ली कूच कर रहे किसानों की मांग हमने अपने घोषणा पत्र में पूरी कर दी है।' उन्होंने कहा, 'आदिवासियों की जल, जंगल की लड़ाई हमारी लड़ाई है। आपके साथ हम खड़े हैं।' जनसभा को कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने भी संबोधित किया।

# देश का रक्षा तंत्र पहले से कहीं अधिक मजबूत: राजनाथ

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने गुरुवार को कहा कि मोदी सरकार देश के रक्षा तंत्र को भारतीयता की भावना के साथ विकसित करने पर ध्यान केंद्रित कर रही है जिससे यह पहले से कहीं अधिक मजबूत हुआ है।

श्री सिंह ने यहां एक निजी मीडिया समूह के कार्यक्रम में मौजूदा और पिछली सरकार की कार्य प्रणाली में अंतर का उल्लेख करते हुए कहा कि वर्तमान सरकार लोगों की क्षमताओं में दृढ़ता से विश्वास करती है, जबकि पहले सत्ता में रहने वाले लोग अपनी क्षमताओं को लेकर कुछ हद तक सशंकित थे।

उन्होंने रक्षा विनिर्माण में 'आत्मनिर्भरता' को बढ़ावा देने को सबसे बड़ा बदलाव बताया और कहा कि इससे रक्षा क्षेत्र को एक नया आकार दिया जा रहा है। उन्होंने आत्मनिर्भरता हासिल करने के लिए रक्षा मंत्रालय द्वारा उठाए गए कदमों का जिक्र किया जिनमें उत्तर प्रदेश और तमिलनाडु में रक्षा औद्योगिक गलियारों की स्थापना, सकारात्मक

स्वदेशीकरण सूचियों की अधिसूचना, पूंजीगत खरीद बजट का 75 प्रतिशत घरेलू उद्योग के लिए आरक्षित करना, आयुध निर्माणी बोर्ड का निगमीकरण, रक्षा उत्कृष्टता के लिए नवाचार (आईडीईएक्स), आईडीईएक्स प्राइम, आईडीईएक्स (एडीआईटीआई) और प्रौद्योगिकी विकास निधि (टीडीएफ) के साथ नवीन प्रौद्योगिकियों का विकास शामिल है।

श्री सिंह ने इन निर्णयों के रक्षा क्षेत्र पर सकारात्मक प्रभाव पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वार्षिक रक्षा उत्पादन, जो 2014 में लगभग 40,000 करोड़ रुपये था, अब रिकॉर्ड 1.10 लाख करोड़ रुपये को पार कर गया है। रक्षा निर्यात आज 16,000 करोड़ रुपये तक पहुंच गया है, जो नौ-दस साल पहले मात्र 1,000 करोड़ रुपये था। वर्ष 2028-29 तक 50,000 करोड़ रुपये का निर्यात हासिल करने का लक्ष्य रखा गया है।

उन्होंने कहा, ''केंद्र में एक शक्तिशाली नेतृत्व के कारण हमारी सेनाओं में दृढ़ इच्छा शक्ति है। हम जवानों का मनोबल ऊंचा रखने की दिशा में लगातार काम कर रहे हैं. वे भारत पर बुरी नजर डालने वाले किसी भी व्यक्ति को मुंहतोड़ जवाब देने के लिए सुसज्जित, सक्षम और तैयार हैं।'

श्री सिंह ने कहा कि सरकार ने युवाओं पर भरोसा करते हुए नवाचार को बढ़ावा दिया और निजी क्षेत्र को आदर्श वातावरण प्रदान किया है।

रक्षा मंत्री ने जोर देकर कहा कि जब प्रौद्योगिकी की बात आती है, तो विकासशील देशों के पास दो विकल्प होते हैं 'नवाचार' और 'नकल' - और सरकार देश को अनुयायी के बजाय प्रौद्योगिकी निर्माता बनाने पर विशेष जोर दे रही है। विकसित देशों की प्रौद्योगिकी की नकल करना उन लोगों के लिए गलत नहीं है जिनकी नवाचार क्षमता और मानव संसाधन नई प्रौद्योगिकियों के उत्पादन के लिए आवश्यक स्तर तक नहीं पहुंचे हैं। उन्होंने कहा कि यदि कोई देश दूसरे देशों की तकनीक की नकल करता है, तब भी वह पुरानी तकनीक से आगे बढ़ता है। समस्या यह है कि व्यक्ति नकल का आदी हो जाता है और दोयम दर्जे की तकनीक का आदी हो जाता है। यह उन्हें विकसित देश से 20-30 साल पीछे रहने के लिए मजबूर करता है।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

## संपादकीय

# नकली दवा पर वार

देश में आए दिन नकली दवाइयों का भंडाफोड़ होना समाज के नजरिये से सुखद, पर प्रशासन के नजरिये से शर्मनाक है। सबसे दुखद है, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में फिर एक नकली दवा कंपनी का पकड़ा जाना। नकली दवाओं का निर्माण जिस गति से गाजियाबाद में हो रहा था, उसकी निंदा के लिए शब्द कम पड़ जाएंगे। यह न केवल लोगों के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़, बल्कि देश के साथ शत्रुता के समान है। गाजियाबाद में पता नहीं कब से यह नकली दवा फैक्टरी चल रही थी, जहां रक्तचाप, मधुमेह और गैस की नकली दवाएं बनाई जा रही थीं। जाहिर है, यह कंपनी अपने बाजार प्रतिनिधियों के जोर पर अनेक चिकित्सकों को लुभावने प्रस्ताव देकर अपनी दवाओं को बेचती होगी। औषधि विभाग, क्राइम ब्रांच और पुलिस के हाथ तो महज 1.10 करोड़ रुपये की नकली दवाएं आई हैं, पर वास्तव में न जाने कितनी नकली दवाइयों की बिक्री यह कंपनी कर चुकी होगी। खैर, नकली दवा बनाने वाले फैक्टरी संचालक को गिरफ्तार कर लिया गया है और उसे ऐसी सजा मिलनी चाहिए कि दूसरों के लिए नजीर बन जाए। इसमें कोई शक नहीं है कि मिलावटखोरों या नकली उत्पाद बनाने वाले उद्यमियों के साथ हमारे देश में ढिलाई या उदारता बरती जाती है, इसलिए अपराधियों के हौसले बुलंद रहते हैं। किसी न किसी रसूखदार का सहारा लेकर ऐसे उद्यमी-अपराधी बचने के रास्ते निकाल लेते हैं। चूंकि भारत में आबादी ज्यादा है और उसी अनुपात में बीमारियां भी हैं, तो दवाओं की मांग यहां लगातार बनी रहती है। ऐसे में, कुछ दवा निर्माता कंपनियों का काम ही यही है कि ब्रांडेड दवाओं के नाम का लाभ उठाया जाए। दवा कारोबार में लाभ भी बहुत होता है, यह लाभ भी अपराधियों को दवा निर्माण के व्यवसाय में खींच लाता है। नकली दवाओं का मामला केवल एक राज्य या क्षेत्र तक सीमित नहीं है। तेलंगाना का ताजा मामला गौर करने लायक है। तेलंगाना सरकार ने मेग लाइफ साइंसेज द्वारा निर्मित 33 लाख रुपये से ज्यादा की तीन दवाओं की जांच की है और उनमें दवा का कोई भी तत्व नहीं पाया है। राज्य के औषधि नियंत्रण प्रशासन ने कहा है कि इन तीनों नकली दवाओं में केवल चॉक पाउडर और स्टार्च मिला है। तेलंगाना में पकड़ में आई कंपनी ने कागज पर हिमाचल प्रदेश में मुख्यालय होने का दावा किया है, पर वास्तव में हिमाचल में ऐसी कोई कंपनी नहीं है। पता नहीं, ऐसी कितनी कंपनियां देश में चल रही हैं? पिछले सप्ताह ही तेलंगाना डीसीए और हैदराबाद पुलिस के संयुक्त अभियान के बाद उत्तराखंड में इसी तरह के एक नकली दवा रैकेट का भंडाफोड़ किया गया था, जिसमें चॉक पाउडर वाली नकली दवाओं को सिप्ला जैसी प्रतिष्ठित फार्मा कंपनियों की दवा के रूप में पेश किया जा रहा था। नकली दवाओं से शायद ही कोई राज्य अछूता है। पिछले महीने महाराष्ट्र में भी भारी मात्रा में नकली एंटीबायोटिक दवाओं को जब्त किया गया था। ऐसी कंपनियां अक्सर भ्रष्टाचार का सहारा लेकर सरकारी अस्पतालों में भी आपूर्ति करने में कामयाब हो जाती हैं। अब बड़ी नामी दवा कंपनियों को भी सतर्क रहना चाहिए। सुरक्षा एजेंसियों और औषधि नियामक संस्थाओं के साथ मिलकर दवा की दुनिया में विश्वास सुनिश्चित करने के लिए तमाम अच्छी-सच्ची कंपनियों को एकजुट हो जाना चाहिए। देश में विष बेच रहे दवा निर्माताओं के खिलाफ जितनी सख्ती बरती जाए, उतना अच्छा है।

## आज का राशिफल

**मेष** व्यावसायिक योजना को बल मिलेगा। राजनैतिक महत्वाकांक्षा की पूर्ति होगी। धन, पद, प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। उदर विकार या त्वचा के रोग से पीड़ित रहेंगे। वाहन प्रयोग में सावधानी रखें, दुर्घटना की आशंका है।

**वृषभ** सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। जीवनसाथी का सहयोग व सानिध्य मिलेगा। यात्रा देशाटन की स्थिति सुखद व लाभप्रद होगी। रुपए पैसे के लेन देन में सावधानी अपेक्षित है।

**मिथुन** जीवनसाथी के स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। रुका हुआ कार्य सम्पन्न होगा। पारिवारिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आर्थिक मामलों में लाभ मिलेगा। चली आ रही परेशानियों से मुक्ति मिलेगी। व्यर्थ की भागदौड़ रहेगी।

**कर्क** आर्थिक दृष्टि से लाभदायी है। व्यावसायिक मामलों में भी सफलता मिलेगी। स्थानान्तरण का भी लाभ मिल सकता है। शिक्षा प्रतियोगिता के क्षेत्र में आशातीत सफलता मिलेगी। दाम्पत्य जीवन सुखमय होगा।

**सिंह** व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। स्थानान्तरण सुखद हो सकता है। नई नौकरी या नवीन वाहन का सुख मिल सकता है। शासन सत्ता का सहयोग मिलेगा। प्रणय प्रसंग प्रगाढ़ होंगे। भाग्यवश सुखद समाचार मिलेगा।

**कन्या** आर्थिक पक्ष मजबूत होगा। गृहोपयोगी वस्तुओं में वृद्धि होगी। आय और व्यय में संतुलन बना कर रखें। बेरोजगार व्यक्तियों को रोजगार मिलेगा। पिता या उच्चाधिकारी का सहयोग मिलेगा।

**तुला** पारिवारिक जीवन सुखमय होगा। संबंधित अधिकारी या घर के मुखिया का सहयोग मिलेगा। स्वास्थ्य में सुधार होगा। यात्रा देशाटन की स्थिति सुखद व लाभप्रद होगी। ससुराल पक्ष से लाभ होगा। व्यर्थ की भागदौड़ रहेगी।

**वृश्चिक** जीवनसाथी का सहयोग व सानिध्य मिलेगा। धन, पद, प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। रुका हुआ कार्य सम्पन्न होगा। अनचाही यात्रा करनी पड़ सकती है। विरोधी सक्रिय होंगे। किसी बहुमूल्य वस्तु के पाने की अभिलाषा पूरी होगी।

**धनु** राजनैतिक महत्वाकांक्षा की पूर्ति होगी। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। यात्रा में अपने सामान के प्रति सचेत रहें चोरी या खोने की आशंका है। नेत्र विकार की संभावना है। पिता या उच्चाधिकारी का सहयोग मिलेगा।

**मकर** व्यावसायिक योजना सफल होगी। रोजी रोजगार की दिशा में सफलता मिलेगी। वाद विवाद की स्थिति कष्टकारी होगी। ससुराल पक्ष से लाभ होगा। भाग्यवश कुछ ऐसा होगा जिसका आपको लाभ मिलेगा।

**कुम्भ** आर्थिक पक्ष मजबूत होगा। आपकी राशि से आठवें शनि यात्राएं देगा व थकान देगा। किसी वस्तु के खोने या चोरी होने की आशंका है। दूसरों से सहयोग लेने में सफल होंगे। मैत्री संबंध प्रगाढ़ होंगे। धन व्यय होगा।

**मीन** आर्थिक योजना फलीभूत होगी। उपहार व सम्मान का लाभ मिलेगा। रुपए पैसे के लेन-देन में सावधानी अपेक्षित है। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। निजी सुख में वृद्धि होगी। पारिवारिक सुख में वृद्धि होगी।

# शिव परमात्मा की याद का सबसे बड़ा अवसर है महाशिवरात्रि!

(लेखक- डॉ श्रीगोपाल नारसन )

इस बार महाशिवरात्रि 8 मार्च को मनाई जा रही है। महाशिवरात्रि चतुर्दशी के दिन ही मनाई जाती है। फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को ही भगवान शिव और माता पार्वती का विवाह हुआ था। इस कारण महाशिवरात्रि को बहुत पवित्र पर्व माना जाता है। इस दिन सच्ची भक्ति और निष्ठा के साथ व्रत करने वालों से महादेव अवश्य प्रसन्न होते हैं और उनकी समस्त मनोकामना पूरी करते हैं। महाशिवरात्रि का यह पावन दिन हर तरह के शुभ और मांगलिक कार्य करने के लिए उत्तम माना जाता है, साथ ही इस बार की महाशिवरात्रि में शुक्र प्रदोष व्रत भी पड़ रहा है। प्रदोष व्रत रखने से भगवान शिव सभी मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं और अपने भक्तों व साधकों से खुश होते हैं। महाशिवरात्रि की चतुर्दशी की शुरुआत 8 मार्च को 9 बजकर 57 मिनट पर होगी और तिथि का समापन शाम 6 बजकर 17 मिनट पर होगा।उदया तिथि के अनुसार, महाशिवरात्रि 8 मार्च को ही मनाई जा रही है। महाशिवरात्रि का पूजन निशिता काल में किया जाता है।निशिता काल 8 मार्च को रात 12 बजकर 05 मिनट से लेकर 9 मार्च को रात 12 बजकर 56 मिनट तक रहेगा।प्रथम पहर पूजन समय 8 मार्च को शाम 6 बजकर 25 मिनट से शुरू होगा और समापन रात 9 बजकर 28 मिनट को होगा।जबकि दूसरा पहर पूजन समय 8 मार्च को रात 9 बजकर 28 मिनट से शुरू होगा और समापन 9 मार्च को रात 12 बजकर 31 मिनट पर होगा।तीसरे पहर पूजन समय उसी रात 12 बजकर 31 मिनट से शुरू होगा और समापन सुबह 3 बजकर 34 मिनट पर होगा।

वही चौथा पहर पूजन समय सुबह 3 बजकर 34 मिनट से लेकर सुबह 6 बजकर 37 मिनट तक रहेगा।हम सृष्टि की रचना की प्रक्रिया का चिंतन करे तो कहा जाता है कि सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर की आत्मा पानी पर डोलती थी और आदिकाल में परमात्मा ने

ही आदम व हवा को बनाया जिनके द्वारा स्वर्ग की रचना की गई। चाहे शिव पुराण हो या मनुस्मृति या फिर अन्य धार्मिक ग्रन्थ हर एक में परमात्मा के वजूद को तेजस्वी रूप माना गया है। जिज्ञासा होती है कि अगर परमात्मा है तो वह कहां है ,क्या किसी ने परमात्मा से साक्षात किया है या फिर

किसी को परमात्मा की कोई अनूठी अनुभूति हुई है।

साथ ही यह भी सवाल उठता है कि आत्माये शरीर धारण करने से पहले कहा रहती है और शरीर छोडने पर कहा चली जाती है।इन सवालो का जवाब भी सहज ही उपलब्ध है। सृष्टि चक्र में तीन लोक होते है पहला स्थूल वतन,दूसरा सूक्ष्म वतन और तीसरा मूल वतन अर्थात परमधाम। स्थूल वतन जिसमें हम निवास करते है पांच तत्वों से मिलकर बना है। जिसमें आकाश पृथ्वी,वायु,अग्नि औरजल शामिल है।इसी

स्थूल वतन को कर्म क्षेत्र भी कहा गया है।जहां जीवन

मरण है और अपने अपने कर्म के अनुसार जीव फल भोगता है। इसके बाद सूक्ष्म वतन सूर्य, चांद और तारों के पार है जिसे ब्रहमपुरी,विष्णुपुरी और शंकरपुरी भी कहा जाता है। सूक्ष्म वतन के बाद मूल वतन है जिसे परमधाम कहा जाता है। यही वह स्थान है जहां परमात्मा निवास करते है। यह वह धाम है जहां सर्व आत्माओ का मूल धाम है। यानि आत्माओं का आवागमन इसी धाम से स्थूल लोक के लिए

होता है। आत्माओं का जन्म होता है और परमात्मा का अवतरण होता है। यही आत्मा और परमात्मा में मुख्य अन्तर है। सबसे बडा अन्तर यह भी है कि आत्मा देह धारण करती है जबकि परमात्मा देह से परे है।पौराणिक ग्रंथों के अनुसार इस दिन भगवान शिव और शक्ति का मिलन हुआ था। वहीं ईशान संहिता के अनुसार फाल्गुन मास की चतुर्दशी तिथि को भोलेनाथ दिव्य ज्योतिर्लिंग के रूप में प्रकट हुए थे। शिवपुराण में उल्लेखित एक कथा के अनुसार इस दिन भगवान शिव और माता पार्वती का विवाह हुआ था और भोलेनाथ ने वैराग्य जीवन त्याग कर गृहस्थ जीवन अपनाया था। इस दिन विधिवत आदिदेव महादेव की पूजा अर्चना करने से सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती है व कष्टों का निवारण होता है।अमावस्या से एक दिन पूर्व, हर चंद्र माह के चौदहवें दिन को शिवरात्रि के नाम से जाना जाता है। एक कैलेंडर वर्ष में आने वाली सभी शिवरात्रियों के अलावा फरवरी-मार्च माह में महाशिवरात्रि मनाई जाती है। इन सभी में से महाशिवरात्रि का आध्यात्मिक महत्व सबसे ज्यादा है। इस रात, ग्रह का उत्तरी गोलार्द्ध कुछ ऐसी स्थिति में होता है कि मनुष्य में ऊर्जा सहज ही ऊपर की ओर बढ़ती है। इस दिन प्रकृति मनुष्य को उसके आध्यात्मिक शिखर तक जाने में सहायता करती है। इस अवसर का लाभ उठाने के लिए ही, इस परंपरा में हमने इस पूरी रात चलने वाले उत्सव की स्थापना की। इस उत्सव का एक सबसे मुख्य पहलू ये पक्का करना है कि प्राकृतिक ऊर्जाओं के प्रवाह को अपनी दिशा मिल सके। इसलिए आप अपनी रीढ़ की हड्डी सीधी रखते हुए जागते रहते हैं।आध्यात्मिक पथ पर चलने वालों के लिए महाशिवरात्रि का पर्व बहुत महत्वपूर्ण है। पारिवारिक परिस्थितियों में जी रहे लोगों तथा महत्वाकांक्षियों के लिए भी यह उत्सव बहुत महत्व रखता है। जो लोग परिवार के बीच गृहस्थ हैं, वे महाशिवरात्रि को शिव के विवाह के उत्सव के रूप में मनाते हैं। सांसारिक महत्वाकांक्षाओं से घिरे लोगों को यह दिन इसलिए महत्वपूर्ण लगता है क्योंकि शिव ने अपने सभी शत्रुओं पर विजय पा ली थी।

साधुओं के लिए यह दिन इसलिए महत्व रखता है क्योंकि वे इस दिन कैलाश पर्वत के साथ एकाकार हो गए थे। वे एक पर्वत की तरह बिल्कुल स्थिर हो गए थे। यौगिक परंपरा में शिव को एक देव के रूप में नहीं पूजा जाता,, वे आदि गुरु माने जाते हैं जिन्होंने ज्ञान का शुभारंभ किया। ध्यान की अनेक सहस्राब्दियों के बाद, एक दिन वे पूरी तरह से स्थिर हो गए। वही दिन महाशिवरात्रि था। उनके भीतर की प्रत्येक हलचल शांत हो गई और यही वजह है कि साधु इस रात को स्थिरता से भरी रात के रूप में देखते हैं। यौगिक परंपरा के अनुसार इस दिन और रात का महत्व इसलिए भी है क्योंकि इस दिन आध्यात्मिक जिज्ञासु के सामने असीम संभावनाएँ प्रस्तुत होती हैं। आधुनिक विज्ञान अनेक चरणों से गुज़रते हुए, उस बिंदु पर आ गया है, जहाँ वे ये प्रमाणित कर रहे हैं – कि आप जिसे जीवन के रूप में जानते हैं, जिसे आप पदार्थ और अस्तित्व के तौर पर जानते हैं, जिसे ब्रह्माण्ड और आकाशगंगाओं के रूप में जानते हैं, वह केवल एक

ऊर्जा है जो अलग-अलग तरह से प्रकट हो रही है।यह वैज्ञानिक तथ्य ही प्रत्येक योगी का भीतरी अनुभव होता है। योगी शब्द का अर्थ है, ऐसा व्यक्ति जिसने अस्तित्व की एकात्मकता का एहसास पा लिया हो। जब मैं 'योग' शब्द का प्रयोग करता हूँ तो मैं किसी एक अभ्यास या तंत्र की बात नहीं कर रहा। उस असीमित को जानने की हर प्रकार की तड़प, अस्तित्व के उस एकत्व को जानने की इच्छा – योग है। महाशिवरात्रि की वह रात, उस अनुभव को पाने का अवसर भेंट करती है।हम सत्यम,शिवम,सुंदरम को आत्मसात कर स्वयं को आत्म बोध में स्थापित कर परमात्मा से अपनी लौ लगाये।यह लौ हमारे अंदर के विकारों से हमे मुक्त कर हमारे कल्याण का माध्यम बनती है।युग परिवर्तन के लिए भी परमात्मा शिव हमे संगम युग मे ईश्वरीय ज्ञान प्राप्ति कराकर कलियुग से सतयुग में लाने के लिए यज्ञ रचते है।जिसमे स्त्री शक्ति का पोषण कर उन्हें युग परिवर्तन के निमित्त बनाया जाता है।वस्तुत:विश्व रचियता परमात्मा एक है जिसे कुछ लोग भगवान,कुछ लोग अल्लाह,कुछ लोग गोड ,कुछ लोग ओम, कुछ लोग ओमेन ,कुछ लोग सतनाम कहकर पुकारते है।तो आइए संकल्प ले,

अज्ञान के अंधकार का
आओ अंत करें हम
महाशिवरात्रि पर्व पर
ज्ञान का सूर्योदय करे हम
पतित से पावन बनाते शिव
कल्याणकारी कहलाते शिव
अमंगल को भी मंगल करते
ऐसे हितकारी हमारे शिव
जगतपिता जगतनियंता है
पथप्रदर्शक अभियंता है
याद में शिव की जो रहता
इंसान से देवता बन जाता है
शिव परमात्माय नम:मन्त्र से
आओ शिव का उदघोष करे।

( लेखक आध्यात्मिक चिंतक व वरिष्ठ पत्रकार है)

# महिला सशक्तिकरण की दिशा में बढ़े कदम

(लेखक-रमेश सर्राफ धमोरा)

(8 मार्च अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर विशेष)

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस हर साल 8 मार्च 1911 से पूरे विश्व में मनाया जाता है। जिसका उद्देश्य महिलाओं की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक उपलब्धियों का जश्न मनाना है। वर्ष 2024 में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की थीम महिलाओं में निवेश करें प्रगति में तेजी लाएं है। यह विषय लैंगिक समानता हासिल करने और जीवन के सभी क्षेत्रों में महिलाओं की भलाई में सुधार पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है।

हमारे देश में महिलाओं को पुरुषों के बराबर अधिकार है। महिलायें देश की आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करती है तथा विकास में भी बराबर की भागीदार है। आज के युग में महिला पुरुषों के साथ ही नहीं बल्कि उनसे दो कदम आगे निकल चुकी है। महिलाओं के बिना समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। भारतीय संविधान के अनुसार महिलाओं को भी पुरुषों के समान जीवन जीने का हक है। भारत में नारी को देवी के रूप में देखा गया है। कहा जाता है कि जहां नारी की पूजा होती है वहां देवता निवास करते हैं। प्राचीन काल से ही यहां महिलाओं को समाज में विशिष्ट आदर एवं सम्मान दिया जाता है।

भारत वह देश है जहां महिलाओं की सुरक्षा और इज्जत का खास ख्याल रखा जाता है। अगर हम इक्कीसवीं सदी की बात करे तो यहां की महिलाएं हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिला काम कर रही है। अब तो भारत की संसद ने भी महिलाओं के लिये लोकसभा व विधानसभाओं में 33 प्रतिशत आरक्षण का विधेयक पास कर दिया है। उससे आने वाले समय में भारत की राजनीति में महिलाओं की भूमिका अधिक महत्वपूर्ण हो जायेगी।

हमारे देश में महिलाओं को तो अब सेना में भी महत्वपूर्ण पदो पर तैनात किया जाने लगा है। जो महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक बड़ा कदम है। हम एक तरफ महिलाओं को हर क्षेत्र में बराबरी का दर्जा देकर उन्हे आगे बढ़ा रहें है। वहीं दूसरी तरफ उनके साथ अत्याचार की घटनाओं में भी लगातार बढ़ोतरी हो रही है। आये दिन हमें महिलाओं के साथ बलात्कार, दुर्व्यवहार होने की घटनाये सुनने को मिलती रहती है। ऐसी घटनाओं से महिला सशक्तिकरण के अभियान को धक्का लगता हैं।

भारत में 2022 में महिलाओं के खिलाफ अपराध के कुल 4,45,256 मामले दर्ज किए गए। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के ताजा आंकड़ों में इसका खुलासा हुआ है। इससे पहले 2021 में 4,28,278 और 2020 में 3,71,503 मामले दर्ज किए गए थे। केंद्रीय गृह मंत्रालय के तहत काम करने वाले एनसीआरबी के आंकड़ों के मुताबिक, 2022 में महिला अपराध के सिलसिले में हर घंटे लगभग 51 मामले दर्ज किए गए। आंकड़ों के मुताबिक प्रति एक लाख आबादी पर महिला अपराध की दर 66.4 फीसदी रिकॉर्ड की गई। ऐसे मामलों में आरोप पत्र दायर करने की दर 75.8 फीसदी रही। एनसीआरबी ने बताया कि भारतीय दंड संहिता के तहत महिलाओं के खिलाफ सबसे ज्यादा 31.4 फीसदी जुर्म पति या उसके रिश्तेदारों की क्रूरता किए जाने के थे। इसके बाद अपहरण के 19.2 फीसदी, शील भंग करने के इरादे से महिलाओं पर हमले के 18.7 फीसदी और दुष्कर्म के 7.1 फीसदी मामले रहे। एनसीआरबी के मुताबिक पिछले साल देश में जितने मामले सामने आए उनमें से 2,23,635 यानी 50 फीसदी उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान, पश्चिम बंगाल और मध्य प्रदेश में दर्ज किए गए। उत्तर प्रदेश में 2021 में महिला अपराध के 56,083 और और 2020 में 49,385 मामले दर्ज किए थे। इसके बाद राजस्थान (40,738 और 34,535), महाराष्ट्र (39,526 और 31,954), पश्चिम बंगाल (35,884 और 36,439) और मध्य प्रदेश (30,673 और 25,640) रहे थे।

राष्ट्रीय महिला आयोग की ओर से जारी आंकड़ों के मुताबिक 2023 में महिलाओं के खिलाफ अपराध के मामले में उत्तर प्रदेश सबसे आगे रहा। राष्ट्रीय महिला आयोग की तरफ से जारी आंकड़ों के मुताबिक देश भर से पूरे साल में महिलाओं के खिलाफ अपराध की 28,811 शिकायतें मिलीं। इसमें 16 हजार से ज्यादा मामले उत्तर प्रदेश राज्य से आए हैं। आंकड़े हैरान कर देने वाली हैं। क्योंकि आयोग में ये शिकायत गरिमा के अधिकार कैटेगरी के अंतर्गत दर्ज किया गया है। इसके बाद दूसरे नंबर पर राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में 2,411 मामले दर्ज किए गए। महाराष्ट्र में 1,343, बिहार में 1,312 और मध्य प्रदेश में 1,165 इतने मामले दर्ज किए गए हैं।

2023 के 12 महीने बाद जारी किए गए इस रिपोर्ट में महिलाओं के प्रति हो रहे अपराध में दहेज उत्पीड़न और दुष्कर्म जैसे अपराध दर्ज किए गए हैं। राष्ट्रीय महिला आयोग की यह रिपोर्ट महिलाओं के प्रति पुलिस की उदासीनता दिखाती है। आंकड़ों के मुताबिक देश भर में यौन उत्पीड़न के 805 मामले, साइबर अपराध के 605 मामले, पीछा करने की 472 मामले और सम्मान से जुड़े अपराध के खिलाफ 409 शिकायतें दर्ज कराई गईं। आंकड़ों के मुताबिक, महिलाओं के खिलाफ अपराधों में बलात्कार के मामले भी शामिल हैं। साल 2023 में बलात्कार और बलात्कार के प्रयास के 1,537 मामले दर्ज किए गए। इसके बाद गरिमा के अधिकार के तहत 8,540, घरेलू हिंसा के 6,274, दहेज उत्पीड़न के 4,797, छेड़छाड़ के 2,349,और महिलाओं के प्रति पुलिस की उदासीनता के 1,618 मामले दर्ज किए गए।

2023 में महिलाओं के खिलाफ अपराध के मामले 2022 की तुलना में कम हुए हैं। 2022 में महिलाओं के खिलाफ अपराध के 30,864 मामले दर्ज किए गए थे। जबकि 2023 में यह संख्या घटकर 28,278 हो गई। यह एक सकारात्मक संकेत है लेकिन अभी भी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। साल 2022 के बाद से शिकायतों की संख्या में कमी देखी गई है। जब 30,864 शिकायतें प्राप्त हुई थी, जो 2014 के बाद से सर्वाधिक आंकड़ा था। जहां तक बात महिलाओं की सुरक्षा की आती है तो पिछले कुछ वर्षों में भारत ने अभूतपूर्व निर्णयों से महिलाओं की सुरक्षा के लिए कई प्रबंध किये हैं। आज भारत में महिलायें पहले की अपेक्षा ज्यादा सुरक्षित है।

# भगवान शिव का पर्व है महाशिवरात्रि

*लेखक रमेश सर्राफ धमोर/8 मार्च महाशिवरात्रि पर विशेष*

महाशिवरात्रि भगवान शिव का त्यौहार है। भारत के सभी प्रदेशो में महाशिव रात्रि का पर्व धूमधाम से मनाया जाता है। भारत के साथ नेपाल, मारिशस सहित दुनिया के कई अन्य देशों में भी महाशिवरात्रि मनाते है। हर साल फाल्गुन मास में कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि को महाशिव रात्रि का व्रत किया जाता है। हिन्दू पुराणों के अनुसार इसी दिन सृष्टि के आरंभ में मध्यरात्रि मे भगवान शिव ब्रह्मा से रुद्र के रूप में प्रकट हुए थे। इसीलिए इस दिन को महाशिवरात्रि कहा जाता है। शिवरात्रि के प्रसंग को हमारे वेद, पुराणों में बताया गया है कि जब समुद्र मन्थन हो रहा था उस समय समुद्र में चौदह रत्न प्राप्त हुए। उन रत्नों में हलाहल भी था। जिसकी गर्मी से सभी देव दानव त्रस्त होने लगे। तब भगवान शिव ने उसका पान किया। उन्होंने लोक कल्याण की भावना से अपने को उत्सर्ग कर दिया। इसलिए उनको महादेव कहा जाता है। जब हलाहल को उन्होंने अपने कंठ के पास रख लिया तो उसकी गर्मी से कंठ नीला हो गया। तभी से भगवान शिव को नीलकंठ भी कहते हैं। शिव का अर्थ कल्याण होता है। जब संसार में पापियों की संख्या बढ़ जाती है तो शिव उनका संहार कर लोगों की रक्षा करते हैं। इसीलिए उन्हें शिव कहा जाता है। योगिक परम्परा में इस दिन और रात को इतना महत्व इसलिए दिया जाता है क्योंकि यह आध्यात्मिक साधक के लिए जबर्दस्त संभावनाएं प्रस्तुत करते हैं। आधुनिक विज्ञान कई चरणों से गुजरने के बाद आज उस बिंदु पर पहुंच गया है। जहां वह प्रमाणित करता है कि हर वह चीज जिसे आप जीवन के रूप में जानते हैं। पदार्थ और अस्तित्व के रूप में जानते हैं। जिसे आप ब्रह्मांड और आकाशगंगाओं के रूप में जानते हैं। वह सिर्फ एक ही ऊर्जा है। जो लाखों रूपों में खुद को अभिव्यक्त करती है। माना जाता है की इस दिन भगवान शंकर और माता पार्वती का विवाह हुआ था। इस दिन लोग व्रत रखते हैं और भगवान शिव की पूजा करते है। महाशिवरात्रि का व्रत रखना सबसे आसान माना जाता है। इसलिये बच्चों से लेकर बूढ़ो तक सभी इस दिन व्रत रखते हैं। महाशिवरात्रि के व्रत रखने वालों के लिये अन्न खाना मना होता है। इसलिये उस दिन फलाहार किया जाता है। राजस्थान में व्रत के समय गाजर, बेर का सीजन होने से गांवों में लोगों द्वारा गाजर, बेर का फलाहार किया जाता है। लोग मन्दिरों में भगवान शिव की पूजा करते हैं व उन्हे आक, धतूरा चढ़ाते हैं। भगवान शिव को विशेष रूप से भांग का प्रसाद लगता है। इस कारण इस दिन काफी जगह शिवभक्त भांग घोट कर पीते हैं। पुराणों में कहा जाता है कि एक समय शिव पार्वती जी कैलाश पर्वत पर बैठे थी। उसी समय पार्वती ने प्रश्न किया कि इस तरह का कोई व्रत है जिसके करने से मनुष्य आपके धाम को प्राप्त कर सके ? तब उन्होंने यह कथा सुनाई थी कि प्रत्यना नामक देश में एक व्यक्ति रहता था, जो जीवों को बेचकर अपना भरण पोषण करता था। उसने सेठ से धन उधार ले रखा था। समय पर कर्ज न चुकाने के कारण सेठ ने उसको शिवमठ में बन्द कर दिया। संयोग से उस दिन फाल्गुन बदी चतुर्दशी थी। वहां रातभर कथा, पूजा होती रही जिसे उसने भी सुना। अगले दिन शिघ्र कर्ज चुकाने की शर्त पर उसे छोड़ा गया। उसने सोचा रात को नदी के किनारे बैठना चाहिये। वहां जरूर कोई न कोई जानवर पानी पीने आयेगा। अत: उसने पास के बील वृक्ष पर बैठने का स्थान बना लिया। उस बील के नीचे एक शिवलिंग था। जब वह पेड़ पर अपने छिपने का स्थान बना रहा था उस समय बील के पत्तों को तोडकर फेंकता जाता था जो शिवलिंग पर ही गिरते थे। वह दो दिन का भूखा था। इस तरह से वह अनजाने में ही शिवरात्रि का व्रत कर ही चुका था। साथ ही शिवलिंग पर बेल-पत्र भी अपने आप चढ़ते गये। एक पहर रात्रि बीतने पर एक गर्भवती हिरणी पानी पीने आई। उस व्याध ने तीर को धनुष पर चढ़ाया किन्तु हिरणी की कातर वाणी सुनकर उसे इस शर्त पर जाने दिया कि सुबह होने पर वह स्वयं आयेगी। दूसरे पहर में दूसरी हिरणी आई। उसे भी छोड़ दिया। तीसरे पहर भी एक हिरणी आई उसे भी उसने छोड़ दिया और सभी ने यही कहा कि सुबह होने पर मैं आपके पास आऊंगी। चौथे पहर एक हिरण आया। उसने अपनी सारी कथा कह सुनाई कि वे तीनों हिरणियां मेरी स्त्री थी। वे सभी मुझसे मिलने को छटपटा रही थी। इस पर उसको भी छोड़ दिया तथा कुछ और भी बेल-पत्र नीचे गिराये। इससे उसका हृदय बिल्कुल पवित्र, निर्मल तथा कोमल हो गया। प्रात: होने पर वह बेल-पत्र से नीचे उतरा। नीचे उतरने से और भी बेल पत्र शिवलिंग पर चढ़ गये। अत: शिवजी ने प्रसन्न होकर उसके हृदय को इतना कोमल बना दिया कि अपने पुराने पापों को याद करके वह पछताने लगा और जानवरों का वध करने से उसे घृणा हो गई। सुबह वे सभी हिरणियां और हिरण आये। उनके सत्य वचन पालन करने को देखकर उसका हृदय दुग्ध सा धवल हो गया और वह फूट-फूट कर रोने लगा। योगियों और संन्यासियों के लिए यह वह दिन है जब शिव कैलाश पर्वत के साथ एकाकार हो गए थे। योगिक परम्परा में शिव को ईश्वर के रूप में नहीं पूजा जाता है। बल्कि उन्हें प्रथम गुरु, आदि गुरु माना जाता है। जो योग विज्ञान के जन्मदाता थे। कई सदियों तक ध्यान करने के बाद शिव एक दिन वह पूरी तरह स्थिर हो गए। उनके भीतर की सारी हलचल रुक गई और वह पूरी तरह स्थिर हो गए। वह दिन महाशिवरात्रि था। इसलिए संन्यासी महाशिवरात्रि को स्थिरता की रात के रूप में देखते हैं।

## फरवरी महीने में वाहनों की खुदरा बिक्री बढ़कर 20.29 लाख इकाई रही

**नई दिल्ली।** फरवरी में यात्री और दोपहिया वाहनों समेत सभी खंडों में जोरदार खरीदारी से देश में वाहनों की खुदरा बिक्री सालाना आधार पर 13 प्रतिशत बढ़ गई। वाहन वितरकों के संगठन फाडा ने यह जानकारी दी। पिछले महीने कुल 20,29,541 वाहनों की खुदरा बिक्री हुई जबकि एक साल पहले की समान अवधि में यह 17,94,866 इकाई थी। यात्री वाहन खंड में पिछले महीने बिक्री 12 प्रतिशत बढ़कर 3,30,107 इकाई हो गई, जो फरवरी, 2023 में 2,93,803 इकाई थी। फेडरेशन ऑफ ऑटोमोबाइल डीलर्स एसोसिएशन (फाडा) के एक वे रिष्ठ अे धिकारी ने कहा` कि फरवरी के महीने में यात्री वाहनों की अब तक की सर्वाधिक बिक्री दर्ज की गई। पिछले महीने दोपहिया वाहनों की बिक्री 13 प्रतिशत बढ़कर 14,39,523 इकाई रही, जबकि पिछले साल की समान अवधि में यह 12,71,073 इकाई थी। उन्होंने कहा कि शादियों के मौसम और बेहतर आर्थिक स्थिति जैसे कारकों ने भी इस सकारात्मक वृद्धि में योगदान दिया। फरवरी में वाणिज्यिक वाहनों की खुदरा बिक्री बढ़कर 88,367 इकाई हो गई, जो पिछले साल के इसी महीने की तुलना में पांच प्रतिशत अधिक है। नकदी प्रवाह की कमी और चुनाव से संबंधित खरीद स्थगन जैसी बाधाओं के बावजूद इस खंड में वृद्धि देखी गई, जो इस क्षेत्र के लचीलेपन और क्रमिक सुधार को उजागर करती है। तिपहिया वाहनों की खुदरा बिक्री भी पिछले महीने 24 प्रतिशत बढ़कर 94,918 इकाई हो गई। इसी तरह ट्रैक्टर की बिक्री 11 प्रतिशत बढ़कर 76,626 इकाई हो गई।

## मुक्का प्रोटीन्स का शेयर 57 फीसदी चढ़कर सूचीबद्ध

**नई दिल्ली ।** मछली के तेल और संबद्ध उत्पादों के निर्माण एवं विपणन से जुड़ी कंपनी मुक्का प्रोटीन्स के शेयर गुरुवार को निर्गम मूल्य के मुकाबले 57 फीसदी चढ़कर सूचीबद्ध हुए। बीएसई पर इसके शेयर ने 57.14 फीसदी बढ़कर 44 रुपये के भाव पर कारोबार की शुरुआत की। एनएसई पर भी कंपनी का शेयर 28 रुपये के निर्गम मूल्य से 42.85 फीसदी तेजी के साथ 40 रुपये पर सूचीबद्ध हुआ। इस तरह सूचीबद्धता के दिन कंपनी का बाजार पूंजीकरण 1,147.20 करोड़ रुपये रहा। इसके पहले आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) के अंतिम दिन मुक्का प्रोटीन्स को 136.89 गुना अभिदान मिला था। करीब 224 करोड़ रुपये के आईपीओ के लिए 26-28 रुपये प्रति शेयर का मूल्य दायरा तय किया गया था। मुक्का प्रोटीन्स भारत के मछली प्रोटीन क्षेत्र की प्रमुख कंपनी है। कंपनी अपने उत्पादों को घरेलू और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वितरित करती है।

## इस साल घरेलू हवाई यात्रियों का आंकड़ा कोविड-पूर्व के स्तर को पार करेगा: इक्रा

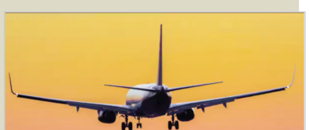

**मुंबई ।** क्रेडिट रेटिंग एजेंसी इक्रा ने कहा कि घरेलू हवाई यात्री यातायात के चालू वित्त वर्ष में आठ-13 प्रतिशत बढ़कर कोविड-पूर्व स्तर से आगे 15-15.5 करोड़ तक पहुंचने की उम्मीद है। महामारी से पहले घरेलू हवाई यात्रियों की संख्या 14.12 करोड़ थी। रेटिंग एजेंसी ने अगले दो वित्त वर्षों में विमानन उद्योग के शुद्ध घाटे में खासी गिरावट का अनुमान जताने के साथ ही कहा है कि आपूर्ति श्रृंखला से जुड़ी चुनौतियां और इंजन से जुड़े मसले निकट अवधि में प्रतिकूल साबित हो सकते हैं। घरेलू और अंतरराष्ट्रीय हवाई यात्री यातायात में निरंतर सुधार और अपेक्षाकृत स्थिर लागत वातावरण के बीच इक्रा ने घरेलू विमानन उद्योग को लेकर स्थिर दृष्टिकोण कायम रखा है। रेटिंग एजेंसी ने कहा कि भारतीय एयरलाइंस के लिए अंतरराष्ट्रीय यात्री यातायात वित्त वर्ष 2022-23 में कोविड-पूर्व स्तर को पार कर गया था लेकिन यह वर्ष 2018-19 में दर्ज 2.59 करोड़ के उच्चतम स्तर से पीछे था। चालू वित्त वर्ष में अंतरराष्ट्रीय यात्रियों की संख्या 2.5-2.7 करोड़ रहने की उम्मीद है।

# ग्राहकों को क्रेडिट कार्ड चुनने का मिलेगा विकल्प

### - मौजूदा कार्डधारकों को कार्ड के नवीकरण के समय यह विकल्प दिया जाएगा

**नई दिल्ली ।**

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने बैंकों और गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) को निर्देश दिया कि क्रेडिट कार्ड लेते समय ग्राहकों को यह चुनने की छूट दी जाए कि वे किस नेटवर्क का कार्ड लेना चाहते हैं। बैंकिंग नियामक ने कार्ड जारी करने वालों और नेटवर्कों को ऐसा कोई समझौता करने से रोक दिया है, जिसके कारण ग्राहक दूसरे नेटवर्क की सेवाएं नहीं उठा पाते। आरबीआई ने कहा कि कार्ड जारी करने वाले अपने पात्र ग्राहकों को कार्ड जारी करते समय विभिन्न कार्ड नेटवर्कों में से चुनने का विकल्प देंगे। जहां तक मौजूदा कार्डधारकों का सवाल है तो उन्हें कार्ड के नवीकरण के समय यह विकल्प दिया जाएगा। नियामक का यह निर्देश छह महीने बाद 6 सितंबर से प्रभावी होगा। आरबीआई द्वारा अधिकृत कार्ड नेटवर्कों में अमेरिकन एक्सप्रेस बैंकिंग कॉर्प, डायनर्स क्लब इंटरनेशनल लिमिटेड, मास्टरकार्ड एशिया/पैसिफिक प्राइवेट लिमिटेड, नैशनल पेमेंट्स कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया-रुपे और वीजा वर्ल्डवाइड प्राइवेट लिमिटेड शामिल हैं। हालांकि आरबीआई ने यह साफ नहीं किया है कि ये निर्देश को-ब्रांडेड कार्ड पर भी लागू होंगे अथवा नहीं। कोई बैंक अपने ग्राहकों को किसी भी नेटवर्क का कार्ड दे सकता है। मगर कुछ को-ब्रांडेड कार्ड भी होते हैं, जो केवल एक ही प्लेटफॉर्म पर पेश किए जाते हैं। निजी क्षेत्र के एक बैंक के कार्ड प्रमुख ने कहा है` कि जिस तरह से सर्कुलर लिखा गया है उसके मुताबिक हरेक कार्ड में कम से कम दो नेटवर्क अवश्य होने चाहिए। साथ ही उस कार्ड के लिए किया गया समझौता किसी खास नेटवर्क तक सीमित नहीं हो सकता।

उन्होंने कहा कि को-ब्रांडेड कार्ड केवल एक ही नेटवर्क के साथ जारी किए जाते हैं। कई बार नेटवर्क हम ही चुनते हैं और कुछ मामलों में कारोबारी लिहाज से फैसले किए जाते हैं। ऐसे में हम स्थिति स्पष्ट करने की मांग करेंगे।

## सरकार एनएलसी इंडिया में 7 फीसदी हिस्सेदारी बेचेगी

**नई दिल्ली ।** सरकार एनएलसी इंडिया में अपनी सात प्रतिशत तक हिस्सेदारी 212 रुपए प्रति शेयर के न्यूनतम कीमत पर बेचेगी। एनएलसी इंडिया में सरकार की दो दिन की हिस्सेदारी बिक्री पेशकश (ओएफएस) गुरुवार को खुलेगी। संस्थागत निवेशकों के लिए एनएलसी की 2,000 करोड़ रुपए की बिक्री पेशकश गुरुवार को खुलेगी। खुदरा निवेशकों के लिए यह सोमवार को खुलेगी। शुक्रवार को महाशिवरात्रि के अवसर पर बाजार में अवकाश रहेगा। खुदरा निवेशक सोमवार 11 मार्च को शेयरों के लिए बोली लगा सकते हैं। सरकार सात प्रतिशत हिस्सेदारी का विनिवेश कर रही है। इसमें दो प्रतिशत का ग्रीन शू विकल्प भी शामिल है। सरकार कंपनी में अपने 9.7 करोड़ शेयर 212 रुपए प्रति शेयर के न्यूनतम मूल्य पर बेच रही है। यदि ओएफस को पूर्ण अभिदान मिल जाता है, तो इस बिक्री से सरकार को 2,000 करोड़ रुपए प्राप्त होंगे।

## एनबीएफसी पर कार्रवाई के डर से निवेशकों ने शेयरों से निकाला पैसा

**मुंबई ।**

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने कुछ गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) पर कार्रवाई की, जिसके बाद समूचे एनबीएफसी क्षेत्र पर कार्रवाई के डर से बड़ी संख्या में निवेशकों ने एनबीएफसी कंपनियों के शेयरों से पैसा निकाल लिया। यह पैसा बैंकिंग शेयरों में लगा दिया गया। आईआईएफएल फाइनेंस, जेएम फाइनेंशियल और पेटीएम पेमेंट्स बैंक के खिलाफ केंद्रीय बैंक की कड़ी कार्रवाई से निवेशकों की चिंता बढ़ गई। केंद्रीय बैंक ने संचालन में खामियों का हवाला देकर कार्रवाई की है। आरबीआई ने निगरानी की कमी बताते हुए आईआईएफएल फाइनैंस को गोल्ड लोन मंजूर करना और बांटना बंद करने के लिए कहा है। इसके बाद कंपनी का शेयर लगातार दूसरे दिन 20 फीसदी के निचले सर्किट पर बंद हुआ। जेएम फाइनेंशियल का शेयर भी 20 फीसदी तक लुढ़क गया था, मगर बाद में थोड़ा संभलकर कारोबार की समाप्ति पर यह 10.7 फीसदी नीचे बंद हुआ। आरबीआई ने मंगलवार को जेएम फाइनैंशियल प्रोडक्ट्स के खिलाफ कार्रवाई की थी। इन्हीं दो एनबीएफसी के शेयरों में गिरावट नहीं आई बल्कि 43 एनबीएफसी शेयरों में से 34 लुढ़ककर बंद हुए। कापरी ग्लोबल कैपिटल में 14.3 फीसदी, एलऐंडटी फाइनैंस होल्डिंग्स में 7.2 फीसदी और मणप्पुरम फाइनैंस में 6 फीसदी की गिरावट दर्ज की गई। दूसरी ओर बैंकिंग शेयरों में उछाल आई और निफ्टी बैंक 0.8 फीसदी बढ़त में रहा। ऐक्सिस बैंक में 2.3 फीसदी और कोटक महिंद्रा बैंक में 2.5 फीसदी बढ़त देखी गई, जिससे बेंचमार्क सेंसेक्स और निफ्टी नए शिखर पर पहुंच गए।

# शेयर बाजार लगातार दूसरे दिन सर्वोच्च स्तर पर बंद

### सेंसेक्स 74,119.39 , निफ्टी 22,493.55 पर पहुंचा

**मुम्बई ।**

घरेलू शेयर बाजार गुरुवार को भारी बढ़त के साथ बंद हुआ। बाजार लगातार दूसरे दिन शीर्ष स्तर पर पहुंचा। बाजार में ये उछाल दुनिया भर से मिले अच्छे संकेतों के साथ ही खरीदारी हावी रहने से आया है। दिन भर के कारोबार के बाद तीस शेयरों पर आधारित बीएसई सेंसेक्स आज सेंसेक्स 0.05 फीसदी करीब 33.40 अंक की बढ़कर 74,119.39 पर बंद हुआ। वहीं गत दिवस ये 74,085.99 पर बंद हुआ था। वहीं पचास शेयरों वाला एनएसई निफ्टी आज 0.09 फीसदी करीब 19.50 अंक की बढ़त लेकर 22,493.55 पर बंद हुआ। निफ्टी की 30 कंपनियों के शेयर लाभ पर जबकि 20 के शेयर नुकसान के साथ बंद हुए। आज कारोबार के दौरान लॉर्ज-कैप शेयरों में बढ़त रही। टाटा स्टील, जेएसडब्ल्यू स्टील, बजाज फिनसर्व, टाटा मोटर्स, बजाज फाइनैंस, आईटीसी, एशियन पेंट्स, नेस्ले इंडिया और टीसीएस के शेयरों में एक फीसदी से अधिक की बढ़त रही वहीं निफ्टी की कंपनियों की बात करें तो टाटा कंज्यूमर प्रोडक्ट्स लिमिटेड, टाटा स्टील लिमिटेड , बजाज ऑटो लिमिटेड , यूपीआई लिमिटेड और जेएसडब्ल्यू स्टील भी शामिल रहे। इनमें से टाटा कंज्यूमर, टाटा स्टील और बजाज ऑटो के शेयरों ने आज इंट्रा डे ट्रेड के दौरान 52 सप्ताह यानी 1 साल का रिकॉर्ड भी तोड़ दिया। जिन कंपनियों के शेयरों में आज सबसे अधिक गिरावट रही। वे हैं महिंद्रा ऐंड महिंद्रा , बीपीसीएल, रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड (आरआईएल), ऐक्सिस बैंक और एलटीआई माइंडट्री शामिल हैं। जानकारों के अनुसार बाजार में लगातार दूसरे दिन उछाल का कारण विदेशों से मिले अच्छे संकेतों के साथ ही एफएमजीसी कंपनियों के शेयरों में बढ़त रही। इसके अलावा देख की जीडीपी उम्मीद से अधिक बेहतर रहने की उम्मीद से भी बाजार को बल मिला। इससे पहले आज सुबह वै श्विक बाजारों से` मिले अच्छे संकेतों की वजह से बाजार में शानदार तेजी देखने को मिली। बाजार के प्रमुख इंडेक्स नए सार्वजे निक उच्च स्तर पर कारोबार करते दिखे। बीएसई सेंसेक्स 74,245 के नए शिखर पर पहुंचा और निफ्टी 30 अंकों की हल्की बढ़त के साथ 22,523 पर कारोबार कर रहा था। जेएसडब्ल्यू स्टील, बजाज ट्विन्स, पावर ग्रिड, टाटा स्टील और एसबीआई ने सेंसेक्स पर बढ़त हासिल की, जबकि यूपीएल निफ्टी में अतिरिक्त बढ़त हासिल करने वाला शेयर रहा। दूसरी ओर, एमएंडएम, आईसीआईसीआई बैंक, इंफोसिस, टीसीएस और आरआईएल भी टॉप लूजर्स की लिस्ट में रहे।

# भारत का मोबाइल फोन निर्यात बढ़कर 60 अरब डॉलर तक पहुंचेगा: वैष्णव

### - इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण क्षेत्र में रोजगार भी 10 लाख से बढ़ने की उम्मीद

**नई दिल्ली ।**

केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने एक वित्त-प्रौद्योगिकी कार्यक्रम में कहा है कि देश में बने मोबाइल फोन का निर्यात में तेजी से बढ़ोतरी हो रही है और आने वाले समय में यह 50-60 अरब डॉलर तक पहुंच जाने की उम्मीद है। पिछले साल लगभग 11 अरब डॉलर का मोबाइल निर्यात हुआ था। इसके साथ ही वैष्णव ने कहा कि आने वाले दिनों में इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण क्षेत्र में रोजगार भी 10 लाख से बढ़कर 25 लाख हो जाएगा। उन्होंने कहा कि 10 साल पहले भारत 98 प्रतिशत मोबाइल फोन का आयात करता था लेकिन आज के समय में लगभग 99 प्रतिशत फोन उपकरण भारत में ही बनते हैं। वैष्णव ने भारत की विकास गाथा पर एक प्रस्तुति साझा करते हुए कहा` कि पिछले साल 11 अरब डॉलर के मोबाइल फोन निर्यात किए गए थे। आने वाले दिनों में आप 50-60 अरब डॉलर का निर्यात देखेंगे। इसके अलावा इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण में कार्यरत लोगों की संख्या भी 25 लाख हो जाएगी। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि भारत वर्ष 2027 तक दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा जबकि 2014 में यह 11वें स्थान पर था। उन्होंने कहा कि भारत के इस समय पांचवीं बड़ी अर्थव्यवस्था होने के समय रेलवे, राजमार्ग, हवाई अड्डे के क्षेत्रों में विशाल बुनियादी ढांचा तैयार किया गया है। संचार और रेल मंत्रालय का भी दायित्व संभालने वाले वैष्णव ने कहा कि पिछले साल 5,200 किलोमीटर लंबी रेलवे लाइन जोड़ी गई जो स्विट्जरलैंड के समूचे रेल नेटवर्क के बराबर है।वैष्णव ने कहा, 'चालू वित्त वर्ष में अब तक 4,972 किलोमीटर लंबी रेल लाइन बिछाई जा चुकी है। अभी मार्च का पूरा महीना बाकी है। हम इस साल 5,500 किलोमीटर की रेल लाइन जोड़ेंगे।

## रुपया डॉलर के मुकाबले नौ पैसे मजबूत

**मुंबई।** विदेशी बाजारों में अमेरिकी मुद्रा की कमजोरी और विदेशी पूंजी की आवक होने से गुरुवार को रुपया शुरुआती कारोबार में अमेरिकी डॉलर के मुकाबले नौ पैसे की मजबूती के साथ 82.74 पर पहुंच गया। विदेशी मुद्रा कारोबारियों ने कहा कि रुपये को घरेलू शेयर बाजारों में तेजी से भी समर्थन मिला। लेकिन कच्चे तेल की कीमतों में अस्थिरता ने इसकी तेजी को सीमित कर दिया। अंतर-बैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया डॉलर के मुकाबले 82.82 के भाव पर खुला और थोड़ी ही देर में मजबूत होकर 82.74 पर पहुंच गया। इस तरह पिछले बंद की तुलना में रुपये में नौ पैसे की मजबूती रही। बुधवार को अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपया सात पैसे बढ़कर 82.83 पर बंद हुआ था। इस बीच दुनिया की छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले डॉलर की मजबूती को आंकने वाला डॉलर सूचकांक 0.07 प्रतिशत गिरकर 103.24 पर आ गया।

# इस साल ब्ल्यू स्टार को 10 लाख एसी ब्रिकी की उम्मीद

### - कंपनी का अनुमान, वित्त वर्ष 2024-25 में बिक्री लगभग 13 लाख हो जाएगी

**नई दिल्ली ।**

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के इस साल तेज गर्मी का अनुमान जताने के बाद 2024 में रूम एयर कंडीशनर (एसी) की बिक्री में तेजी के आसार देखे जा रहे हैं। इस उद्योग की दिग्गज कंपनी ब्लू स्टार लिमिटेड का कहना है कि इस वित्त वर्ष में रूम एयर कंडीशनर की बिक्री 25 प्रतिशत बढ़कर 10 लाख हो जाएगी, जबकि वित्त वर्ष 2024-25 में यह 30 प्रतिशत तक बढ़कर 13 लाख हो सकती है। ब्लू स्टार के एक वे रिष्ठ अे धिकारी ने बताया कि हमें उम्मीद है कि इस साल रूम एयर कंडीशनरों की बिक्री 10 लाख पार कर जाएगी और अगले साल लगभग 13 लाख हो जाएगी, जबकि पिछले वित्त वर्ष में यह संख्या 8,00,000 थी। कंपनी ने यह उम्मीद ऐसे समय में जताई है, जब उसने साल 2024-25 तक अपनी बाजार हिस्सेदारी को करीब 13.75 प्रतिशत से बढ़ाकर 15 प्रतिशत करने का लक्ष्य रखा है। उन्होंने कहा कि आज उपभोक्ताओं का फाइनैंस 55 प्रतिशत से अधिक है। लोग अधिक खपत करने लगे हैं। भले ही औसत गर्मी हो लेकिन मांग अच्छी रहेने वाली है। पूर्वानुमान, तो तेज गर्मी का है। कंपनी को पहली बार खरीदारी करने वालों की ओर से मांग दिख रही है, खास तौर पर मध्य, छोटे और बहुत छोटे बाजारों के साथ-साथ पुराने एसी के बाजार में भी। उन्होंने कहा कि ग्रामीण बाजार हमारे विकास की संचालक हैं और हमारी लगभग 65 प्रतिशत बिक्री ऐसे बाजारों में ही हो रही है। शेष हिस्सेदारी महानगरों और छोटे महानगरों की है। ब्लू स्टार के पास अपनी पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी ब्लू स्टार क्लाइमेटेक के जरिये आंध्र प्रदेश की श्री सिटी में विनिर्माण इकाइयां हैं, जिन्होंने जनवरी 2023 में वाणिज्यिक उत्पादन शुरू किया था और इसके पास हिमाचल प्रदेश में दो संयंत्र हैं। इन संयंत्रों के साथ ब्लू स्टार के पास अब 10 लाख से ज्यादा रूम एसी उत्पादन क्षमता है, जो आने वाले समय में धीरे-धीरे बढ़कर 18 लाख एसी तक पहुंच जाएगी।

## प्रोसेस्ड दालों पर 18 फीसदी की दर से जीएसटी लगेगा: एएआर

### - भूसी निकालने, अनाज का टुकड़ा करने के बाद प्राप्त प्रोसेस्ड दालें कृषि से प्राप्त उत्पाद नहीं

**नई दिल्ली ।**

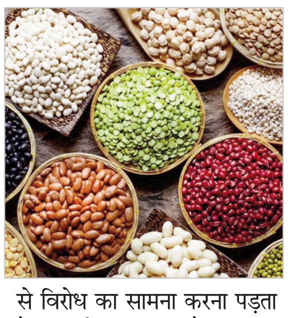

आंध्र प्रदेश के अग्रिम निर्णयों के प्राधिकरण (एएआर) ने आदेश दिया कि भूसी निकालने, अनाज का टुकड़ा करने के बाद प्राप्त प्रोसेस्ड दालें कृषि से प्राप्त उत्पाद नहीं हैं और ये साबुत दालों से अलग हैं। इसलिए प्रोसेस्ड दालों पर 18 फीसदी की दर से जीएसटी लगेगा। एएआर ने आदेश दिया कि थोक खरीदारों और मिलों या किसानों को लेनदेन की सुविधा उपलब्ध कराने पर कृषि उत्पादों पर 18 फीसदी जीएसटी लगेगा। एकेएम ग्लोबल के एक टैक्स पार्टनर ने बताया कि यह मामला आंध्र प्रदेश की गायत्री एंटरप्राइजेज का है और यह कृषि उत्पादों जैसे उड़द दाल व इसकी कई किस्मों, मूंग दाल व इसकी कई किस्मों, तूर, ज्वार और करमानी के कमीशन एजेंट या ब्रोकर डील में कारोबार करती है। कंपनी पक्षों से प्रति बोरी तय शुल्क लेती है। इसका नाम बिक्री या खरीद के लेनदेन के किसी भी इनवॉयस में नहीं है। यह केवल ब्रोकरेज राशि की इनवॉयस पक्षों को देती है। कंपनी के पास जीएसटी पंजीकरण है और 18 फीसदी शुल्क वसूल करती है। हालांकि इसे पूरे भारत में कई पक्षों से विरोध का सामना करना पड़ता है। पार्टियों का कहना है कि कृषि उत्पादों और ब्रोकरेज पर जीएसटी मान्य नहीं है। लिहाजा इस मामले पर कंपनी ने एएआर से निर्देश मांगा कि क्या भूसी अलग करने और अनाज को टुकड़ा करने के बाद तैयार उत्पाद पर जीएसटी लगेगा या नहीं। एएआर का मानना है कि किसानों या खेत में आमतौर पर भूसी को अलग या अनाज को विभाजित नहीं किया जाता, बल्कि इसे दाल मिलों के स्तर पर किया जाता है। ऐसी दालें भूसी अलग करने या अनाज को विभाजित करने से तैयार कृषि से तैयार उत्पादन नहीं हैं। हालांकि एएआर ने स्पष्ट किया कि साबुत चना, राजमा जैसी साबुत दालें कृषि उपज की परिभाषा में शामिल हैं। एएआर ने स्पष्ट किया कि प्रोसेस्ड दालें कृषि उत्पाद की परिभाषा से बाहर हैं और उन्हें जीएसटी से छूट उपलब्ध नहीं है।

## अदाणी ग्रुप बांड बाजार से जुटाएगी 1.2 अरब डॉलर का फंड

### - कंपनी व्यवस्थाकर्ताओं और बैंकरों के साथ नियोजित लेनदेन पर कर रही है बात

**नई दिल्ली ।**

अरबपति गौतम अदाणी की अगुवाई वाला अदाणी ग्रुप 1.2 अरब डॉलर का एक अन्य बांड जारी करने की योजना बना रहा है। यह डॉलर बांड इसी साल जून तक लांच हो सकता है। एक समाचार एजेंसी ने अपनी एक रिपोर्ट में यह जानकारी दी। रिपोर्ट के मुताबिक कंपनी व्यवस्थाकर्ताओं और बैंकरों के साथ नियोजित लेनदेन पर बात कर रही है। सूत्रों के हवाले से बताया गया है कि 1.2 अरब डॉलर का बांड पेश करने में करीब चार महीने लग सकते हैं। हालांकि अदाणी ग्रुप के प्रतिनिधि ने इस विषय पर तत्काल कोई टिप्पणी नहीं दी। रिपोर्ट के मुताबिक रिन्यूएबल एनर्जी सेक्टर में काम करने वाली अदाणी ग्रीन एनर्जी लिमिटेड और संबंधित कंपनियां मौजूदा ऋणों को रिफाइनैंस करने के लिए धन जुटाने की योजना बना रही हैं। धन जुटाने के लिए डॉलर बांड की पेशकश बताता है कि निवेशकों का विश्वास अदाणी ग्रुप पर फिर से लौट रहा हैं। अदाणी ग्रुप ने 4 मार्च से 40.9 करोड़ डॉलर के बांड की मार्केटिंग शुरू कर दी है। पिछले साल शॉर्ट सेलर हिंडनबर्ग रिसर्च की एक रिपोर्ट में लगाए गए आरोपों के बाद अदाणी ग्रुप का यह पहला डॉलर बांड है। अदाणी ग्रीन एनर्जी और संबंधित कंपनियां 7.125 फीसदी के प्रारंभिक मूल्य मार्गदर्शन पर 18 साल की डोर-टू-डोर अवधि के साथ डॉलर बांड की पेशकश की है। अदाणी ग्रुप ने 27 फरवरी 2024 को एक एक्सचेंज फाइलिंग में शेयर बाजारों को बताया था कि रिन्यूएबल एनर्जी सेक्टर में काम करने वाली अदाणी ग्रुप की कंपनी अदाणी ग्रीन एनर्जी डॉलर बांड के माध्यम से 40.9 करोड़ डॉलर जुटाने की योजना पर काम कर रही है।

# आईआईएफएल को 1,650 करोड़ नगद उपलब्ध कराएगी फेयरफैक्स इंडिया

**नई दिल्ली।**

भारतीय-कनाडाई अरबपति प्रेम वत्स समर्थित फेयरफैक्स इंडिया ने आईआईएफएल फाइनेंस को 20 करोड़ डॉलर (1,650 करोड़ रुपये) का नकदी समर्थन देने की प्रतिबद्धता जताई है। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने गैर-बैंकिंग ऋणदाता पर स्वर्ण ऋण वितरण की रोक लगा दी है। फेयरफैक्स इंडिया होल्डिंग्स कॉरपोरेशन ने कहा कि आरबीआई के प्रतिबंध ने कंपनी के निवेशकों और ऋणदाताओं के बीच नकदी को लेकर चिंताएं बढ़ा दी हैं। जिससे फेयरफैक्स इंडिया ने पारस्परिक रूप से सहमत शर्तों पर और नियामकीय मंजूरी के बाद 20 करोड़ डॉलर का नकदी समर्थन देने का फैसला किया है। फेयरफैक्स इंडिया के एक वे रिष्ठ अे धिकारी ने कहा कि हम आईआईएफएल समूह की कंपनियों में दीर्घकालिक निवेशक रहे हैं और हमें निर्मल जैन और आर वेंकटरमन के नेतृत्व वाली कंपनी की मजबूत प्रबंधन टीम पर पूरा भरोसा है। हमें विश्वास है कि निर्मल और वेंकट आरबीआई के मानकों को पूरा करने और अनुपालन को पूरा करने के लिए सुधारात्मक कदम उठाएंगे। एक अन्य अे धिकारी ने कहा कि ऐसे मौके पर फेयरफैक्स इंडिया और प्रेम द्वारा मदद देने की घोषणा कंपनी के लिए काफी प्रेरक साबित होगी। इस सप्ताह की शुरुआत में रिजर्व बैंक ने पीली धातु की शुद्धता को परखने और प्रमाणित करने सहित अन्य पर्यवेक्षी चिंताओं के बाद आईआईएफएल फाइनेंस लिमिटेड को स्वर्ण ऋण देने से रोक दिया था।

क्रांति समय

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

## बेयरस्टो 100 टेस्ट खेलने वाले इंग्लैंड के 17 वें खिलाड़ी बने

**धर्मशाला ।** इंग्लैंड के विकेटकीपर बल्लेबाज जॉनी बेयरस्टो भारतीय टीम के खिलाफ यहां पांचवें और अंतिम क्रिकेट टेस्ट मैच की शुरुआत के साथ 100 टेस्ट मैच खेलने वाले इंग्लैड के 17 वें खिलाड़ी बन गये। इस अवसर पर बेयरस्टो ने कहा कि कि इस ऐतिहासिक उपलब्धि तक पहुंचना उनके लिए बहुत मायने रखता है क्योंकि इस बीच उन्हें कई कड़ी चुनौतियों से गुजरना पड़ा। बेयरस्टो ने कहा,''यह मेरे लिए बहुत मायने रखता है। कोई भी क्रिकेटर अपने करियर में 100 टेस्ट मैच खेलना चाहता है। मैंने 2012 में लॉर्ड्स में पदार्पण किया था और अगर 12 साल बाद मैं 100 टेस्ट मैच खेल रहा हूं। यह बेहद खुशी का पल है।बेयरस्टो ने एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में अपना 100वां मैच भी धर्मशाला में ही खेला था। उन्होंने इस मैच स्थल के बारे में कहा,''केपटाउन मेरा पसंदीदा मैदान है लेकिन मुझे नहीं लगता कि विश्व में धर्मशाला से खूबसूरत कोई और मैदान है। धर्मशाला टेस्ट से पहले बेयरस्टो ने 132 शतक और 26 अर्धशतक लगाते हुए 36.42 की औसत से 5,974 रन बनाए हैं।

# इंग्लैंड को 218 पर समेटने के बाद भारतीय टीम ने एक विकेट पर 135 रन बनाये

### कुलदीप , अश्विन की शानदार गेंदबाजी

**धर्मशाला ।**

भारत ने इंग्लैंड के साथ आज धर्मशाला में शुरु हुए पांचवे और अंतिम क्रिकेट टेस्ट मैच में अच्छा प्रदर्शन करते पहले दिन का खेल समाप्त होने के समय तक अपनी पहली पारी में एक विकेट पर 135 रन बना लिए थे। दिन का खेल समाप्त होने के समय रोहित शर्मा 52 के साथ शुभमन गिल 26 रन बनाकर खेल रहे थे। आउट होने वाले एकमात्र बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल रहे। यशस्वी ने 57 रन बनाये। इससे पहले कुलदीप यादव और आर अश्विन की शानदार गेंदबाजी से भारतीय टीम ने इंग्लैंड को पहली पारी में 218 रनों पर ही समेट दिया था। इस प्रकार भारतीय टीम अब पहली पारी के आधार पर 83 रन ही पीछे है और उसने मैच पर अपना शिकंजा कस दिया है। इससे पहले इंग्लैंड ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी का फैसला किया जो गलत साबित हुआ। उसके बल्लेबाज कुलदीप यादव 72 रन देकर पांच विकेट और आर अश्विन 51 रन देकर चार विकेट की शानदार गेंदबाजी के सामने टिक नहीं पाये। इंग्लैंड की तरफ से केवल जैक क्रॉली ही भारतीय गेंदबाजों का सामना कर पाये। उन्होंने 108 गेंदों पर 11 चौकों और एक छक्के की मदद से 79 रन बनाए। इस मैच में भारत की ओर से देवदत्त पडिक्कल ने अपना टेस्ट डेब्यू किया। उन्हें रजत पाटीदार की जगह शामिल किया गया। इसके अलावा युवा तेज गेंदबाज आकाशदीप की जगह अनुभवी जसप्रीत बुमराह की टीम में वापसी हुई है। बुमराह को पिछले मैच में आराम दिया गया था। वहीं घरेलू क्रिकेट में शानदार प्रदर्शन करने वाले देवदत्त पड्डिकल ने डेब्यू किया है। इसी के साथ ही टेस्ट में भारत के लिए खेलने वाले वह 314वें खिलाड़ी बन गए हैं। वहीं इंग्लैंड ने पहले ही अपनी अंतिम ग्यारह की घोषणा कर दी थी। इंग्लैंड की अंतिम ग्यारह में तेज गेंदबाज मार्क वुड की वापसी हुई जबकि ओली रॉबिन्सन को बाहर रखा गया है। स्पिनर शोएब बशीर भी टीम में बने हुए हैं। इस मैच में भारत के अश्विन और इंग्लैंड के जॉनी बेयरस्टो ने अपना 100 टेस्ट खेलकर एक अहम उपलब्धि भी हासिल की। इस मैच में बारिश की भी आशंका है। मौसम विभाग के अनुसार दूसरे, तीसरे और चौथे दिन धूप रहेगी पर 11 मार्च को फिर से बारिश होने की संभावना है। धर्मशाला की पिच पहले दो दिनों तक बल्लेबाजों की सहायक जबकि इसके बाद गेंदबाजों के अनुकूल हो सकती है।

# अंतिम बार आईपीएल खेलने उतरेंगे कार्तिक

**मुम्बई ।**

भारतीय टीम के अनुभवी विकेटकीपर बल्लेबाज बल्लेबाज दिनेश कार्तिक आईपीएल 2024 सत्र के बाद इस लीग से संन्यास ले लेंगे।

कार्तिक 22 मार्च से शुरू होने वाले इस सत्र के लिए अभी तैयारियां कर रहे हैं। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलोर (आरसीबी) की ओर से खेलने वाले 38 साल के कार्तिक ने साल 2008 से ही आईपीएल के सभी 16 सत्र खेले हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार ये उनका अंतिम आईपीएल होगा। कार्तिक आईपीएल के सबसे अनुभवी विकेटकीपर बल्लेबाजों में से एक हैं। उन्होंने अब तक इस लीग में छह टीमों की ओर से खेल है। उनकी कप्तानी में साल 2018 में नाइट राइडर्स की टीम आईपीएल प्लेऑफ में पहुंची और टीम 2019 में अंक तालिका में पांचवें स्थान पर रही। फिनिशर की भूमिका निभाते हुए उन्होंने आरसीबी के लिए 2022 में शानदार प्रदर्शन किया। कार्तिक ने 2022 में 16 मैच में 55 की औसत और 183.33 के स्ट्राइक रेट से 330 रन बनाए और टीम को प्लेऑफ में पहुंचाने में अहम भूमिका निभाई है। इस प्रदर्शन के आधार पर कार्तिक को ऑस्ट्रेलिया में आयोजित आईसीसी टी20 विश्व कप 2022 के लिए भारतीय टीम में जगह भी मिली थी। विराट कोहली की कप्तानी वाली भारतीय टीम तब सेमीफाइनल में हारकर बाहर हो गई। इसके बाद कार्तिक ने एक कमेंटेटर के तौर पर भूमिका निभानी शुरु कर दी। इस खिलाड़ी ने अंतरराष्ट्रीय करियर में भी अच्छा प्रदर्शन किया है जबकि उनके दौरान में टीम के पास विकेट कीपर बल्लेबाज के तौर पर महेंद्र सिंह धोनी जैसा खिलाड़ी था।

कार्तिक ने 242 आईपीएल मैच में 25.81 की औसत और 132.71 के स्ट्राइक रेट से 20 अर्धशतक की मदद से 4516 रन बनाए हैं। उन्होंने 141 कैच लेने के अलावा 36 स्टंपिंग भी की हैं।

## नडाल इंडियन वेल्स से हटे

**इंडियन वेल्स ।**

विश्व के पूर्व नंबर एक खिलाड़ी स्पेन के राफेल नडाल बीएनपी परिबास ओपन टेनिस से हट गये हैं। नडाल ने टूर्नामेंट की शुरुआत से एक दिन पहले अपना नाम वापस ले लिया। नडाल अगर इस मुकाबले में खेलते तो यह उनका दो महीने में पहला आधिकारिक मैच होता। 22 बार के विजेता नडाल ने कहा कि उनके लिए टूर्नामेंट से बाहर होने की घोषणा करना कठिन था। एक बयान में नडाल ने कहा, 'यह आसान फैसला नहीं है, यह बेहद कठिन है पर मैं स्वयं से और अपने प्रशंसकों से झूठ नहीं बोल सकता। उन्होंने कहा, 'मैं कड़ी मेहनत और अभ्यास कर रहा हूं। आप सभी जानते हैं कि इस सप्ताहांत मैंने अपनी फिटनेस को जांच तो वह एक अहम मुकाबले में खेलने के स्तर की नहीं थी।

# अश्विन 100 टेस्ट मैच खेलने वाले विशिष्ट क्लब में शामिल हुए

**धर्मशाला ।**

भारतीय क्रिकेट टीम के अनुभवी स्पिनर आर अश्विन ने आज यहां इंग्लैंड के खिलाफ पांचवें और अंतिम क्रिकेट टेस्ट मैच के लिए मैदान में उतरते ही एक अहम उपलब्धि अपने नाम कर ली। अश्विन इसी के साथ ही 100 टेस्ट मैच खेलने वाले भारतीय खिलाड़ियों के एक विशिष्ट क्लब में शामिल हो गये। अश्विन 100 टेस्ट मैच खेलने वाले 14 वें भारतीय खिलाड़ी हैं। इस अवसर पर उनका परिवार भी स्टेडियम में मौजूद था। मुख्य कोच राहुल द्रविड़ ने अश्विन को 100वें टेस्ट पर कैप प्रदान करने के साथ ही पूरी टीम और अश्विन के परिवार के साथ इस विशेष पल का जश्न मनाया। अश्विन ने पहले भारत की ओर से सचिन तेंदुलकर (200), राहुल द्रविड़ (163), वीवीएस लक्ष्मण (134), अनिल कुंबले (132), कपिल देव (131), सुनील गावस्कर 125, दिलीप वेंगसरकर (116), सौरव गांगुली (113), विराट कोहली (113), इशांत शर्मा (105), हरभजन सिंह (103) और चेतेश्वर पुजारा (103) ने ही 100 टेस्ट खेले हैं। अश्विन ने 99 टेस्ट में 507 विकेट, 116 एकदिवसीय में 156 विकेट और 65 टी20में 72 विकेट लिए हैं। टेस्ट में उनका औसत 23.91 है, जबकि उन्होंने 35 बार पांच विकेट और आठ बार 10 विकेट लिय हैं। अश्विन ने साल 2011 में टेस्ट क्रिकेट में पदार्पण किया था और तब से वह भारतीय टेस्ट टीम के प्रमुख खिलाड़ी रहे हैं, खासकर घरेलू मैदान पर। वह कुंबले की जगह पर घरेलू टेस्ट में भारत के लिए सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज भी हैं। इस टेस्ट सीरीज में उन्होंने घरेलू टेस्ट में 350 से अधिक विकेट का आंकड़ा भी अपने नाम किया है। राजकोट में अश्विन ने टेस्ट क्रिकेट में 500 विकेट का आंकड़ा पार किया और कुंबले के बाद यह उपलब्धि हासिल करने वाले दूसरे भारतीय बने।

### संक्षिप्त समाचार

## धोनी के ऑटोग्राफ वाली टी शर्ट मैंने संभाल के रखी है : गावस्कर

**मुम्बई ।** भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान सुनील गावस्कर ने कहा है कि महेन्द्र सिंह धोनी के ऑटोग्राफ (हस्ताक्षर) वाली टीशर्ट आज भी उनके घर पर रखी हुई है। गावस्कर ने धोनी की प्रशंसा करते हुए कहा वह उनके प्रशंसक के तौर पर मिले थे। इस दौरान धोनी से मिली ऑटोग्राफ वाली टी शर्ट आज भी उन्होंने संभाल कर रखी है। मैदान के अंदर और बाहर धोनी के अनुकरणीय व्यवहार पर गावस्कर ने खेल में रोल मॉडल के महत्व पर जोर दिया और धोनी की शालीनता और ईमानदारी की सराहना की। गावस्कर ने कहा कि वह हमेशा से ही धोनी के प्रशंसक रहे हैं और उन्हें अपनी उस टी शर्ट पर गर्व है जिस पर पिछले साल के आईपीएल में उनके हस्ताक्षर थे। ये ऑटोग्राफ वाली टी शर्ट उन्हें पिछले साल धोनी ने दी थी। उन्होंने कहा, 'जब मैंने धोनी को पहली बार खेलते देखा है, तब से ही मैं उनका प्रशंसक हूं और एक प्रशंसक क्या चाहता है। प्रशंसक अपने नायक से मिलना चाहता है और उसके साथ बातचीत करना चाहता है, उसका ऑटोग्राफ लेने की कोशिश करना चाहता है। मैं उनके क्रिकेट, उनके रवैये की प्रशंसा करता हूं। गावस्कर ने कहा, जब आप एक रोल मॉडल होते हैं तो आपके ऊपर सभी के साथ अच्छा व्यवहार करने और एक अच्छा रोल मॉडल बनने की जिम्मेदारी होती है। इस दौरान देखा जाता है कि आप किस तरह से अपने को शालीनता के साथ संचालित करते हैं।

## शाहीन पीएसएल में सबसे तेजी से 100 विकेट लेने वाले गेंदबाज बने

**लाहौर ।** लाहौर कलंदर्स के कप्तान शाहीन अफरीदी ने पाकिस्तान सुपर लीग (पीएसएल) के 23 वें मैच में सबसे तेज 100 विकेट लेने के साथ ही एक अहम उपलब्धि अपने नाम की है। ये मुकाबला लाहौर कलंदर्स और इस्लामाबाद यूनाइटेड के बीच खेला गया। शाहीन ने इस मुकाबले में 2 विकेट लेने के साथ ही एक विशेषसूची में भी जगह बना ली है। वह पीएसएल में 100 विकेट लेने वाले तीसरे गेंदबाज भी बन गए हैं। इससे पहले अब तक केवल दो गेंदबाजों ने ही पीएसएल में 100 विकेट लिए हैं। शाहीन ने इस्लामाबाद यूनाइटेड के खिलाफ मैच में कुल 2 विकेट लिए। उन्होंने पहले एलेक्स हेल्स और उसके बाद नसीम शाह को पेवेलियन भेजा। इसके साथ ही वह पीएसएल में 100 विकेट लेने वाले तीसरे गेंदबाज भी बन गये। इससे पहले वहाब रियाज और हसन अली के नाम ही पीएसएल में 100 विकेट हैं। वहाब ने अब तक 88 मैचों में कुल 113 विकेट जबकि हसन ने 79 मैचों में 107 विकेट लिए हैं। शाहीन ने पीएसएल में डेब्यू साल 2018 में किया था। शुरू से ही वो लाहौर कलंदर्स में रहे हैं। पाकिस्तान के शादाब खान ने 79 मैचों में 87 विकेट जबकि फहीम असरफ ने 73 विकेट लिए हैं और वह भी आने वाले समय में 100 विकेट तक पहुंच सकते हैं।

# गुजरात जायंट्स ने महिला प्रीमियर लीग में आरसीबी को 19 रनों से हराया

**बेंगलुरु ।**

लौरा वोल्वार्ड्ट और बेथ मूनी के अर्धशतकों की सहायता से गुजरात जायंट्स ने महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) मुकाबले में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) को 19 रनों से हरा दिया। इस मैच में पहले खेलते हुए गुजरात ने निर्धारित 20 ओवरों में 199 रन बनाए थे। इसके बाद लक्ष्य का पीछा करते हुए आरसीबी की टीम 180 रन ही बना पायी। आरसीबी की ओर से कप्तान स्मृति मंधाना ने 24, एलिसा पेरी ने 24, सोफिया डिवाइन 23 रन ही बना पायीं। जॉर्जिया वेरहेम ने सबसे ज्यादा 48 रन बनाये।आरसीबी की यह लीग में तीसरी हार है और वह अंक तालिका में फिसलकर दूसरे नंबर पर पहुंच गयी है। । इससे पहले गुजरात की शुरूआत अच्छी रही थी। वोल्वार्ड्ट और मूनी ने आरसीबी ने तेजी से रन बनाये। वोल्वार्ड्ट ने 45 गेंदों पर 76 रन बनाए।

इसके बाद मूनी ने 85 रन बनाए। फोएबे लिचफील्ड ने तेजी से 18 रन बनाए जबकि एशले गार्डनर पहली ही गेंद पर पेवेलियन लौट गयीं। दयालन हेमलता ने सिर्फ 1 रन बनाया। मूनी ने इसके बाद पारी को 199 तक ले गई।

वहीं लक्ष्य का पीछा करते हुए आरसीबी की शुरुआत अच्छी नहीं रही। मेघाना 13 गेंदों पर 4 ही रन बना पाई लेकिन कप्तान स्मृति मंधाना ने 16 गेंदों पर 24 रन बनाकर स्कोर आगे बढ़ाया। एलिसा पेरी ने 23 गेंदों पर 24 तो सोफिया डिवाइन ने 16 गेंदों पर दो छक्कों की मदद से 23 रन बनाए। मध्यक्रम में ऋचा घोष ने 21 गेंदों पर 30 तो जॉर्जिया वेरहेम ने 22 गेंदों पर 6 चौके और 2 छक्कों की मदद से 48 रन बनाए पर इनके आउट होते ही टीम ढ़ह गयी।

गुजरात की ओर से गेंदबाजी करते हुए एशले गार्डनर ने 23 रन देकर 2 विकेट लीं।

## पणिकल भारत की ओर से टेस्ट डेब्यू करने वाले 314वें खिलाड़ी बने

**धर्मशाला ।**

24 साल के बाएं हाथ के युवा बल्लेबाज देवदत्त पणिकल ने आज इंग्लैंड के खिलाफ यहां शुरु हुए पांचवें और अंतिम क्रिकेट टेस्ट मैच में डेब्यू किया। उन्हें बल्लेबाज रजत पाटीदार की जगह शामिल किया गया था। पाटीदार पिछले तीन मैचों में रन बनाने में विफल रहे जिससे पणिकल को डेब्यू का अवसर मिला। पणिकर भारत की ओर टेस्ट खेलने वाले 314वें खिलाड़ी बन गए हैं। उन्हें कोच राहुल द्रविड़ ने टेस्ट कैप दी। पणिकर को घरेलू क्रिकेट में शानदार प्रदर्शन का इनाम मिला है। इसके अलावा आईपीएल में भी उनका प्रदर्शन काफी अच्छा रहा है। पणिकर ने 2024 रणजी ट्रॉफी सीजन में 92.66 के शानदार औसत से 556 रन बनाकर अपनी टेस्ट दावेदारी पेश की थी। उन्होंने 3 शतकों के साथ उल्लेखनीय निरंतरता का प्रदर्शन किया, जिसमें 193 रन उनका सबसे अधिक स्कोर रहा। पडिक्कल ने 2024 रणजी ट्रॉफी की शुरुआत पंजाब के खिलाफ 193 रन के साथ की, इसके बाद लगातार अच्छा प्रदर्शन करते रहे। 103 और 151 का स्कोर भी किया। पडिक्कल को की उम्र में टेस्ट डेब्यू का मौका मिला, इसके पहले उन्होंने साल 2021 में ही टी-20 डेब्यू किया था। 17 साल की उम्र में उन्होंने कर्नाटक प्रीमियर लीग (केपीएल) में बेंगलुरु ब्लास्टर्स के खिलाफ सिर्फ 53 गेंदों पर 72 रन बनाकर पहली बार सभी का ध्यान खींचा था। इस बल्लेबाज ने कूच बिहार ट्रॉफी में 829 रन बनाकर कर्नाटक रणजी ट्रॉफी टीम में जगह हासिल की। आईपीएल में आरसीबी की और से साल 2020 और 2021 के सत्र में 473 और 411 रन बनाए।

## टेस्ट इतिहास में तीसरी बार दोनो ही टीमों के अनुभवी खिलाड़ियों ने अपना 100 वां टेस्ट एकसाथ खेला

**धर्मशाला ।** भारत और इंग्लैंड के बीच खेली जा रही टेस्ट सीरीज के अंतिम मैच में एक नया रिकार्ड बना है। इस मैच में दो खिलाड़ियों भारत के अनुभवी स्पिनर आर अश्विन और इंग्लैंड के विकेटकीपर बल्लेबाज जॉनी बेयरस्टो ने अपना 100 वां टेस्ट खेला। यह तीसरा अवसर है जब मैच में खेलने उतरी दोनों ही टीमों के खिलाड़ियों ने एक साथ 100वां मैच खेला है। सबसे पहले साल साल 2006 में टेस्ट क्रिकेट में ऐसा खास मौका आया था जब मैच खेल रही दोनों ही टीम के खिलाड़ियों ने अपने करियर का 100वां मैच एक साथ खेला था। तब दक्षिण अफ्रीका और न्यूजीलैंड के बीच हुए मुकाबले में जैक्स कालिस और शॉन पोलक के अलावा न्यूजीलैंड के पूर्व कप्तान स्टीफेन फ्लेमिंग ने भी अपना 100वां टेस्ट खेला था। इसके अलावा साल 2013 में इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया के बीच खेले गये मैच में दोनों ही टीमों के खिलाड़ियों ने अपने-अपने करियर का 100वां टेस्ट मैच एक साथ खेला था। तब ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान माइकल क्लार्क और इंग्लैंड के दिग्गज एलिस्टर कुक ने अपना सौवां टेस्ट खेला था।

# इंडिया के पदक विजेताओं को सरकारी नौकरी देना सही नहीं : तेजस्विन खेलो

**नई दिल्ली ।**

ऊंची कूद के शीर्ष खिलाड़ी तेजस्विन शंकर ने खेलो इंडिया के पदक विजेताओं को सरकारी नौकरियों दिये जाने का विरोध किया है। उन्होंने कहा कि खेल मंत्रालय के इस कदम से खिलाड़ी नौकरी के लिए गलत तरीके अपना सकते हैं क्योंकि यह नीति लगातार अच्छे प्रदर्शन की जगह एकल उपलब्धि को देखती है। इससे पहले खेल मंत्री अनुराग ठाकुर ने गत दिवस कहा था कि खेलो इंडिया , पैरा और शीतकालीन खेल के पदक विजेता भी सरकारी नौकरियों पा सकेंगे। वहीं राष्ट्रमंडल खेल 2022 में ऊंची कूद में कांस्य और पिछले साल हांगझोउ एशियाई खेलों में डेकाथलन में रजत पदक जीतने वाले तेजस्विन इस फैसले को सही नहीं मानते हैं। उन्होंने सोशल मीडिया पर लिखा, 'अगर हम एक खेल महाशक्ति बनना चाहते हैं तो हम युवाओं और जूनियर खिलाड़ियों को खेल कोटा के तहत नौकरियां देने को सामान्य नहीं बना सकते। इसके लिए एक मानदंड होना चाहिए, जैसे राष्ट्रीय स्तर पर तीन साल तक लगातार पदक जीतना या राष्ट्रीय स्तर पर शीर्ष आठ में पांच साल रहना आदि। इस खिलाड़ी ने कहा, '...जब सरकारी नौकरी की बात हो तो अनुचित साधनों का सहारा लेने के लिए प्रोत्साहन वास्तव में बहुत अधिक है और आपको राष्ट्रीय स्तर पर आयु समूह स्तर पर एक बार पदक जीतना है जबकि हमें प्रदर्शन में निरंतरता को पुरस्कृत करना चाहिये। हालाकि उन्होंने उम्मीदवारों द्वारा अपनाए जाने वाले अनुचित साधनों की सटीक प्रकृति के बारे में कुछ नहीं कहा। वहीं खेल मंत्रालय का मानना है कि इस कदम का उद्देश्य जमीनी स्तर पर प्रतिभाओं को निखारना और खेल को एक आकर्षक तथा व्यावहारिक करियर विकल्प में बदलना है। तेजस्विन ने कहा कि खेलो इंडिया एक 'शानदार पहल है लेकिन नौकरी के अवसर देना उसके लक्ष्य को पूरा नहीं करता है। उन्होंने कहा, 'खेलो इंडिया जागरूकता बढ़ाने, प्रतिभा की खोज करने, रुचि विकसित करने, खेल पारिस्थितिकी तंत्र बनाने आदि का एक शानदार अवसर है, यानी सच्चा जमीनी स्तर का विकास जो एक स्वागत योग्य कदम है पर नौकरियां इसमें फिट नहीं होती। तेजस्विन ने कहा,

'असली लक्ष्य राष्ट्रीय स्कूल, अखिल भारतीय विश्वविद्यालय खेलों, खेलो इंडिया, जूनियर राष्ट्रीय चैंपियनशिप, सीबीएसई राष्ट्रीय चैंपियनशिप, केवीएस राष्ट्रीय चैंपियनशिप, अंडर 14-16 राज्य स्तर आदि का आयोजन करने वाली संस्थाओं के बीच तालमेल बैठाने का होना चाहिये।

## राहुल आईपीएल से वापसी करेंगे , एनसीए में अपने प्रशिक्षण की तस्वीरें साझा कीं

**बेंगलुरु ।** भारतीय क्रिकेट टीम के अनुभवी बल्लेबाज के एल राहुल ने सर्जरी के बाद बेंगलुरु में राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी (एनसीए) में अपने प्रशिक्षण की तस्वीरें साझा की हैं। इस प्रकार राहुल ने 22 मार्च से होने वाले आईपीएल से अपनी वापसी के संकेत दिये हैं। आईपीएल में लखनऊ सुपर जायंट्स की कप्तानी करने वाले राहुल ने सोशल मीडिया पर 'हाय कैप्शन के साथ अपने अभ्यास की तस्वीरें साझा कीं हैं। लखनऊ की टीम 24 मार्च को जयपुर में राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ वापसी करेगी। राहुल जून में अमेरिका और वेस्टइंडीज में होने वाले टी20 विश्व कप में भारतीय टीम में बतौर विकेटकीपर-बल्लेबाज वापसी कर सकते हैं। राहुल इंग्लैंड के खिलाफ पहले टेस्ट में जांध में हुए खिंचाव के बाद से ही टीम से बाहर हैं। हैदराबाद टेस्ट में 86 और 22 रन बनाने वाले राहुल को शुरुआत में विशापत्तनम में सीरीज के दूसरे मैच से बाहर किया गया था। वह इसके बाद से ही टीम से बाहर हैं हालांकि तीसरे से 5वें टेस्ट के लिए टीम में उनका नाम शामिल था पर फिटनेस हासिल करने में विफल रहने के कारण वह सीरीज से बाहर हो गये थे।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

# शिव लोक कल्याणकारी हैं तो संकट विनाशक भी

## शिवरात्रि का पर्व भी दु:खों को दूर करने एवं सुखों का सृजन करने का प्रेरक है। भोलेनाथ भाव के भूखे हैं, कोई भी उन्हें सच्ची श्रद्धा, आस्था और प्रेम के पुष्प अर्पित कर अपनी मनोकामना पूर्ति की प्रार्थना कर सकता है

सम्पूर्ण ब्रह्मांड शिव के अंदर समाया हुआ है। जब कुछ नहीं था तब भी शिव थे जब कुछ न होगा तब भी शिव ही होंगे। शिव को महाकाल कहा जाता है, अर्थात समय। शिव अपने इस स्वरूप द्वारा पूर्ण सृष्टि का भरण-पोषण करते हैं। इसी स्वरूप द्वारा परमात्मा ने अपने ओज व उष्णता की शक्ति से सभी ग्रहों को एकत्रित कर रखा है। परमात्मा का यह स्वरूप अत्यंत ही कल्याणकारी माना जाता है क्योंकि पूर्ण सृष्टि का आधार इसी स्वरूप पर टिका हुआ है। भगवान शिव भोले भण्डारी है और जग का कल्याण करने वाले हैं। भगवान शिव आदिदेव है, देवों के देव है, महादेव हैं। सभी देवताओं में वे सर्वोच्च हैं, महानतम हैं, दु:खों को हरने वाले हैं। प्रतिवर्ष महाशिवरात्रि का पर्व फाल्गुण मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को मनाया जाता है, जो शिवत्व का जन्म दिवस है। यह शिव से मिलन की रात्रि का सुअवसर है। इसी दिन निशीथ अर्धरात्रि में शिवलिंग का प्रादुर्भाव हुआ था। इसीलिये यह पुनीत पर्व सम्पूर्ण देश एवं दुनिया में उल्लास और उमंग के साथ मनाया जाता है। यह पर्व सांस्कृतिक एवं धार्मिक चेतना की ज्योति किरण है। इससे हमारी चेतना जाग्रत होती है, जीवन एवं जगत में प्रसन्नता, गति, संगति, सौहार्द, ऊर्जा, आत्मशुद्धि एवं नवप्रेरणा का प्रकाश परिव्याप्त होता है। यह पर्व जीवन के श्रेष्ठ एवं मंगलकारी व्रतों, संकल्पों तथा विचारों को अपनाने की प्रेरणा देता है।

शिव सभी देवताओं में वे सर्वोच्च हैं, महानतम हैं, दु:खों को हरने वाले हैं। वे कल्याणकारी हैं तो संहारकर्ता भी हैं। सृष्टि के कल्याण हेतु जीर्ण-शीर्ण वस्तुओं का विनाश आवश्यक है। इस विनाश में ही निर्माण के बीज छुपे हुए हैं। इसलिये शिव संहारकर्ता के रूप में निर्माण एवं नव-जीवन के प्रेरक भी है। सृष्टि पर जब कभी कोई संकट पड़ा तो उसके समाधान के लिये वे सबसे आगे रहे। जब भी कोई संकट देवताओं एवं असुरों पर पड़ा तो उन्होंने शिव को ही याद किया और शिव ने उनकी रक्षा की। समुद्र-मंथन में देवता और राक्षस दोनों ही लगे हुए थे। सभी अमृत चाहते थे, अमृत मिला भी लेकिन उससे पहले हलाहल विष निकला जिसकी गर्मी, ताप एवं संकट ने सभी को व्याकुल कर दिया एवं संकट में डाल दिया, विष ऐसा की पूरी सृष्टि का नाश कर दें, प्रश्न था कौन ग्रहण करें इस विष को। भोलेनाथ को याद किया गया गया। वे उपस्थित हुए और इस विष को ग्रहण कर सृष्टि के सम्मुख उपस्थित संकट से रक्षा की। उन्होंने इस विष को कंठ तक ही रखा और वे नीलकंठ कहलाये। इसी प्रकार गंगा को पृथ्वी पर लाने के लिये भोले बाबा ने ही सहयोग किया। क्योंकि गंगा के प्रचंड दबाव और प्रवाह को पृथ्वी कैसे सहन करें, इस समस्या के समाधान के लिये शिव ने अपनी जटाओं में गंगा को समाहित किया और फिर अनुकूल गति के साथ गंगा का प्रवाह उनकी जटाओं से हुआ। ऐसे अनेक सृष्टि से जुड़े संकट और उसके विकास से जुड़ी घटनाएं हैं जिनके लिये शिव ने अपनी शक्तियों, तप और साधना का प्रयोग करके दुनिया को नव-जीवन प्रदान किया। शिव का अर्थ ही कल्याण है, वही शंकर है, और वही रुद्र भी है। शंकर में शं का अर्थ कल्याण है और कर का अर्थ करने वाला। रुद्र में रु का अर्थ दु:ख और द्र का अर्थ हरना- हटाना। इस प्रकार रुद्र का अर्थ हुआ, दु:ख को दूर करने वाले अथवा कल्याण करने वाले।

शिवरात्रि का पर्व भी दु:खों को दूर करने एवं सुखों का सृजन करने का प्रेरक है। भोलेनाथ भाव के भूखे हैं, कोई भी उन्हें सच्ची श्रद्धा, आस्था और प्रेम के पुष्प अर्पित कर अपनी मनोकामना पूर्ति की प्रार्थना कर सकता है। दिखावे, ढोंग एवं आडम्बर से मुक्त विद्वान-अनपढ़, धनी-निर्धन कोई भी अपनी सुविधा तथा सामर्थ्य से उनकी पूजा और अर्चना कर सकता है। शिव न काठ में रहता है, न पत्थर में, न मिट्टी की मूर्ति में, न मन्दिर की भव्यता में, वे तो भावों में निवास करते हैं।

शिवरात्रि का व्रत करने वाले इस लोक के समस्त भोगों को भोगकर अंत में शिवलोक में जाते हैं। शिवरात्रि की पूजा रात्रि के चारों प्रहर में करनी चाहिए। शिव को बिल्वपत्र, धतूरे के पुष्प तथा प्रसाद में भांग अति प्रिय हैं। लौकिक दृष्टि से दूध, दही, घी, शकर, शहद- इन पाँच अमृतों (पंचामृत) का पूजन में उपयोग करने का विधान है। महामृत्युंजय मंत्र शिव आराधना का महामंत्र है। शिवरात्रि वह समय है जो पारलौकिक, मानसिक एवं भौतिक तीनों प्रकार की व्यथाओं, संतापों, पाशों से मुक्त कर देता है। शिव की रात शरीर, मन और वाणी को विश्राम प्रदान करती है। शरीर, मन और आत्मा को ऐसी शान्ति प्रदान करती है जिससे शिव तत्व की प्राप्ति सम्भव हो पाती है। शिव और शक्ति का मिलन गतिशील ऊर्जा का अन्तर्जगत से एकात्म होना है। लौकिक जगत में लिंग का सामान्य अर्थ चिह्न होता है जिससे पुल्लिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसक लिंग की पहचान होती है। शिव लिंग लौकिक के परे है। इस कारण एक लिंगी है। आत्मा है। शिव संहारक हैं। वे पापों के संहारक हैं। शिव की गोद में पहुंचकर हर व्यक्ति भय-ताप से मुक्त हो जाता है।

भगवान शिव को रूद्र नाम से जाना जाता है रुद्र का अर्थ है रुत् दूर करने वाला अर्थात दुखों को हरने वाला अत: भगवान शिव का स्वरूप कल्याण कारक है। शिव शक्ति के प्रतीक ज्योतिर्लिंग का प्रादुर्भाव फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी की निशीथ काल में हुआ था। शिव पुराण के अनुसार सृष्टि के आरंभ में ब्रह्मा ने इसी दिन रुद्र रूपी शिव को उत्पन्न किया था। शिव एवं हिमालय पुत्री पार्वती का विवाह भी इसी दिन हुआ था। अत: यह शिव एवं शक्ति के पूर्ण समरस होने की रात्रि भी है। वे सृष्टि के सर्जक हैं। वे मनुष्य जीवन के ही नहीं, सृष्टि के निर्माता, पालनहार एवं पोषक हैं। उन्होंने मनुष्य जाति को नया जीवन दर्शन दिया। जीने की शैली सिखलाई। शिवरात्रि जागृति का पर्व है, जिसमें आत्मा का मंगलकारी शिव से मिलना होता है। यह आत्म स्वरूप को जानने की रात्रि है। स्वयं से स्वयं के साक्षात्कार का दुर्लभ आध्यात्मिक अनुभव है। यह स्वयं के भीतर जाकर अथवा अंतश्चेतना की गहराइयों में उतरकर आत्म साक्षात्कार करने का प्रयोग है। यह आत्मयुद्ध की प्रेरणा है, क्योंकि स्वयं को जीत लेना ही जीवन की सच्ची जीत है, शिवत्व की प्राप्ति है। काल के इस क्षण की सार्थकता शिवमय हो जाने में है। शक्ति माया नहीं है, मिथ्या नहीं है, प्रपंच नहीं है। इसके विपरीत शक्ति सत्य है। जीव और जगत भी सत्य है। सभी तत्वत: सत्य हैं। सभी शिवमय हैं।

सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति एवं संहार के अधिपति शिव हैं। त्रिदेवों में भगवान शिव संहार के देवता माने गए हैं। शिव अनादि तथा सृष्टि प्रक्रिया के आदि स्रोत हैं और यह काल महाकाल ही ज्योतिषशास्त्र के आधार हैं। शिवरात्रि भोगवादी मनोवृत्ति के विरुद्ध एक प्रेरणा है, संयम की, त्याग की, भक्ति की, संतुलन की। सुविधाओं के बीच रहने वालों के लिये सोचने का अवसर है कि वे आवश्यक जरूरतों के साथ जीते हैं या जरूरतों से ज्यादा आवश्यकताओं की मांग करते हैं। इस शिवभक्ति एवं उपवास की यात्रा में हर व्यक्ति में अहंकार नहीं, बल्कि शिशुभाव जागता है। क्रोध नहीं, क्षमा शोभती है। कष्टों में मन का विचलन नहीं, सहने का धैर्य रहता है। यह तपस्या स्वयं के बदलाव की एक प्रक्रिया है। यह प्रदर्शन नहीं, आत्मा के अभ्युदय की प्रेरणा है। इसमें भौतिक परिणाम पाने की महत्वाकांक्षा नहीं, सभी चाहों का संन्यास है। शिव ने संसार और संन्यास दोनों को जीया है। उन्होंने जीवन को नई और परिपूर्ण शैली दी। पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु, वनस्पति की जीवन में आवश्यकता और उपयोगिता का प्रशिक्षण दिया। कला, साहित्य, शिल्प, मनोविज्ञान, विज्ञान, पराविज्ञान और शिक्षा के साथ साधना के मानक निश्चित किए। सबको काम, अर्थ, धर्म, मोक्ष की पुरुषार्थ चतुष्टयी की सार्थकता सिखलाई। वे भारतीय जीवन-दर्शन के पुरोधा हैं। आज उनका सम्पूर्ण व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व सृष्टि के इतिहास का एक अमिट आलेख बन चुका है। उनका सम्पूर्ण जीवन प्रेरणास्रोत है। लेकिन हम इतने भोले हैं कि अपने शंकर को नहीं समझ पाए, उनको समझना, जानना एवं आत्मसात करना हमारे लिये स्वाभिमान और आत्मविश्वास को बढ़ाने वाला अनुभव सिद्ध हो सकता है। मानवीय जीवन के सभी आयाम शिव से ही पूर्णत्व को पाते हैं।

# हमारे जीवन में ईश्वरीय शक्ति के महत्व को दिखलाता है महाशिवरात्रि का पर्व

महाशिवरात्रि भगवान शिव का त्यौहार है। भारत के सभी प्रदेशो में महाशिव रात्रि का पर्व धूमधाम से मनाया जाता है। भारत के साथ नेपाल, मारिशस सहित दुनिया के कई अन्य देशों में भी महाशिवरात्रि मनाते है। हर साल फाल्गुन मास में कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि को महाशिव रात्रि का व्रत किया जाता है। हिन्दू पुराणों के अनुसार इसी दिन सृष्टि के आरंभ में मध्यरात्रि मे भगवान शिव ब्रह्मा से रुद्र के रूप में प्रकट हुए थे। इसीलिए इस दिन को महाशिवरात्रि कहा जाता है।

शिवरात्रि के प्रसंग को हमारे वेद, पुराणों में बताया गया है कि जब समुद्र मन्थन हो रहा था उस समय समुद्र में चौदह रत्न प्राप्त हुए। उन रत्नों में हलाहल भी था। जिसकी गर्मी से सभी देव दानव त्रस्त होने लगे। तब भगवान शिव ने उसका पान किया। उन्होंने लोक कल्याण की भावना से अपने को उत्सर्ग कर दिया। इसलिए उनको महादेव कहा जाता है। जब हलाहल को उन्होंने अपने कंठ के पास रख लिया तो उसकी गर्मी से कंठ नीला हो गया। तभी से भगवान शिव को नीलकंठ भी कहते हैं। शिव का अर्थ कल्याण होता है। जब संसार में पापियों की संख्या बढ़ जाती है तो शिव उनका संहार कर लोगों की रक्षा करते हैं। इसीलिए उन्हें शिव कहा जाता है। योगिक परम्परा में इस दिन और रात को इतना महत्व इसलिए दिया जाता है क्योंकि यह आध्यात्मिक साधक के लिए जबर्दस्त संभावनाएं प्रस्तुत करते हैं। आधुनिक विज्ञान कई चरणों से गुजरने के बाद आज उस बिंदु पर पहुंच गया है। जहां वह प्रमाणित करता है कि हर वह चीज जिसे आप जीवन के रूप में जानते हैं। पदार्थ और अस्तित्व के रूप में जानते हैं। जिसे आप ब्रह्मांड और आकाशगंगाओं के रूप में जानते हैं। वह सिर्फ एक ही ऊर्जा है। जो लाखों रूपों में खुद को अभिव्यक्त करती है। माना जाता है की इस दिन भगवान शंकर और माता पार्वती का विवाह हुआ था। इस दिन लोग व्रत रखते हैं और भगवान शिव की पूजा करते है। महाशिवरात्रि का व्रत रखना सबसे आसान माना जाता है। इसलिये बच्चों से लेकर बूढ़ो तक सभी इस दिन व्रत रखते हैं। महाशिवरात्रि के व्रत रखने वालों के लिये अन्न खाना मना होता है। इसलिये उस दिन फलाहार किया जाता है।

राजस्थान में व्रत के समय गाजर, बेर का सीजन होने से गांवों में लोगों द्वारा गाजर, बेर का फलाहार किया जाता है। लोग मन्दिरों में भगवान शिव की पूजा करते हैं व उन्हे आक, धतूरा चढ़ाते हैं। भगवान शिव को विशेष रूप से भांग का प्रसाद लगता है। इस कारण इस दिन काफी जगह शिवभक्त भांग घोट कर पीते हैं। पुराणों में कहा जाता है कि एक समय शिव पार्वती जी कैलाश पर्वत पर बैठे थी। उसी समय पार्वती ने प्रश्न किया कि इस तरह का कोई व्रत है जिसके करने से मनुष्य आपके धाम को प्राप्त कर सके ? तब उन्होंने यह कथा सुनाई थी कि प्रत्यना नामक देश में एक व्यक्ति रहता था, जो जीवों को बेचकर अपना भरण पोषण करता था। उसने सेठ से धन उधार ले रखा था। समय पर कर्ज न चुकाने के कारण सेठ ने उसको शिवमठ में बन्द कर दिया। संयोग से उस दिन फाल्गुन बदी चतुर्दशी थी। वहां रातभर कथा, पूजा होती रही जिसे उसने भी सुना। अगले दिन शिघ्र कर्ज चुकाने की शर्त पर उसे छोड़ा गया। उसने सोचा रात को नदी के किनारे बैठना चाहिये। वहां जरूर कोई न कोई जानवर पानी पीने आयेगा। अत: उसने पास के बील वृक्ष पर बैठने का स्थान बना लिया। उस बील के नीचे एक शिवलिंग था। जब वह पेड़ पर अपने छिपने का स्थान बना रहा था उस समय बील के पत्तों को तोडकर फेंकता जाता था जो शिवलिंग पर ही गिरते थे। वह दो दिन का भूखा था। इस तरह से वह अनजाने में ही शिवरात्रि का व्रत कर ही चुका था। साथ ही शिवलिंग पर बेल-पत्र भी अपने आप चढ़ते गये। एक पहर रात्रि बीतने पर एक गर्भवती हिरणी पानी पीने आई। उस व्याध ने तीर को धनुष पर चढ़ाया किन्तु हिरणी की कातर वाणी सुनकर उसे इस शर्त पर जाने दिया कि सुबह होने पर वह स्वयं आयेगी। दूसरे पहर में दूसरी हिरणी आई। उसे भी छोड़ दिया। तीसरे पहर भी एक हिरणी आई उसे भी उसने छोड़ दिया और सभी ने यही कहा कि सुबह होने पर मैं आपके पास आऊंगी। चौथे पहर एक हिरण आया। उसने अपनी सारी कथा कह सुनाई कि वे तीनों हिरणियां मेरी स्त्री थी। वे सभी मुझसे मिलने को छटपटा रही थी। इस पर उसको भी छोड़ दिया तथा कुछ और भी बेल-पत्र नीचे गिराये। इससे उसका हृदय बिल्कुल पवित्र, निर्मल तथा कोमल हो गया। प्रात: होने पर वह बेल-पत्र से नीचे उतरा। नीचे उतरने से और भी बेल पत्र शिवलिंग पर चढ़ गये। अत: शिवजी ने प्रसन्न होकर उसके हृदय को इतना कोमल बना दिया कि अपने पुराने पापों को याद करके वह पछताने लगा और जानवरों का वध करने से उसे घृणा हो गई। सुबह वे सभी हिरणियां और हिरण आये। उनके सत्य वचन पालन करने को देखकर उसका हृदय दुग्ध सा धवल हो गया और वह फूट-फूट कर रोने लगा। योगियों और संन्यासियों के लिए यह वह दिन है जब शिव कैलाश पर्वत के साथ एकाकार हो गए थे। योगिक परम्परा में शिव को ईश्वर के रूप में नहीं पूजा जाता है। बल्कि उन्हें प्रथम गुरु, आदि गुरु माना जाता है। जो योग विज्ञान के जन्मदाता थे। कई सदियों तक ध्यान करने के बाद शिव एक दिन वह पूरी तरह स्थिर हो गए। उनके भीतर की सारी हलचल रुक गई और वह पूरी तरह स्थिर हो गए। वह दिन महाशिवरात्रि था। इसलिए संन्यासी महाशिवरात्रि को स्थिरता की रात के रूप में देखते हैं।

महाशिवरात्रि आध्यात्मिक रूप से सबसे महत्वपूर्ण है। इस रात धरती के उत्तरी गोलार्ध की स्थिति ऐसी होती है कि इंसान के शरीर में ऊर्जा कुदरती रूप से ऊपर की ओर बढ़ती है। इस दिन प्रकृति इंसान को अपने आध्यात्मिक चरम पर पहुंचने के लिए प्रेरित करती है। गृहस्थ जीवन में रहने वाले लोग महाशिवरात्रि को शिव की विवाह वर्षगांठ के रूप में मनाते हैं। सांसारिक महत्वाकांक्षाएं रखने वाले लोग इस दिन को शिव की दुश्मनों पर विजय के रूप में देखते हैं।

# सुख-सौभाग्य की प्राप्ति के रोजाना 'ऊँ नम: शिवाय' मंत्र का करें जाप

सनातन धर्म में मंत्रोच्चार का अधिक महत्व माना जाता है। हिंदू धर्म और सनातन परंपरा में जितने भी मंत्र है, उन सभी का अपना माहत्व है। साथ ही इन मंत्रों के जाप से कई लाभ भी मिलते हैं। ऐसे में अगर आप भी भगवान शिव की कृपा व आशीर्वाद प्राप्त करना चाहते हैं, तो यह आर्टिकल आपके लिए है। आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि 'ऊँ नम: शिवाय' मंत्र का जाप करने से क्या लाभ मिलता है और इस मंत्र जाप का क्या महत्व होता है।

'ऊँ नम: शिवाय' मंत्र जाप का महत्व

भगवान भोलेनाथ के 'ऊँ नम: शिवाय' मंत्र को पंचाक्षर भी कहा जाता है। धार्मिक शास्त्रों के मुताबिक भगवान शिव के इस मंत्र में पंच तत्व समाहित हैं। इस मंत्र के प्रथम अक्षर यानी की 'ऊँ' से सूर्य का निर्माण हुआ है। वहीं ऊँ अक्षर भगवान शिव को अत्यंत प्रिय है।

ऐसे में जब आप ऊँ कहते हैं, तो इससे महादेव के साथ ही सूर्य की भी आराधना हो जाती है। वहीं नम: शिवाय का अर्थ है कि भगवान भोलेनाथ के चरणों में नमन कर खुद का समर्पण दिखाना। इसलिए हमें रोजाना 'ऊँ नम: शिवाय' मंत्र का जाप करना चाहिए।

पंचाक्षर मंत्र जपने के लाभ

भगवान शिव के इस मंत्र जाप से व्यक्ति में तेज पैदा होता है। जातक का व्यवहार और उसका व्यक्तित्व उसे तेजस्वी और आकर्षक बनाता है। ऐसे में जो भी व्यक्ति 'ऊँ नम: शिवाय' मंत्र का रोजाना जाप करता है, उसके जीवन के सभी संकट दूर हो जाते हैं।

बताया जाता है कि 'ऊँ नम: शिवाय' मंत्र का रोजाना जाप करने से व्यक्ति पर भगवान शिव की कृपा बनी रहती है। व्यक्ति को भोलेनाथ का सानिध्य और आशीर्वाद प्राप्त होता है। भगवान भोलेनाथ खुद उस व्यक्ति की हर नकारात्मक चीज से रक्षा करते हैं और व्यक्ति के जीवन में सुख-समृद्धि और खुशियों का आगमन होता है।

रोजाना 'ऊँ नम: शिवाय' मंत्र जाप करने से महादेव की कृपा के साथ ही सूर्यदेव की कृपा भी प्राप्त होती है। बता दें कि सूर्य देव नव ग्रह के राजा माने जाते हैं। ऐसे में सूर्य देव के शांत होने से अन्य सभी ग्रह भी शांत हो जाते हैं।

क्रांति समय
Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

## पाकिस्तानी सेना प्रमुख जनरल मुनीर ने पीएम शाहबाज शरीफ से की मुलाकात

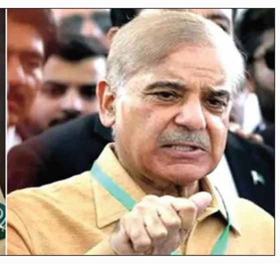

लाहौर। पाकिस्तान सेना प्रमुख जनरल आसिम मुनीर ने नवनिर्वाचित प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ से पहली बार मुलाकात कर पेशेवर और सुरक्षा संबंधी मुद्दों पर चर्चा की। पाकिस्तान की शक्तिशाली सेना ने शहबाज शरीफ को पद संभालने पर बधाई दी थी। सेना प्रमुख जनरल मुनीर ने इस्लामाबाद में प्रधानमंत्री आवास पर शहबाज को बधाई देने के लिए मुलाकात की और देश के 24वें मुख्य कार्यकारी के रूप में पदभार संभालने के लिए उन्हें शुभकामनाएं दीं। प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) द्वारा जारी बयान के अनुसार, बैठक के दौरान, पाकिस्तानी सेना और सुरक्षा मामलों के पेशेवर मामलों पर भी विचारों का आदान-प्रदान किया गया। बैठक में राष्ट्रीय सुरक्षा सहित अहम मुद्दों पर चर्चा हुई। इस अवसर पर, सेना प्रमुख ने प्रधानमंत्री को उनके पदभार ग्रहण करने पर बधाई और शुभकामनाएं दीं।

## चीन में मैग्लेव ट्रेन का सफल टेस्ट, 623 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से दौड़ी ट्रेन

बीजिंग। चीन ने अब मैग्नेटिकली लैविटेटेड यानी मैग्लेव ट्रेन का सफल परीक्षण किया है। चाइना एयरोस्पेस साइंस एंड इंडस्ट्रीज कारपोरेशन के मुताबिक पिछले साल अक्टूबर माह में उन्होंने मैग्लेव ट्रेन का टेस्ट लिया था। इस दौरान इसकी स्पीड 623 किलोमीटर प्रति घंटा मापी गई थी। अब तक की सबसे तेज ट्रेन की रफ्तार का नया रिकॉर्ड अपने नाम किया है। उनका कहना है कि अब वह इस गति को 3 गुना ज्यादा बढ़ाने में लगे हुए हैं। चीन का सपना मैग्लेव ट्रेनों को हवाई जहाज की गति से भी तेज चलाने का है। इससे पहले सुपरकंडक्टिंग मैग्लेव तकनीक का 380 मीटर ट्रैक पर परीक्षण किया गया था। इस दौरान इसकी गति 145 मील प्रति घंटे यानी 234 किलोमीटर प्रति घंटे मापी गई थी। रिपोर्ट के मुताबिक सीएएसआईसी ने अपने अगले चरण में ट्रेन की स्पीड को 621 मील प्रति घंटे यानी 1,000 किलोमीटर प्रति घंटे तक बढ़ाने का प्लान बनाया है। बता दें कि मैग्लेव ट्रेन इलेक्ट्रोमैग्नेटिक ऊर्जा की वजह से पटरी से कोई 10 मिलीमीटर ऊपर हवा में चलती हैं। रफ्तार को बढ़ाने के लिए ट्रेन को खास तरह से डिजाइन लो-वैक्यूम ट्यूब से गुजारा जाता है। सीएएसआईसी ने कहा है कि इस टेस्ट से साबित हो गया है कि व्हीकल ट्यूब और ट्रैक अच्छी तरह से एक साथ काम कर सकते हैं, जिससे भारी मैग्लेव व्हीकल लगातार ऊपर उठे रहते हैं।

## पाई पाई के लिए परेशान बांग्लादेश ने सऊदी अरब से लगाई मदद की गुहार

जद्दा। बांग्लादेश आर्थिक संकट से गुजर रहा है और आर्थिक चुनौतियों से निपटने के लिए सरकार सऊदी अरब की ओर देख रही है। इसके अलावा हसन महमूद ने गाजा संकट पर जेद्दा में हुई ऑर्गेनाइजेशन ऑफ इस्लामिक कॉपरेशन की मीटिंग में भी हिस्सा लिया। इस बैठक में ओआईसी से जुड़े देशों के दर्जनों विदेश मंत्रियों ने हिस्सा लिया। सऊदी विदेश मंत्री फैसल बिन फरहान से मुलाकात के बाद बांग्लादेश के विदेश मंत्री ने बैठक पर अपनी संतुष्टि जाहिर की और सऊदी से मदद की उम्मीद जताई। बीपीसी (बांग्लादेश पेट्रोलियम कार्पोरेशन) के डिप्टी मैनेजर ने मीडिया को बताया कि बांग्लादेश अपने घटते विदेशी मुद्रा भंडार की वजह से तेल की पेमेंट के लिए संघर्ष कर रहा है। ऐसे में सऊद अरब से मिला सहयोग मददगार साबित होगा। बांग्लादेश वर्तमान में सऊदी अरामको से लगभग 700,000 मीट्रिक टन कच्चे तेल का आयात करता है और अब तक जेद्दा स्थित इंटरनेशनल इस्लामिक ट्रेड फाइनेंस कॉरपोरेशन के फंड की मदद से सऊदी को समय पर भुगतान करने में कामयाब रहा है।

## मैक्सिको में हेलीकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त, 3 की मौत

मैक्सिको सिटी। मैक्सिकन नौसेना के हेलीकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त होने से तीन सदस्यों की मौत हो गई। नौसेना मंत्रालय ने कहा कि दुर्घटना लाजारो कर्डेनस बंदरगाह से 370 किमी दक्षिण पश्चिम में हुई। मंत्रालय ने कहा कि नौसेना का हेलीकॉप्टर फ्लाइट डेक से उड़ान भरने के तुरंत बाद दुर्घटनाग्रस्त हो गया और अब तक दुर्घटना के कारणों का पता नहीं चल पाया है। नौसेना ने कहा कि विमान में आठ नौसैनिक सवार थे, जिनमें से तीन को जीवित बचाया और उनका स्वास्थ्य स्थिर है। मैक्सिको के मुख्य बंदरगाहों में से एक, लाजारो कर्डेनस, मादक पदार्थों की तस्करी से जुड़ी हिंसा से प्रभावित है।

## हूती विद्रोहियों के हमले से दो सदस्यों की मौत

लंदन। यमन के हूती विद्रोहियों ने अदन की खाड़ी में एक व्यापारिक जहाज पर मिसाइल से हमला किया, जिसमें चालक दल के दो सदस्यों की मौत हुई। गाजा में हमास के खिलाफ इजराइल के युद्ध छेड़ने के बाद यह हूती विद्रोहियों का पहला हमला है, जिसमें लोगों की जान गई है। हमला बारबाडोस के ध्वज वाले जहाज 'ट्रू कॉन्फिडेंस' पर हुआ। इस हमले के बाद एशिया और मध्य पूर्व को यूरोप से जोड़ने वाले महत्वपूर्ण समुद्री मार्ग पर संघर्ष बढ़ गया है, जिससे जहाजों की वैश्विक आवाजाही बाधित हो गई है। इस बीच, ईरान ने घोषणा की कि वह अमेरिकी ऊर्जा कंपनी शेवरॉन कॉर्प को भेजे जा रहे पांच करोड़ डॉलर मूल्य के कुवैती कच्चे तेल को जब्त कर लेगा। यह कच्चा तेल उस टैंकर में है जिसे उसने करीब एक साल पहले जब्त किया था। अधिकारियों ने कहा कि अदन की खाड़ी में हमले में बारबाडोस के ध्वज वाले 'ट्रू कॉन्फिडेंस' नामक मालवाहक पोत को निशाना बनाया गया।

## 72 की उम्र में रेने लैंडर्स बनी बॉडीबिल्डर, लिया बिकनी प्रतियोगिता में भाग

टेक्सास। आमतौर पर लोग जहां 60 की उम्र में रिटायर होकर आराम की जिंदगी बसर करने लगते हैं। वहीं एक महिला ने दुनिया में एक अनोखी मिसाल रखी है। 72 साल की रेने लैंडर्स एक बॉडी बिल्डर हैं। वे कोई पेशेवर बॉडीबिल्डर नहीं है। आज वे बिकनी प्रतियोगिता में भाग लेती है, आर्नॉल्ड श्वाजनेगर उनके आदर्श हैं। लेकिन इसमें हैरानी की बात यह है कि उनका बॉडी बिल्डिंग का शौक तब पनपा था जब उनकी उम्र 60 साल के पार हो चुकी थी। टेक्सास की रहने वाली ग्रैनी रेनी लैंडर्स हैं। एक समय था जब अधिक उम्र के कारण इन्हें चोट की वजह से सेहत संबंधी समस्याएं होने लगी थीं। ऐसा नहीं था इससे पहले लैंडर्स सक्रिय जीवन नहीं जी रही थीं, लेकिन इस घटना के बाद उनकी जिंदगी ही बदल गई थी।

उत्तर कोरिया में शीर्ष नेता किम जोंग उन सैनिकों के प्रशिक्षण के दौरान एक बंदूक को देखते हुए।

## बदल रहा भारत, हर दिन 28 किलोमीटर हाईवे बना रहा : जयशंकर

टोक्यो। भारतीय विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने कहा कि जापान के लिए यह जानना महत्वपूर्ण है कि आज के मौजूदा वैश्विक परिदृश्य में भारत एक अलग तरह का देश है, जो तेजी से बदल रहा है। टोक्यो में पहले रायसीना गोलमेज सम्मेलन में विदेश मंत्री ने कहा भारत में हो रहा परिवर्तन अधिक प्रभावी और विश्वसनीय भागीदार बनाता है। उन्होंने कहा कि मैं सोचता हूं कि यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि जापान भारत में परिवर्तन की मौजूदा गति की सराहना करे। भारत आज वहां देश है, जो प्रतिदिन 28 किलोमीटर हाईवे का निर्माण कर रहा है, प्रतिवर्ष नए एयरपोर्ट का निर्माण कर रहा है, हर साल डेढ़ से दो मेट्रो का निर्माण कर रहा है। उन्होंने कहा कि पिछले 10 सालों में भारत ने प्रतिदिन दो नए कॉलेजों का निर्माण किया है और अपने तकनीकी और चिकित्सकीय संस्थानों की संख्या को दोगुना किया है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि चाहे ईज ऑफ डूइंग बिजनेस हो, बुनियादी ढांचे का विकास हो, ईज ऑफ लिविंग हो, डिजिटल डिलीवरी हो, स्टार्टअप हो और नवाचार संस्कृति हो, भारत विश्व में एक स्पष्ट रूप से एक अलग देश के रूप में अपनी पहचान स्थापित कर चुका है और आज की तारीख में इसी बात को जापान को पहचानने की जरूरत है। विदेश मंत्री ने कहा, यह स्पष्ट रूप से एक कठिन कार्य है, लेकिन इसमें हमें दृढ़ रहना होगा जो एशिया में बहुध्रुवीयता के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यह हमारे सामान्य हित में भी है कि संतुलन बना रहे। उन्होंने कहा कि दुनिया अब अधिक अस्थिर, अनिश्चित, अप्रत्याशित और खुले विचारों वाली हो गई है, यह एक ऐसी संभावना है, जिसका भारत और जापान को राष्ट्रीय दृष्टिकोण के साथ-साथ अपने स्वयं के दृष्टिकोण से भी सामना करना होगा। जयशंकर तीन दिवसीय जापान यात्रा पर हैं। उम्मीद है कि दोनों मंत्री द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और वैश्विक महत्व के मुद्दों पर चर्च करे और स्वतंत्र, खुले, समावेशी, शांतिपूर्ण और समृद्ध भारत-प्रशांत क्षेत्र के लिए सहयोग पर विचारों का आदान-प्रदान करे।

## चुनाव आयोग पर इमरान खान ने लगाए संगीन आरोप, जानें कैसे फॉर्म-45 से छेड़छाड़ कर हो गया बड़ा खेल

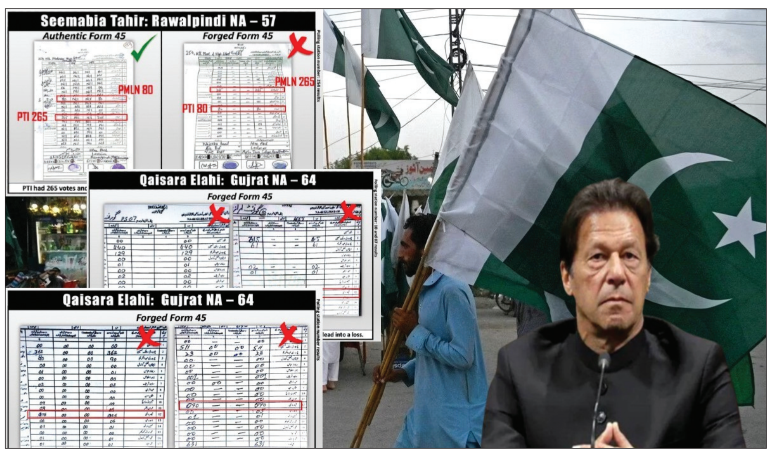


**इस्लामाबाद (एजेंसी)।** पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) ने आरोप लगाया कि पाकिस्तान चुनाव आयोग (ईसीपी) की वेबसाइट पर अपलोड किए गए फॉर्म-45 के साथ छेड़छाड़ की गई है। पीटीआई नेता तैमूर खान झागरा ने इस्लामाबाद में एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए ये टिप्पणी की। उनके साथ पीटीआई प्रमुख बैरिस्टर गोहर खान और पार्टी नेता बैरिस्टर सलमान अकरम राजा भी थे। उन्होंने कहा कि पीटीआई ने मतदान के दिन 90 प्रतिशत फॉर्म-45 प्राप्त कर लिए हैं और वे ईसीपी द्वारा कल अपलोड किए गए फॉर्म-45 से भिन्न थे। इससे ??साफ पता चलता है कि धांधली हुई है। इस अवसर पर बोलते हुए, बैरिस्टर गोहर ने कहा कि पार्टी के पास 8 फरवरी के चुनावों में धांधली के पर्याप्त सबूत हैं और पार्टी अदालत में सबूत दिखाएगी। पार्टी ने सोशल मीडिया पर अपनी वेबसाइट पर मनगढ़ंत फॉर्म 45 अपलोड करने के लिए पक्षपातपूर्ण और अत्यधिक विवादास्पद ईसीपी की आलोचना की।

एक्स पर एक थ्रेड पोस्ट में पार्टी ने ईसीपी के फॉर्मों के साथ प्रामाणिक फॉर्म 45 को सूचीबद्ध करते हुए कहा कि दुनिया को बता दें कि पाकिस्तान के पक्षपाती और अत्यधिक विवादास्पद चुनाव आयोग ने आम चुनाव 2024 के लगभग एक महीने बाद अपनी वेबसाइट पर मनगढ़ंत फॉर्म 45 अपलोड किया। बता दें कि फॉर्म 45 वे दस्तावेज हैं जिनमें प्रत्येक मतदान केंद्र का डेटा शामिल है। पीटीआई नामांकित उम्मीदवारों के पास मूल, हस्ताक्षरित फॉर्म 45 हैं, जो उन्हें चुनाव के दिन प्राप्त हुए थे। ईसीपी द्वारा फॉर्म 45 में छेड़छाड़, संपादन और जालसाजी, न केवल स्पष्ट रूप से स्पष्ट है, बल्कि पूरी तरह से अपमानजनक भी है।

पाकिस्तान में आठ फरवरी को हुए चुनाव में जेल में बंद पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की पार्टी द्वारा समर्थित निर्दलीय उम्मीदवारों ने 101 सीट पर जीत दर्ज की है। वहीं, तीन बार के पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ की पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज (पीएमएल-एन) 75 सीट जीतकर तकनीकी रूप से संसद में सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है। बिलावल जरदारी भुट्टो की पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी (पीपीपी) को 54 सीट मिलीं, जबकि विभाजन के दौरान भारत से आए उर्दू भाषी लोगों की मुत्ताहिदा कौमी मूवमेंट पाकिस्तान (एमक्यूएम-पी) को 17 सीट मिली हैं। बाकी 12 सीट पर अन्य छोटे दलों ने जीत हासिल की।

## 45 साल बाद पूर्व प्रधानमंत्री भुट्टो की फांसी को गलत माना

### -सुप्रीम कोर्ट ने कहा, सुनवाई संविधान के अनुरूप नहीं हुई थी

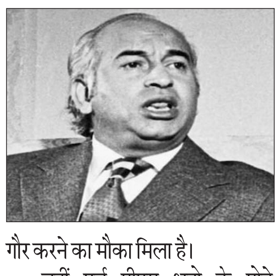

**इस्लामाबाद (एजेंसी)।** पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री जुल्फिकार अली भुट्टो को 1979 में हत्या से जुड़े मामले में फांसी दी गई थी। लेकिन 45 साल बाद पाकिस्तानी सुप्रीम कोर्ट ने पूर्व पीएम भुट्टो की फांसी को लेकर बड़ी टिप्पणी दी है। सुप्रीम कोर्ट का कहना है कि पूर्व प्रधानमंत्री भुट्टो के खिलाफ चलाए गए मुकदमे में हुई सुनवाई संविधान के अनुरूप नहीं थी। पाकिस्तान के चीफ जस्टिस काजी फैज ईसा की अगुवाई में नौ जजों की पीठ ने ये टिप्पणी पूर्व राष्ट्रपति आसिफ अली जरदारी की ओर से दायर रिफरेंस पर की है।

दरअसल जरदारी ने दो अप्रैल 2011 को पाकिस्तानी संविधान के अनुच्छेद 189 के तहत पूर्व प्रधानमंत्री भुट्टो को दिए गए मृत्युदंड पर सुप्रीम कोर्ट की राय मांगी थी। जरदारी ने याचिका में कहा था कि 1979 के फैसले पर फिर से गौर होना चाहिए। रिपोर्ट के मुताबिक, सुप्रीम कोर्ट ने माना है कि हमारे न्यायिक इतिहास में इसतरह के कुछ मामले हुए हैं, जिन्होंने आमजन में ऐसी धारणा बनी है कि डर से या फिर पक्षपात करने से न्याय प्रभावित होता है। जब तक हम अतीत में की गई अपनी गलतियों को स्वीकार नहीं करते, तब तक हम खुद में सुधार नहीं कर सकते। चीफ जस्टिस ने कहा कि इस रेफरेंस से सैन्य तानाशाह जनरल जिया उल हक के शासन में भुट्टो को मृत्युदंड दिए जाने के मामले पर फिर से गौर करने का मौका मिला है।

वहीं पूर्व पीएम भुट्टो के पोते बिलावल भुट्टो जरदारी ने अदालत के फैसले को ऐतिहासिक बताया है। उन्होंने कहा है कि 44 साल बाद देश की सुप्रीम कोर्ट के फैसले से देश को सही राह में आगे बढ़ने में मदद मिलेगी। 44 साल पुराने उस फैसले के दाग से इस मुल्क के लोगों को अदालत पर विश्वास करने में मुश्किल हुई। लोगों की धारणा रही कि अगर इस मुल्क के प्रधानमंत्री को न्याय नहीं मिला तब हमें कैसे मिलेगा।

### क्या है मामला?

पाकिस्तान में 1979 में पूर्व पीएम भुट्टो को हत्या के मामले में उकसाने के लिए दोषी मनाकर फांसी की सजा दी गई थी। सुप्रीम कोर्ट की सात सदस्यीय बेंच के चार जजों ने लाहौर हाईकोर्ट के फैसले को बरकरार रखा था, जबकि तीन ने जुल्फिकार अली भुट्टो को आरोपों से बरी कर दिया था। उसके बाद 4 अप्रैल, 1979 को भुट्टो को फांसी दे दी गई थी। हालांकि, भुट्टो का परिवार आज भी न्याय की मांग कर रहा है। कई लोगों का मानना है कि यह तत्कालीन सैन्य तानाशाह जनरल हक के दबाव में लिया गया फैसला था, जिन्होंने 1977 में भुट्टो की सरकार को गिरा दिया था।

## आंतरिक मामले में दखल न दें, नहीं तो निष्कासित कर दिया जाएगा, अमेरिकी राजदूत को रूस का सख्त संदेशं

वॉशिंगटन। रूसी विदेश मंत्रालय ने गुरुवार को कहा कि उसने मॉस्को में अमेरिकी राजदूत लिन ट्रेसी को यह चेतावनी देने के लिए बुलाया था कि वह अपने आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने वाले अमेरिकी राजनयिकों को निष्कासित कर देगी। मॉस्को ने 15-17 मार्च को होने वाले राष्ट्रपति चुनाव से पहले चेतावनी जारी की, जिसमें 20 वर्षों से अधिक समय तक रूस के सर्वोपरि नेता राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की अप्रत्याशित प्रगति के कारण जीत निश्चित है। विदेश मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि वह चुनाव से संबंधित 'विध्वंसक कार्रवाइयों और सूचना के प्रसार' पर नजर रखेगा और क्रेमलिन यूक्रेन में अपने विशेष सैन्य अभियान को क्या कहता है। इसमें कहा गया है कि इस तरह के व्यवहार को दृढ़ता से और दृढ़ता से दबा दिया जाएगा, जिसमें ऐसे कार्यों में शामिल संयुक्त राज्य दूतावास के कर्मचारियों को 'पर्सोना नॉन ग्राटा' के रूप में निष्कासन भी शामिल है। विदेश मंत्रालय ने यह भी मांग की कि अमेरिकी दूतावास तीन अमेरिकी गैर-लाभकारी संस्थाओं का समर्थन करना बंद कर दे, जिनके बारे में उसने कहा था कि वे देश में रूसी विरोधी कार्यक्रम चला रहे थे, जिसका उद्देश्य 'शैक्षणिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान की आड़ में 'प्रभाव के एजेंटों' की भर्ती करना था।

## ट्रंप और बाइडन के बीच ही होगा मुकाबला

### -भारतवंशी निक्की हेली रेस से हुईं बाहर

**वाशिंगटन (एजेंसी)।** अमेरिका में भारतीय मूल की पूर्व गवर्नर निक्की हेली अब राष्ट्रपति उम्मीदवार की दौड़ से बाहर हो गई हैं। दरअसल 'सुपर ट्यूजडे' को 15 राज्यों की पार्टी प्राइमरी में हार के बाद रिपब्लिकन पार्टी की ओर से राष्ट्रपति पद की उम्मीदवार निक्की हेली ने अपना प्रचार अभियान बुधवार को रोक दिया। ऐसे में पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप रिपब्लिकन पार्टी की ओर से राष्ट्रपति पद की उम्मीदवारी हासिल करने की दौड़ में एकमात्र प्रमुख उम्मीदवार रह जाते हैं। इस प्रकार अब पूर्व राष्ट्रपति ट्रंप और मौजूदा राष्ट्रपति जो बाइडन के बीच राष्ट्रपति के लिए मुकाबला होना तय है।

सुपर ट्यूजडे की प्राइमरी के बाद ट्रंप (77) ने अपनी एकमात्र रिपब्लिकन प्रतिद्वंद्वी निक्की हेली (52) को काफी पीछे छोड़ते हुए मजबूत बढ़त बना ली। ट्रंप ने वर्मोंट प्रांत में जीत हासिल कर निक्की को पूर्ण बहुमत से दूर कर दिया। इसके साथ ही साउथ कैरोलाइना की पूर्व गवर्नर हेली ने कहा, कि 'अब मेरा प्रचार अभियान रोकने का समय आ गया है। अमेरिकियों की आवाज सुनी जाए। इस पर मुझे कोई पछतावा नहीं है कि अब मैं उम्मीदवार नहीं रहूंगी, लेकिन मैं अपनी आवाज बुलंद करती रहूंगी, जिन पर मुझे विश्वास है। अब सवाल यह है कि क्या हेली ट्रंप का समर्थन करेंगी या नहीं करेंगी? इस बारे में हेली ने अंतिम निर्णय नहीं लिया है। उनके करीबी भी इस संबंध में अलग-अलग राय दे रहे हैं। कुछ का मानना है कि ट्रंप का समर्थन करना ही अच्छा होगा, क्योंकि ऐसा करके वो एक टीम के रूप में कार्य कर सकेंगी। कुछ लोग इस राय का तीव्र विरोध भी करते हैं।

## स्टेट ऑफ द यूनियन में बाइडेन का संबोधन, किन मुद्दों पर बोल सकते हैं अमेरिकी राष्ट्रपति?

**वाशिंगटन (एजेंसी)।** संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन द्वारा आज रात 9 बजे ईटी में अपना तीसरा स्टेट ऑफ द यूनियन संबोधन देने की उम्मीद है। उम्मीद है कि यह न केवल दूसरे कार्यकाल के लिए उनकी मानसिक क्षमता को रेखांकित करने के लिए, बल्कि उनकी पुनः चुनाव की बोली के लिए माहौल तैयार करने के लिए भी एक महत्वपूर्ण क्षण होगा। संयुक्त राज्य के सबसे उम्रदराज राष्ट्रपति आज रात वाशिंगटन डीसी में यूएस कैपिटल में बोलने वाले हैं। इसे कांग्रेस के संयुक्त सत्र में पेश किया जाएगा, जिसमें सीनेट और प्रतिनिधि सभा दोनों उपस्थित होंगे। उपराष्ट्रपति कमला हैरिस और हाउस स्पीकर माइक जॉनसन बिडेन के पीछे बैठे होंगे और राष्ट्रपति के कैबिनेट और सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश भी मौजूद हो सकते हैं।

जैसा कि प्रथागत है, विरोधी राजनीतिक दल संघ के राष्ट्रपति के राज्य का खंडन करता है। इस वर्ष अलबामा की सीनेटर केटी ब्रिट देश के भविष्य के लिए पार्टी के दृष्टिकोण को रेखांकित करते हुए रिपब्लिकन खंडन प्रदान करेंगी। इस साल के संबोधन का महत्व और भी बढ़ गया है क्योंकि दूसरे कार्यकाल के लिए अपनी उम्मीदवारी की घोषणा के बाद से यह बिडेन का पहला संबोधन है। यह देश को चलाने की उनकी मानसिक क्षमता को लेकर बढ़ती आलोचना और चिंता के बीच भी आया है। उम्मीद है कि वह अपने काम के प्रदर्शन के बारे में मतदाताओं की चिंताओं को दूर करने की कोशिश करेंगे और डोनाल्ड ट्रम्प के खिलाफ चुनावी मैदान में उतरेंगे। बाइडेन उन प्रमुख मुद्दों को संबोधित कर सकते हैं जिन्होंने उनके राष्ट्रपति पद को परिभाषित किया है, जिसमें अमेरिकी लोकतंत्र का भविष्य, यूक्रेन और इज़राइल जैसे विदेशी सहयोगियों के लिए समर्थन और यूएस-मेक्सिको सीमा पर प्रवासन जैसी चुनौतियां शामिल हैं। इसके अलावा, उनसे वाशिंगटन, डीसी में राजनीतिक पक्षपात को पाटने के प्रयासों पर जोर देने की उम्मीद है।

## पाकिस्तान का विदेशी ऋण पहली छमाही में 1.2 अरब डॉलर बढ़ा

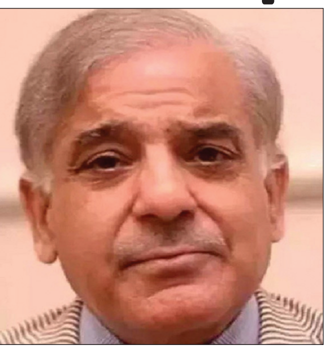

**इस्लामाबाद। (एजेंसी)।** नकदी संकट से जूझ रहे पाकिस्तान का विदेशी सार्वजनिक ऋण पिछले साल अप्रैल-सितंबर की अवधि में 1.2 अरब डॉलर बढ़कर 86.35 अरब डॉलर से अधिक हो गया जिसमें विश्व बैंक और चीन की सबसे बड़ी हिस्सेदारी रही। आर्थिक मामलों के मंत्रालय ने चालू वित्त वर्ष के लिए विदेशी आर्थिक मदद पर जारी एक रिपोर्ट में यह जानकारी दी है। इसके मुताबिक, पाकिस्तान को जुलाई-सितंबर, 2023 में 1.5 अरब डॉलर के ऋण भुगतान के मुकाबले 3.5 अरब डॉलर का कुल विदेशी धन मिला जिससे शुद्ध प्रवाह 1.97 अरब डॉलर का रहा। इसके साथ सितंबर, 2023 तक पाकिस्तान सरकार का कुल बाहरी सार्वजनिक ऋण बढ़कर 86.35 अरब डॉलर हो गया।

मंत्रालय के हवाले से समाचारपत्र 'द डॉन' में बृहस्पतिवार को प्रकाशित एक रिपोर्ट के मुताबिक, कुल बाहरी सार्वजनिक ऋण का लगभग 64 प्रतिशत रियायती शर्तों और लंबी परिपक्वता अवधि वाले बहुपक्षीय और द्विपक्षीय स्रोतों से मिला था। पाकिस्तान पर मार्च, 2023 तक बाह्य सार्वजनिक ऋण 85.18 अरब डॉलर था। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, पाकिस्तान ने वित्त वर्ष 2023-24 की पहली तिमाही में 64.2 करोड़ डॉलर के नए ऋण समझौतों पर हस्ताक्षर किए थे और सभी नई प्रतिबद्धताओं को बहुपक्षीय विकास भागीदारों द्वारा वित्तपोषित किया गया था। पाकिस्तान को कर्ज देने वाले बहुपक्षीय संस्थानों में विश्व बैंक 30.6 करोड़ डॉलर के साथ सबसे आगे रहा जबकि चीन 50.9 करोड़ डॉलर के साथ अग्रणी द्विपक्षीय ऋणदाता बनकर उभरा।

## बैन होगी ईवीएम.....सोशल मीडिया पर चल रहे फर्जी वीडियो

### –पीईबी ने किया साफ, ये सारे दावे गलत

नई दिल्ली। आम चुनाव को लेकर भारत निर्वाचन आयोग जल्द ही लोकसभा चुनाव 2024 की तारीखों का ऐलान कर सकता है। इन तमाम चुनावी खबरों के बीच सोशल मीडिया पर इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन या ईवीएम को लेकर भी बड़े दावे हो रहे हैं। दावों में बताया जा रहा हैं देश में ईवीएम का इस्तेमाल बंद होने वाला है? इस रिपोर्ट में जानते हैं कि आखिर सच्चाई क्या है। दरअसल प्रेस इंफॉर्मेशन ब्यूरो (पीआईबी) की तरफ से हाल ही में वीडियो शेयरिंग प्लेटफॉर्म यूट्यूब पर कुछ खास चैनलों का जिक्र किया गया है। जिसमें ईवीएम को लेकर सवाल उठाए जा रहे हैं। हालांकि, पीईबी ने स्थिति साफ कर दी है। कुछ वीडियोज में दावा किया जा रहा है, देशभर में ईवीएम होगी बंद, आंदोलन से झुका चुनाव आयोग। एक अन्य वीडियो में कहा जा रहा है, सुप्रीम कोर्ट का आ रहा फैसला, बैलेट पेपर से ही होगा 2024 का चुनाव। पीईबी ने बताया है कि ये सभी दावे फर्जी हैं। चुनाव आयोग की तरफ से ईवीएम को बैन करने का फैसला नहीं लिया गया है। सुप्रीम कोर्ट और बैलेट पेपर से जुड़ी खबर को भी फर्जी बताया गया है। पीईबी का कहना है कि एक फर्जी वीडियो चलाया जा रहा है, जिसमें दावा किया गया है कि सुप्रीम कोर्ट ने बैलेट पेपर से चुनाव कराने के निर्देश जारी किए हैं।

## अंकित सक्सेना हत्याकांड : तीनों दोषियों को उम्रकैद की सजा

नई दिल्ली। दिल्ली में वर्ष 2018 में हुए अंकित सक्सेना हत्याकांड मामले में तीस हजारी कोर्ट ने बड़ा फैसला दिया है। कोर्ट ने तीनों दोषियों को उम्रकैद की सजा सुनाई है। कोर्ट ने मामले में आरोपी मोहम्मद सलीम, अकबर अली और उसकी पत्नी शहनाज बेगम को आजीवन कैद की सजा सुनाई है। साथ ही तीनों दोषियों पर 50-50 हजार का जुर्माना लगाया है। कोर्ट ने कहा कि दोषियों की उम्र, आपराधिक रिकॉर्ड को देखकर मौत की सजा नहीं दी जा रही है। कोर्ट ने तीनों दोषियों पर जुर्माना भी लगाया है और जुर्माने की रकम अंकित के परिवार को दी जाएगी। अंकित दो आरोपियों अकबर अली और शहनाज बेगम की बेटी के साथ रिश्ते में था, जो कथित तौर पर इस रिश्ते के विरोधी थे, क्योंकि दोनों अलग-अलग धर्मों से थे। तीसरा आरोपी महिला का चाचा था। दरअसल 1 फरवरी 2018 को 23 वर्षीय फोटोग्राफर अंकित को उसकी 20 वर्षीय प्रेमिका के परिवार ने रघुबीर नगर में खुलेआम मार डाला था। पुलिस ने कहा था कि अंकित को अली, बेगम, उनके नाबालिग बेटे और उनके रिश्तेदार मोहम्मद सलीम ने 10-15 मिनट तक पीटा था। पुलिस ने कहा कि जब आरोपी अंकित के साथ बहस कर रहे थे, अंकित के माता-पिता और दोस्त उसके बचाव में आए, पर आरोपियों ने उसकी मां के साथ मारपीट की। पुलिस ने उन माता-पिता के बयानों पर संज्ञान लिया जिन्होंने आरोप लगाया था कि उनके बेटे को उनके सामने मार दिया गया था। उन्होंने उसे ई-रिक्शा में लेकर अस्पताल पहुंचे लेकि?न अंकित को मृत घोषित कर दिया गया। हत्या के तुरंत बाद महिला को नारी निकेतन भेजा गया क्योंकि महिला ने दावा किया था कि उसके परिवार वाले उसे भी मारने की कोशिश कर सकते हैं। इसके बाद में लड़की को उसकी मौसी के घर भेज दिया गया। उसके चाचा, माता-पिता और भाई को कुछ ही दिनों में पकड़ लिया गया था। पोस्टमार्टम करने वाले डॉक्टर की गवाही पर भरोसा करते हुए, अदालत ने कहा कि अभियोजन पक्ष यह साबित करने में सक्षम था कि मौत 'तेज धार' वाले हथियार से हुई थी।

## आप नेता का आरोप, बांसुरी स्वराज ने ललित मोदी को भागने में मदद की

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी (आप) उम्मीदवार सोमनाथ भारती ने नई दिल्ली संसदीय सीट पर अपनी प्रतिद्वंद्वी और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की उम्मीद्वार बांसुरी स्वराज पर निशाना साधकर आरोप लगाया कि उन्होंने अदालतों में पूर्व इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) प्रमुख ललित मोदी का प्रतिनिधित्व कर उन्हें देश से भागने में मदद की। दिल्ली भाजपा के प्रवक्ता प्रवीण शंकर कपूर ने आप नेता भारती पर पलटवार कर कहा कि वे हताश और हतोत्साहित उम्मीदवार हैं, जो सिर्फ चुनावी मुकाबले में दिखने की कोशिश कर रहे हैं। भारती ने दावा किया कि बांसुरी ललित मोदी की वकील थीं। ललित मोदी पर भारत में वित्तीय अनियमितताओं के आरोपी हैं। बांसुरी स्वराज की उम्मीदवारी पर सवाल उठाते हुए आप नेता ने कहा कि यह बहुत चिंता की बात है कि भाजपा ने उस व्यक्ति को मैदान में उतारा है, जिसने भगौड़े आरोपी ललित मोदी की मदद की थी। उन्होंने भाजपा उम्मीदवार से पांच सवाल पूछे कि क्या वह (बांसुरी स्वराज) ललित मोदी को एक ईमानदार व्यक्ति मानती हैं, क्या भाजपा ने उनसे उनकी मदद करने के लिए कहा था, क्या वह अभी भी उन्हें कानून के चंगुल से बाहर रहने में मदद कर रही हैं, और क्या ललित मोदी का बचाव करना देशद्रोह है। वहीं दिल्ली भाजपा के प्रवक्ता कपूर ने कहा कि नई दिल्ली निर्वाचन क्षेत्र के लोगों ने बांसुरी की जीत सुनिश्चित करने का मन बना लिया है और हताश भारती निराधार आरोप लगा रहे हैं। कपूर ने कहा ''भारती एक स्त्री द्वेषी मानसिकता वाला व्यक्ति है, जिसके खिलाफ महिला उत्पीड़न के कई आरोप दर्ज हैं, अपनी पार्टी के एक पार्षद द्वारा एक नाबालिग लड़की के उत्पीड़न पर उनकी चुप्पी उनके महिला विरोधी चरित्र को दर्शाती है।

## अमृतसर में बब्बर खालसा इंटरनेशनल के दो आंतकी गिरफ्तार

अमृतसर । पंजाब पुलिस ने खुफिया अभियान के दौरान बब्बर खालसा इंटरनेशनल (बीकेआई) समर्थित आतंकी मॉड्यूल के दो सदस्यों को गिरफ्तार किया। पुलिस महानिदेशक गौरव यादव ने बताया कि मॉड्यूल का संचालन यूएसए स्थित हरप्रीत सिंह उर्फ हैप्पी पासियन द्वारा हो रहा था, जो पाकिस्तान स्थित आतंकवादी हरविंदर सिंह उर्फ रिंदा का करीबी सहयोगी था, साथ ही उसका सहयोगी शमशेर सिंह उर्फ शेरा वर्तमान में आर्मेनिया में था। पुलिस ने उनके पास से दो पिस्तौल, चार मैगजीन और 30 जिंदा कारतूस बरामद किए गए। जांच के अनुसार हैप्पी, रिंडा और शमशेर के साथ मिलकर राज्य में युवाओं को राष्ट्र विरोधी गतिविधियों को अंजाम देने के लिए प्रेरित करके कट्टरपंथी बनाने का काम कर रहा था। स्टेट स्पेशल ऑपरेशन सेल (एसएसओसी), अमृतसर में यूएपीए और आर्म्स एक्ट के तहत एफआईआर दर्ज की गई है।

## उत्तर भारत में फिर पांव पसारने लगा कोरोना, चपेट में आए राजस्थान के मुख्यमंत्री

नई दिल्ली। समूची दुनिया में कोहराम मचाने वाला कोरोना एक बार फिर सिर उठाने लगा है। दिल्ली,यूपी,बिहार और राजस्थान में इसका असर दिखाई देने लगा है। राजस्थान में खुद मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा इसकी जद में आ गए हैं। दिल्ली में बुधवार को कोरोना के 63 नए मामले सामने आए हैं। बीते साल मई के बाद ऐसा पहली बार हुआ है, जब दिल्ली में एक ही दिन में कोरोना के इतने केस मिले हैं। दिल्ली के अलावा राजस्थान, यूपी और बिहार में भी कोरोना के केसों में तेजी देखी जा रही है। इसके चलते स्वास्थ्य विभाग की चिंताएं भी बढ़ी हैं। बड़ी बात यह है कि इस बार उत्तर भारत में केसों में इजाफा हो रहा है, जबकि दक्षिण में केस कम हुए हैं। इससे पहले दक्षिण के केरल, आंध्र प्रदेश जैसे राज्यों में ही केस ज्यादा पाए जा रहे थे। इससे पहले बीते साल मई में ही ऐसा हुआ था, जब कोरोना के केसों की संख्या 50 से अधिक थी। इस साल दिसंबर और जनवरी में भी कोरोना केसों में थोड़ा इजाफा हुआ था, लेकिन पहले के मुकाबले कम ही थे। पूरे देश में 30 दिसंबर को सबसे ज्यादा 841 कोरोना केस पाए गए थे। उस दौरान ज्यादातर केस केरल समेत दक्षिण भारत के राज्यों से ही आए थे। लेकिन अब दो महीने बाद उत्तर भारत में कोरोना सिर उठाता दिख रहा है। अब यूपी की बात करें तो पिछले 15 दिनों में 164 केस मिले हैं, लेकिन उससे पहले के दो सप्ताह में तो यह आंकड़ा 36 का ही था। इसी तरह बिहार में पिछले 15 दिनों में कोरोना केसों की संख्या 103 पाई गई है। दिल्ली में पिछले 15 दिनों में कोरोना के 459 केस पाए गए हैं। उससे पहले के 15 दिनों में यह आंकड़ा 191 का ही था। यही नहीं उससे भी पहले तो महज 91 मामले ही मिले थे। इस तरह मौसम के बदलाव के बीच कोरोना केसों की संख्या भी बढ़ती जा रही है। अब राजस्थान की बात करें तो राज्य में बीते 15 दिनों में 226 मामले मिले हैं। वहीं इससे पहले 96 केस ही पाए गए थे। राज्य के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा भी कोरोना पॉजिटिव हो गए हैं। यह आंकड़ा बहुत ज्यादा नहीं है, लेकिन इस बीच टेस्टिंग भी कम ही हो रही है। ऐसे में यदि टेस्टिंग में इजाफा हुआ तो फिर संकट बड़ा हो सकता है।

# मोदी के दोस्त बने कश्मीर के नाजिम, सेल्फी शेयर की

**श्रीनगर (एजेंसी)।** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी गुरुवार को कश्मीर दौरे पर पहुंचे हैं। पीएम मोदी ने इसी दौरान सोशल मीडिया पर एक सेल्फी शेयर करते हुए लिखा दोस्त नाजिम, अब यह तस्वीर चर्चा का विषय बन गई है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोशल मीडिया प्लेट्फार्म एक्स पर गुरुवार को पुलवामा निवासी नाजिम के साथ एक सेल्फी साझा की है। इसके साथ ही पीएम मोदी ने लिखा है, कि दोस्त नाजिम के साथ मेरी एक यादगार सेल्फी। मैं उनके अच्छे कार्यों से प्रभावित हुआ। उन्होंने मुलाकात के दौरान सेल्फी का अनुरोध किया। उनसे मिलकर प्रसन्नता हुई। उनके उज्जवल भविष्य के लिए किए जा रहे प्रयासों के लिए मेरी शुभकामनाएं हैं।

यहां पीएम मोदी ने सेल्फी पोस्ट की वहां सवाल उठे कि आखिर नाजिम हैं कौन जिन्हें पीएम इतनी ज्यादा प्राथमिकता दे रहे हैं। यहां बताते चलें कि पीएम मोदी के साथ सेल्फी में दिख रहे नाजिम कोई और नहीं बल्कि विकसित भारत कार्यक्रम के एक लाभार्थी हैं और उन्होंने विकसित भारत विकसित जम्मू-कश्मीर कार्यक्रम के दौरान पीएम मोदी से वार्तालाप की है। नाजिम ने बातचीत के दौरान 2018 से शुरु की गई अपने शहद विक्रय की यात्रा का व्यौरा प्रस्तुत किया। नाजिम का कहना है कि जब वो 10वीं क्लास में पढ़ रहे थे तभी से उन्होंने मधुमक्खी पालन का कार्य शुरू किया। साल 2019 में नाजिम ने सरकार से सब्सिडी के साथ मधुमक्खियों के 25 बक्से हासिल किए थे। इसमें से नाजिम ने 75 किलो शहद निकाला और आस-पास के ग्रामीण इलाकों में उसे बेचने का काम किया। इससे उसने 60,000 हजार रुपये की कमाई की। अब नाजिम का यह कारोबार बढ़कर 25 बक्सों से 200 बक्सों तक पहुंच गया है।

पीएम मोदी के दोस्त बने नाजिम ने बताया कि प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम की मदद उन्होंने ली है। इस योजना के तहत 5 लाख रुपये मिले और फिर नाजिम ने 2020 में वेबसाइट शुरू कर शहद विक्रय का कार्य शुरु कर दिया। नाजिम के शहद को ब्रांड के तौर पर एक अलग पहचान मिली है, जिस कारण साल 2023 में पांच हजार किलो का शहद वह बेच पाया है। अब नाजिम के साथ करीब सौ लोग काम कर रहे है।

### कश्मीर की मीठी क्रांति का नेतृत्व किया

नाजिम से बातचीत के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने पूछा, कि जब छोटे थे, तब क्या बनना चाहते थे? इस पर नाजिम ने बताया कि उनके पैरेंट्स तो उन्हें डॉक्टर या इंजीनियर बनाना चाह रहे थे, लेकिन वह कुछ अलग करना चाहता था। इस पर पीएम मोदी ने कहा, कि आपके परिवार ने आपकी क्षमता को पहचाना और आप उनके अनुसार डॉक्टर बन सकते थे, लेकिन आपने उस रास्ते को नहीं चुना। आप ने ऐसा करके कश्मीर की मीठी क्रांति का नेतृत्व किया है। इसके लिए आपको बहुत-बहुत बधाई।

## मणिपुर में शांति बहाली के लिए बातचीत ही उपाय : रिजिजू

नई दिल्ली। केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू ने कहा कि मणिपुर में शांति बहाल करने के लिए बातचीत ही एकमात्र साधन है और सामान्य स्थिति में वापस लाने के लिए मोदी सरकार हर संभव प्रयास कर रही। रिजिजू ने जातीय संघर्ष के लिए मणिपुर उच्च न्यायालय के उस आदेश को जिम्मेदार ठहराया, जिसमें मैतेई लोगों को अनुसूचित जनजाति (एसटी) का दर्जा देने की सिफारिश की गई थी। हिंसा ने अशांत राज्य में कम से कम 219 लोगों की जान ले ली है। रिजिजू ने कहा कि मणिपुर में समस्या केंद्र के खिलाफ विद्रोह नहीं है, बल्कि दो प्रमुख समूहों, मैतेई और कुकी के बीच जातीय संघर्ष है। साथ ही उन्होंने कहा कि नरेंद्र मोदी सरकार का अपने तीसरे कार्यकाल में ध्यान भारत को उच्च आय श्रेणी में लाने पर होगा ताकि इस दुनिया के विकसित देशों में गिना जा सके। उन्होंने कहा कि भारत को दुनिया के विकसित देशों में शुमार करने के लिए प्रति व्यक्ति आय 18,000 अमेरिकी डॉलर की आवश्यकता होगी और मोदी सरकार अपने तीसरे कार्यकाल में देश को उच्च आय श्रेणी में लाने का प्रयास करेगी। रिजिजू ने पिछली कांग्रेस सरकारों पर शौचालय, लोगों के लिए बैंक खाते, खाद्य सुरक्षा जैसी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा नहीं करने के लिए आलोचना की, जो अब मोदी सरकार द्वारा प्रदान की गई हैं। उन्होंने कहा कि अगर कोई मणिपुर में शांति बहाल करने में मदद करना चाहता है, तब पहले जाकर मेइतियों और कुकियों दोनों से अपील करें कि वे हथियार न उठाएं। सशस्त्र संघर्ष से कोई समाधान नहीं निकलेगा। केंद्रीय मंत्री रिजिजू ने कांग्रेस पार्टी के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी को सलाह दी कि वे इसतरह के प्रयास करना बंद कर दें जो उनकी क्षमताओं से परे हैं, क्योंकि उन्होंने दावा किया कि कांग्रेस उनकी राजनीतिक पारी को फिर से शुरू करने के हर प्रयास में विफल रही है। रिजिजू ने कहा कि अगर उन्हें भी गांधी परिवार की तरह असफलताओं का सामना करना पड़ा होता, तब उन्होंने ऐसा कुछ करने की कोशिश में अपनी पार्टी और सहयोगियों का कीमती समय बर्बाद नहीं किया होता जो करने योग्य नहीं था।

# असम के सीएम सरमा और बदरुद्दीन अजमल के बीच तनातनी, एक दूसरे को दे रहे चुनौती

**गुवाहाटी (एजेंसी)।** असम के मुख्यमंत्री हेमंता विस्वा सरमा और ऑल इंडिया यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट (एआईयूडीएफ) प्रमुख और लोकसभा सांसद बदरुद्दीन अजमल के बीच तनातनी चल रही है। एक दूसरे के खिलाफबयानबाजी के साथ ही एक दूसरे को चुनौती भी दे रहे हैं। सीएम सरमा ने कहा कि राज्य में जादुई उपचार नहीं चलेगा और एआईयूडीएफ चीफ बदरुद्दीन अजमल मानने को तैयार नहीं हैं वे लगातार नियमों को उल्लंघन कर रहे हैं ऐसे में उनकी गिरफ्तारी कभी भी हो सकती है।

सीएम के इस बयान पर अजमल भड़क गए उन्होंने भी कह दिया है कि रात दिन मियां मियां करना छोड़ दीजिए। जिस दिन मिया नहीं होगा उस दिन दो वक्त का खाना मिलना बंद हो जाएगा।

सांसद बदरुद्दीन अजमल ने कहा है कि 'मियां-मियां मत बोलो। मैं आपको चुनौती देता हूं, अगर मुसलमान नहीं होंगे तो आपको तीन दिन तक खाना नहीं मिलेगा, निर्माण कार्य रुक जाएंगे। आप मुसलमानों को 300 साल में भी बाहर नहीं कर पाओगे। बता दें कि इससे पहले असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने उन पर निशाना साधा था। उन्होंने बदरुद्दीन अजमल को चेतावनी दी कि वे राज्य में जादुई उपचार न करें, अन्यथा उन्हें गिरफ्तार किया जा सकता है। बुधवार (6 मार्च) को असम के लखीमपुर जिले में कई विकास परियोजनाओं का शुभारंभ करते हुए, मुख्यमंत्री ने कहा, 'बदरुद्दीन अजमल जादुई उपचार करते हैं, और उन्होंने अपनी सार्वजनिक बैठकों के दौरान भी अपनी चालें आजमाई। लेकिन असम विधानसभा ने एक विधेयक पारित किया है राज्य में जादुई उपचार पर प्रतिबंध लगाया है। जो कोई भी ऐसा करेगा उसे सलाखों के पीछे डाल दिया जाएगा।' सीएम सरमा ने यह भी कहा कि बदरुद्दीन अजमल अपनी बात का पालन नहीं कर सकते हैं, लेकिन एआईयूडीएफनेता को विधानसभा द्वारा पारित असम हीलिंग (प्रिवेंशन ऑफ इविल प्रैक्टिसेज बिल, 2024) का पालन करना चाहिए। बता दें कि असम सरकार ने हाल ही में संपन्न विधानसभा के बजट सत्र में विधेयक पारित किया जो चिकित्सा के नाम पर जादुई उपचार को गैरकानूनी घोषित करेगा और इसमें शामिल किसी भी व्यक्ति के लिए कठोर दंड का सुझाव देगा।

## मध्य प्रदेश में सभी सीटों पर चुनाव लड़ने के लिए बसपा ने ठोकी ताल, त्रिकोणिय मुकाबले की बढ़ी संभावना

**भोपाल (एजेंसी)।** मध्य प्रदेश की सभी 29 लोकसभा सीटों पर चुनाव लड़ने की तैयारी बहुजन समाज पार्टी कर रही है। इसके लिए बसपा सुप्रीमो मायावती ने उम्मीदवारों की सूची मांगी है। यदि बसपा सभी सीटों पर उम्मीदवार उतारती है तो कई सीटों पर मुकाबला त्रिकोणीय हो सकता है। इससे भाजपा और कांग्रेस के लिए एक नई चुनौती खड़ी हो सकती है।

सभी लोकसभा सीटों पर उम्मीदवार उतारने की तैयारी में पार्टी सुप्रीमो मायावती राज्य के पदाधिकारियों से चर्चा कर रही हैं। उन्होंने पदाधिकारियों से मध्य प्रदेश की सभी सीटों पर उम्मीदवारों की लिस्ट मांगी है। इन उम्मीदवारों पर विचार विमर्श करने के बाद एक सप्ताह के अंदर ही बहुजन समाज पार्टी प्रत्याशियों के नाम का ऐलान कर सकती है। मध्य प्रदेश में यूं तो लोकसभा के रण में बीजेपी और कांग्रेस के बीच ही मुख्य मुकाबला होता है, लेकिन बहुजन समाज पार्टी की एंट्री से इन दोनों ही पार्टियों के वोट में कटौती होने का खतरा बढ़ गया है। बता दें की समाजवादी पार्टी भी मध्य प्रदेश में उम्मीदवार उतारने वाली है। कांग्रेस के साथ गठबंधन के दौरान सपा ने मध्य प्रदेश की खजुराहो सीट से चुनाव लड़ने की पेशकश की थी, जिसे कांग्रेस ने मान लिया था। बहुजन समाज पार्टी ने हाल ही में आगामी लोकसभा चुनाव के लिए तेलंगाना में भी गठबंधन का ऐलान किया है। तेलंगानाम में मायावती की बीएसपी ने के चंद्रशेखर राव की भारत राष्ट्र समिति के साथ गठबंधन किया है। ये दोनों दल तेलंगाना में मिलकर उम्मीदवार उतारेंगे। वहीं उत्तर प्रदेश में भी बीएसपी सभी सीटों पर उम्मीदवार उतार सकती है।

## अब केजरीवाल के गले पड़ी एक नई मुसीबत, 16 मार्च को कोर्ट में होना पड़ेगा पेश

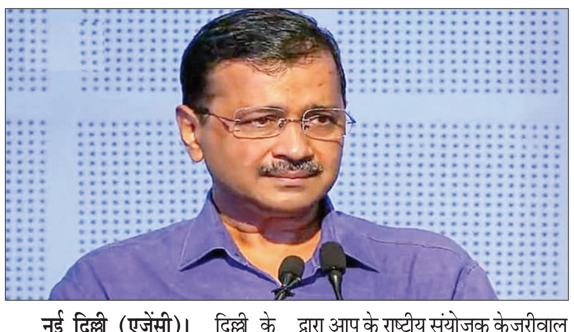

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** दिल्ली के मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल के गले एक नई मुसीबत पड़ गई है। उन्हे 16 मार्च को कोर्ट में पेश होने का आदेश दिया गया है। दिल्ली के शराब घोटाला मामले मे प्रवर्तन निदेशालय (ईडी ) द्वारा दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के खिलाफ की गई दूसरी शिकायत पर राऊज एवेन्यू कोर्ट ने केजरीवाल को पेश होने का आदेश दिया है।दरअसल ईडी ने आबकारी नीति से जुड़े कथित मनी लॉन्ड्रिंग मामले की जांच में समन का पालन नहीं करने के लिए मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के खिलाफ मुकदमा चलाने का अनुरोध करते हुए राउज एवेन्यू कोर्ट में नई शिकायत दर्ज कराई है। आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि नई शिकायत धन शोधन निवारण अधिनियम की धारा 50 के तहत संघीय जांच एजेंसी द्वारा आप के राष्ट्रीय संयोजक केजरीवाल को भेजे गए समन संख्या 4 से 8 का पालन नहीं करने से जुड़ी है। ईडी ने इससे पहले भी राउज एवेन्यू कोर्ट में याचिका दायर कर सीएम केजरीवाल को जारी किए गए पहले तीन समन पर पेश नहीं होने के लिए उनके खिलाफ मुकदमा चलाने की मांग की थी। यहां गौर करने वाली बात यह है कि ईडी की पहली शिकायत पर राउज एवेन्यू कोर्ट ने सीएम केजरीवाल को 16 मार्च को समन किया था। वहीं इस दूसरी शिकायत पर भी कोर्ट ने सीएम केजरीवाल को उसी दिन पेशी के लिए बुलाया है। उधर सीएम केजरीवाल ने ईडी के इन सभी आठ समन्स को 'अवैध' बताया था और केंद्रीय एजेंसी को सूचित किया था कि उनसे 12 मार्च के बाद वीडियो कॉन्फ्रेंस के जरिये पूछताछ की जा सकती है।

# चिराग पासवान को इंडिया अलायंस से मिला बड़ा ऑफर

**पटना (एजेंसी)।** बिहार में सीट शेयरिंग की गुत्थी अभी सुलझी नहीं है। ऐसे में लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के अध्यक्ष और जमुई से सांसद चिराग पासवान को इंडिया अलायंस की तरफ से बड़ा ऑफर मिला है। मीडिया रिपोर्ट में कहा गया है कि चिराग को बिहार में आठ और पड़ोसी राज्य उत्तर प्रदेश में दो सीट का ऑफर इंडिया गठबंधन की तरफ से दिया गया है। सूत्रों के मुताबिक चिराग पासवान को ऑफर की गई बिहार की आठ सीटों में वे सभी छह लोकसभा सीटें शामिल हैं, जिस पर 2019 के चुनावों में अविभाजित लोजपा ने जीत दर्ज की थी। इसके अलावा राज्य में दो अतिरिक्त सीट देने की भी बात कही गई है। इस तरह उन्हें कुल आठ सीटें देने का प्रस्ताव रखा गया है।

इंडिया गठबंधन की तरफ से दिया गया ऑफर चिराग पासवान के लिए बेहद लुभावना है क्योंकि भाजपा की अगुवाई वाले एनडीए में उन्हें सिर्फ वही छह सीटें दी जा रही हैं, जो 2019 में पार्टी ने जीती थी। इनमें से पांच सीटें उनके चाचा पशुपति कुमार पारस के धड़े वाली राष्ट्रीय लोक जनशक्ति पार्टी के कब्जे में है, जिनसे उनका 36 का आंकड़ा है। इस तरह एनडीए की तरफ से चिराग को सिर्फ सीटिंग जमुई सीट ही मिल रही है, जबकि वह पिता रामविलास पासवान की परंपरिक सीट हाजीपुर समेत छह सीटों पर अपना दावा ठोक रहे हैं।चिराग पासवान खुद को मोदी का हनुमान कहते रहे हैं, जबकि 2020 के विधानसभा चुनावों से ही नीतीश कुमार के घोर विरोधी रहे हैं। अब इंडिया गठबंधन से नीतीश के निकलने के बाद उनके दुश्मन को दोस्त बनने का ऑफर दिया गया है। अगर चिराग ये ऑफर मान लेते हैं तो एनडीए को करीब 5 फीसदी वोट गंवाना पड़ सकता है। राज्य में पासवानों का करीब 5.5 फीसदी वोट है, जिसे चिराग पासवान के साथ माना जाता है। पीएम मोदी की हालिया दो सभाओं में चिराग पासवान शामिल नहीं हुए थे, जिससे उनके नाराज होने की चर्चा चल रही है।बता दें कि रामविलास पासवान के निधन के बाद 2021 में पार्टी विभाजित हो गई थी। उनके चाचा पशुपति कुमार पारस ने पांच सांसदों के साथ विद्रोह करते हुए पार्टी पर कब्जा कर लिया था। इस विद्रोह के कुछ दिनों बाद ही पारस को केंद्र सरकार में मंत्री बनाए जाने पर चिराग पासवान ने बिहार के मुख्यमंत्री और जेडीयू नेता नीतीश कुमार पर हमला बोला था। हालाँकि, उन्होंने भाजपा और पीएम नरेंद्र मोदी पर निशाना साधने से परहेज किया था।

## कोई सख्त कार्रवाई नहीं, एफआईआर मामले में अधीर रंजन को कलकत्ता हाई कोर्ट से राहत

कलकत्ता । अधीर रंजन चौधरी ने हाईकोर्ट में बचाव पक्ष दाखिल किया है। कलकत्ता हाई कोर्ट ने अब अधीर के खिलाफ एफआईआर को सुरक्षा दे दी है। कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष के खिलाफ मालदाहेर हरिश्चंद्रपुर थाने में एफआईआर दर्ज की गई है। उसी के आधार पर कोर्ट आज अपना फैसला सुनाएगी। फैसले में कहा गया है कि पुलिस उसके खिलाफ कोई सख्त कार्रवाई नहीं कर सकेगी। मालदा के हरिश्चंद्रपुर थाने की एफआईआर की अंतिम रिपोर्ट पुलिस हाईकोर्ट की अनुमति के बिना नहीं दे सकती। अधीर रंजन चौधरी के खिलाफ पुलिस कोई सख्त कार्रवाई नहीं कर सकती। इसके अलावा फैसले में कहा गया कि पुलिस 48 घंटे पहले सूचित करके वरिष्ठ कांग्रेस नेताओं और सांसदों से वीडियो कॉन्फ्रेंस के जरिए बात कर सकती है। इसके अलावा जस्टिस जॉय सेनगुप्ता ने इस मामले में पहले दिए गए धारा 41-ए के नोटिस को भी निलंबित करने का आदेश दिया है। राहुल गांधी के राज्य दौरे के दौरान उनके काफिले की एक कार का शीशा टूट गया। उस दौरे पर सांसद अधीर रंजन चौधरी थे। पुलिस के मुताबिक, उन्होंने वहां भड़काऊ भाषण दिया, जिससे कांग्रेस समर्थक भड़क गए। लेकिन अधीर के वकील का दावा है कि शीशा तोड़ने की घटना इस राज्य के बाहर हुई है। लेकिन पुलिस फर्जी मुकदमा दर्ज कर वरिष्ठ नेता को परेशान करने का प्रयास कर रही है। मामले की अगली सुनवाई अप्रैल के पहले सप्ताह में होनी है।

# योगी की राडार पर 13000 मदरसे, मौलाना ने कहा, अगर टेरर फंडिंग के सबूत तब बंद करें

### –एसआईटी ने अपनी रिपोर्ट यूपी सरकार को सौंपी

**बरेली (एजेंसी)।** यूपी की योगी सरकार द्वारा राज्य में मदरसों की जांच के लिए बनी एसआईटी की टीम ने अपनी रिपोर्ट सौंप दी है, जिसमें करीब 13000 मदरसों को बंद करने की सिफारिश की गई है। वहीं एसआईटी की सिफारिश पर प्रतिक्रिया देकर आल इंडिया मुस्लिम जमात के राष्ट्रीय अध्यक्ष मौलाना मुफ्ती शहाबुद्दीन रज़वी बरेलवी ने कहा, मदरसे धार्मिक शिक्षा का केंद्र है। यह संस्थाएं संविधान में दी गई इजाजत के अनुसार चलती हैं। (506) मदरसों को छोड़कर बाकी हज़ारों मदरसे मुस्लिम कौम के आपसी चंदे से चलते हैं, इनके संचालन और पढ़ाई लिखाई में हुकुमत कुछ भी मदद नहीं करती है, इसलिए मदरसों को बंद करने का आदेश देना उचित नहीं है।

मौलाना ने कहा, नेपाल-बार्डर पर सटे हुए विभिन्न जनपदों में स्थापित मदरसे कुछ नए नहीं हैं। बल्कि तीस चालीस साल पुराने बने हुए हैं, जब यह मदरसे बन रहे थे उस वक्त हुकूमत ने रोक क्यों नहीं लगाई। मान्यता की प्रक्रिया अपनाएं जाने के वक्त संबंधित अधिकारी पेपरों को चेक करते हैं। फिर मौका मुआयना करते हैं। लंबी प्रक्रिया के बाद के बाद मानता दी जाती है, अगर सरकार की नजर में यह मदरसे गलत हैं, तब मान्यता देने वाले अधिकारी भी गलत हैं।

मौलाना ने कहा कि जहां तक टेरर फंडिंग की बात है, यह जरूर चिंताजनक है। इस विषय पर किसी से समझौता नहीं किया जा सकता। जिन मदरसों की टेरर फंडिंग में लिप्त होने की बात कही जा रही है, योगी सरकार के पास अगर ठोस सुबूत हैं, तब इसतरह के मदरसों को जरूर बंद कर दिया जाना चाहिए।

मौलाना ने मदरसों के संचालकों व प्रबंधकों को कहा कि अपने मदरसे के तमाम कागजात दुरुस्त रखें, पैसों का लेन-देन बैंक अकाउंट व चेक से करें, चंदा लेने वाली रसीदों का रजिस्टर दुरुस्त रखें, सालाना इनकम टैक्स जमा करें, सालाना आमद व खर्च का बेवरा भी छापें और साथ ही अल्पसंख्यक विभाग या बेसिक शिक्षा विभाग से संबंध रखें ताकि लोग आपत्ति ना कर सके।

स्वामी, मुद्रक व् प्रकाशक : सुरेश मौर्या द्वारा अष्ट विनायक ओफ़्सेट एफपी,149 प्लोट 26 खोडीयारनगर,सिद्धिविनायक मंदीर के पास , (भाटेना) हो.सो अंजना सुरत गुजरात से मुद्रित एवं 191 महादेव नगर उधना सुरत गुजरात से प्रकाशित संपादक :सुरेश मौया (M) 9879141480 RNI No.:GUJHIN/2018/75100 (Subject to Surat jurisdiction)

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

# तलवार और चप्पू जैसे घातक हथियारों से ४० से ज्यादा बदमाशों ने सूरत को दहलाया

## पुलिस ने घर-घर जाकर की कॉम्बिंग, पांच गिरफ्तार

क्रांति समय
www.krantisamay.com
www.guj.krantisamay.com
www.epaper.krantisamay.com
www.rti.krantisamay.com

सूरत में १५ से ज्यादा असामाजिक तत्वों ने तलवार और चप्पू जैसे हथियारों से दहशत फैला दी है. शहर की दो सोसायटी सिंगणपुर चार रास्ता के पास गोविंदनगर और चौकबाजार की बहुचरनगर सोसायटी में असामाजिक तत्वों ने तोड़फोड़ की। १५ बदमाश तलवार, चाकू और लाठियां लेकर आए और २० से ज्यादा गाड़ियों को तोड़ डाला. इससे कुछ देर के लिए अफरा-तफरी मच गयी. पूरे मामले में आज पुलिस के आला अधिकारियों द्वारा कॉम्बिग की गई. जिसमें पुलिस ने घर-घर जाकर ५ उपद्रवियों को गिरफ्तार किया है.

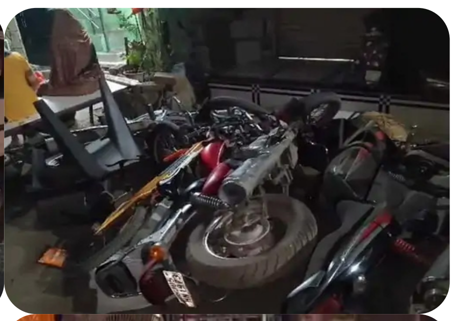

क्या था पूरा मामला पावभाजी स्ट्रीट, सिंगणपोर, दाभोली चार रास्ता, गोविंदनगर, मेहतानगर, बॉम्बे निवासी ३० वर्षीय अक्षय धीरजभाई धरैया नगर निगम के दाभोली वार्ड कार्यालय में सफाई कर्मचारी के रूप में काम करते हैं। कल रात वह अपने परिवार के साथ सिंगणपोर तारनकुंड के पास गुरूकृपा सोसायटी में ब्रिजेश परमार के गरबा समारोह में शामिल होने गए थे। उस समय अक्षय के भाई विक्की का वेडरोड हरिओम मिल के पास रहने वाले रमीलाबेन के बेटे तरूण उर्फ पेंडो, मोंटी मालियो, सागर जाडियो, हेडन, जय गवले, तोचो, तुषार, कुणाल वडला, गभरू चेतन बटको, महेंद्र दलपत गोहिल से झगड़ा हो गया था। गरबा खेलने के बारे में. तो आरोपियों ने विक्की की पिटाई कर दी।

रात में सोसायटी में गाड़ियों में तोड़फोड़ के बाद कार्यक्रम में मौजूद लोग १५ लोगों की भीड़ को मामला समझाने पहुंचे, लेकिन उत्तेजित भीड़ ने विक्की को जान से मारने की धमकी दी। इसी बीच बीती रात साढ़े आठ बजे आरोपी १५ अन्य लोगों के साथ तलवार, चाकू, चापड़, कुल्हाड़ी और लकड़ी

**सूरत में १५ टपोरियों ने दो सोसायटी में तलवारों से आतंक मचाया**

लेकर सोसायटी में आ धमका। आरोपियों की टोली अक्षय के घर के नीचे खड़ी रही और विक्की को नीचे बुलाती रही, लेकिन विक्की घर पर नहीं था। तो आरोपी गैंग ने सोसायटी में खड़ी १९ गाड़ियों और दो दुकानों में तोड़फोड़ की. इसी बीच सोसायटी के लोग घर के बाहर जमा हो गए और आरोपी बाइक पर सवार होकर भाग गए। इसलिए अक्षय घरैया ने पूरी घटना को लेकर भीड़ के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई.

दंगाइयों ने २० से ज्यादा गाड़ियों में की तोड़फोड़ देर रात इन उपद्रवियों ने दो सोसायटियों में आतंक मचाया, घरों के बाहर खड़ी चार पहिया गाड़ियों और बाइकों में तोड़फोड़ की और भारी नुकसान पहुंचाया. इस घटना के बाद निवासियों ने १०० नंबर पर पुलिस कंट्रोल रूम को सूचना दी और सिगंपोर पुलिस सहित उच्च पुलिस अधिकारी और आसपास के इलाकों की पुलिस वहां पहुंची. उपद्रवियों ने २० से ज्यादा गाड़ियों को तोड़ दिया.

गोविंदनगर में कारों में तोड़फोड़ की गई, वहीं दूसरी ओर असामाजिक तत्व तलवार, चप्पू, हॉकी स्टिक जैसे हथियारों के साथ सोसायटी में घुस आए और लोगों में डर का माहौल फैल गया. इन दोनों घटनाओं में ३ चारपहिया वाहन व बाइक क्षतिग्रस्त हो गये. गोविंदनगर में गाड़ियों में तोड़फोड़ के बाद बदमाशों ने रास्ते में बहुचरनगर में भी गाड़ियों में तोड़फोड़ की और एक युवक पर हमला कर दिया, जिसके बाद पुलिस ने दोनों सोसायटी में सुरक्षा व्यवस्था तैनात कर दी. वहीं, शिकायत मिलने के बाद सिगनपोर और चौकबाजार पुलिस ने दंगाइयों के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है.

५ लोग गिरफ्तार डीसीपी पिनाकिन परमार ने बताया कि दो अलग-अलग अपराध दर्ज किए गए हैं और कानूनी कार्रवाई शुरू कर दी गई है. फिलहाल ५ लोगों को गिरफ्तार किया गया है. जबकि सीसीटीवी समेत अन्य संसाधनों के आधार पर अन्य को पकड़ने का प्रयास किया जा रहा है। चूंकि आरोपी इसी इलाके के हैं, इसलिए जोन स्तर पर कॉम्बिग की योजना बनाई गई है। इसके साथ ही अपराध में शामिल लोगों की विशेष जांच की जा रही है.

# अमरोली-कोसाड निवास में युवक से छेड़छाड़ के आरोप में पारिवारिक चाचा गिरफ्तार

क्रांति समय
www.krantisamay.com
www.guj.krantisamay.com
www.epaper.krantisamay.com
www.rti.krantisamay.com

सूरत अमरोली इलाके में रहने वाले एक ज्वैलर की १३ वर्षीय बेटी को जबरन अपने कमरे में ले जाने वाले मामा के साले यानि मामा को अमरोली पुलिस ने गिरफ्तार कर कानूनी कार्रवाई की है।

१३ वर्षीय निकिता (बदला हुआ नाम), सुरेंद्रनगर के चुडा तालुक के एक जौहरी की चार बेटियों और एक बेटे में से दूसरी, मूल रूप से अमरोली इलाके की रहने वाली, एक सप्ताह पहले सुबह अपने एक

**रिश्तेदार से वहां जाने को कहने गई युवती को वहशी चाचा पकड़कर ले गया घर:वारदात को अंजाम देने के बाद चाची का भाई भाग गया था।**

रिश्तेदार से काम के लिए वहां जाने के लिए कहकर घर से निकली थी।. हालांकि रिश्तेदार का घर पास में ही था, लेकिन पंद्रह-बीस मिनट में नहीं लौटे तो माता-पिता ने तलाश की। जिसके तहत निकिता घर आई और उसने रोते हुए कहा कि कोसाड हाउसिंग बिल्डिंग नं. ३०८/ए/३ में रहने वाले हमारे रिश्तेदार रोहित उर्फ कानो लक्ष्मण साथलिया (बी.ओ. १९ मूल निवास समधियाला, -२, डी.ओ. उमराला, भावनगर) मुझसे सड़क पर मिले और मेरा हाथ पकड़कर अपने घर ले गए क्योंकि मेरी आपस में अच्छी बनती थी। उसके साथ. था इस बात का फायदा उठाते हुए कि उसके घर में कोई नहीं था, उसने दरवाज़ा अंदर से बंद कर लिया और मेरे गालों और होंठों पर चूमने के बाद मुझे नहाने के लिए ले गया और मेरे साथ बलात्कार किया। इस मामले में पुलिस ने ज्वेलर रोहित को गिरफ्तार कर लिया है. गौरतलब है कि रोहित निकिता की मौसी का भाई यानी पारिवारिक मामा है।

# पहली बार ट्रैक मशीन महिलाएं चलाएंगी

क्रांति समय
www.krantisamay.com
www.guj.krantisamay.com
www.epaper.krantisamay.com
www.rti.krantisamay.com

कल महिला दिवस के मौके पर रेलवे ने महिलाओं द्वारा संचालित ट्रैक मशीन को देश सेवा में समर्पित किया है. भारतीय रेलवे में पहली महिला-केवल ट्रैक मशीन आज लॉन्च की गई है। पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक अशोक कुमार मिश्रा ने मुंबई से वीडियो कॉन्फ्रेंस के जरिए हरी झंडी दी. महिलाओं द्वारा संचालित इस ट्रैक मशीन से अब रेलवे के तकनीकी क्षेत्र में महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ रहा है। पुरूष प्रधान क्षेत्र में अब महिलाएं भी पदार्पण कर रही हैं। इन ट्रैक मशीनों का उपयोग नए ट्रैक तैयार करने या पुराने ट्रैक की मरम्मत के लिए किया जाता है। इसका संचालन ७ महिला सदस्यों द्वारा किया जाएगा। यह भारतीय रेलवे विभाग के लिए पहला उपहार है, जो बड़ी प्रगति करेगा। वडोदरा डिवीजन के मशीन सहायक पूनंबन ठाकरे ने कहा कि यह एक ऐसी मशीन है जिसका पूरा संचालन महिलाओं द्वारा किया जा रहा है। इसे कठिन तो नहीं कहा जा सकता, लेकिन कभी-कभी दिक्कतें आती हैं। यह बहुत अच्छा काम है। हम अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभाएंगे और अच्छा प्रदर्शन करेंगे.'

# एक फ्लैट की पार्किंग में आग लगने से एक लड़की की मौत हो गई

क्रांति समय
www.krantisamay.com
www.guj.krantisamay.com
www.epaper.krantisamay.com
www.rti.krantisamay.com

अहमदाबाद के दानिलिम्दा गांव के पटेल वास में ख्वाजा के फ्लैट में सुबह-सुबह आग लग गई. आग पार्किंग स्थल से दूसरी मंजिल तक फैल गई। इससे फ्लैट में रहने वालों में भगदड़ मच गई। आग सीढ़ियों से आगे बढ़ती देख लोग बाहर निकल गए। जिसमें १५ दिन के बच्चे समेत ९ लोग झुलस गए। जिसे इलाज के लिए एलजी हॉस्पिटल में शिफ्ट किया गया। हालांकि, १५ दिन की बच्ची की मौत हो गई है. जबकि अन्य ८ लोगों का इलाज चल रहा है. फायर ब्रिगेड की टीम तुरंत मौके पर पहुंची और आग बुझाई। फ्लैट में रहने वाले २७ से ज्यादा लोगों को बचाकर नीचे लाया गया. आग में एक ही परिवार के चार सदस्य झुलस गए। जिसमें एक १५ दिन की बच्ची की मौत हो गई है. जबकि छह साल की बच्ची और उसकी मां का फिलहाल गंभीर हालत में एलजी अस्पताल में इलाज चल रहा है। लड़की की मां भी मोहसिनभाई कुरैशी कुछ दिन पहले अपनी ६ साल की बेटी आयत को जन्म देने के लिए दानिलिम्दा में अपने भाई के घर रहने आई थीं। १५ दिन

मामूली रूप से झुलस गईं। बेहद संकरी जगह में बने फ्लैट में आग पार्किंग स्थल से चौथी मंजिल तक फैल गई और आग की घटना में परिवार घायल हो गया। इमरानभाई कुरेशी अपने परिवार के साथ पटेलवास के पास ख्वाजा फ्लैट में रहते हैं। उनकी बहन ज़ेबुनिसा पहले जेबुनिसा ने बेटी को जन्म दिया. बुधवार की देर रात ज़ेबुनिसा, उनकी दोनों बेटियां, इमरानभाई और अन्य सदस्य सोने चले गए। गुरूवार की अहले सुबह करीब ५:३० बजे घर में परिवार के सदस्यों की नींद चिल्लाने से जगी.

# एक अधेड़ उम्र का आदमी पुलिस की प्रताड़ना के कारण फंस गया था

क्रांति समय
www.krantisamay.com
www.guj.krantisamay.com
www.epaper.krantisamay.com
www.rti.krantisamay.com

सूरत में पाल रोड पर रहने वाले एक कारपेंटर ने पुलिस द्वारा ५० हजार रूपए की उगाही के लिए प्रताड़ित किए जाने से तनाव में आकर फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। सुठारी ने सुसाइड नोट में बताया कि उसे तीन दिन से प्रताड़ित किया जा रहा था। इसके साथ ही परिवार ने न्याय की भी मांग की है. पाल रोड सुमन छाया में रहने वाले ५१ वर्षीय किशोरभाई मनसुखभाई गोहिल बढ़ई का काम करके अपनी आजीविका कमाते थे. बुधवार रात उन्होंने अपने घर में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। उनका बेटा और बेटी काम पर चले गए और उन्होंने अपनी पत्नी को पियरे में छोड़ दिया। इसके बाद उन्होंने अपने घर में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली.किशोरभाई का बेटा घर आया और उसने अपने पिता को रसोई में लटका हुआ पाया. इसके बाद पुलिस को सूचना दी गयी. घटना की सूचना मिलने पर अडाजण पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू की। किशोरी ने आत्महत्या से पहले एक सुसाइड नोट लिखा। जिसमें उन्होंने पुलिस सब इंस्पेक्टर ए.ए. अहीर ने बताया कि ५० हजार की उगाही के लिए उसे प्रताड़ित किया जा रहा था। विनयभाई नाम के एक परिचित व्यक्ति से ५० हजार रूपये उधार लिए। परिवार के सदस्यों ने कहा कि किशोरभाई गोहिल ने पैसे वापस पाने के लिए विनय नामक व्यक्तिद्वारा पुलिस की मदद से प्रताड़ित करने के बाद आत्महत्या कर ली। बेटे मयूर ने कहा, हमने सुसाइड नोट समेत सारे सबूत पुलिस को दे दिए हैं। उम्मीद है पुलिस न्याय करेगी.

# ९ मार्च को शिक्षक गांधीनगर में महापंचायत करेंगे

क्रांति समय
www.krantisamay.com
www.guj.krantisamay.com
www.epaper.krantisamay.com
www.rti.krantisamay.com

राज्य भर के अनुदान प्राप्त और सरकारी स्कूलों में शिक्षक और कर्मचारी पुरानी पेंशन योजना को लेकर आंदोलन पर हैं। यह आंदोलन आरएसएस से जुड़े शैक्षिक संघ के राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा द्वारा किया जा रहा है। जिसमें पूरे प्रदेश के शिक्षकों और कर्मचारियों ने चॉक डाउन और पैन डाउन कर विरोध प्रदर्शन किया. इससे पहले सरकार ने पुरानी पेंशन योजना समेत बकाया मुद्दों को लेकर गारंटी दी थी. गारंटी पूरी नहीं होने पर प्रदेशभर के कर्मचारी आंदोलन कर रहे हैं। गौरतलब है कि मांग पूरी नहीं होने पर ९ मार्च को गांधीनगर के सत्याग्रह शिविर में १ लाख शिक्षक और कर्मचारी जुटेंगे और महापंचायत करेंगे. लंबित मुद्दों को लेकर शिक्षकों और कर्मचारियों ने कल वोट भी किया था.

जिसमें विभिन्न प्रश्नों पर टिक किया गया था। शिक्षकों ने बिना चौका लगाए कहानी और गीत के माध्यम से बच्चों को पढ़ाकर विरोध जताया। शिक्षकों ने चॉक और कलम के प्रयोग से परहेज किया। इसके अलावा छात्रों की उपस्थिति भेजने और गैर शैक्षणिक गतिविधियों का बहिष्कार किया. लंबित समस्याओं का समाधान न होने पर नौ मार्च को महापंचायत होगी। जिसमें पूरे गुजरात से विभिन्न संगठनों से जुड़े १ लाख से अधिक शिक्षक, कर्मचारी भगवा ध्वज के साथ भगवा वस्त्र, पटका, जय श्री राम नाम का झंडा और साफा पहनकर गांधीनगर पहुंचेंगे।